प्रसाद सुमन : १

महामानव और मङ्गल यात्रा

[हिन्दी का प्रथम वैज्ञानिक उपन्यास]

लेखक

ओमप्रकाश

भूमिका लेखक

रामधारीसिंह 'दिनकर'

प्रसाद बुक ट्रस्ट, आगरा

इस उपन्यास का प्रेरणा स्रोत
स्व० श्री एल्डस हक्सले की पुस्तक
'The Brave New World' है।

लेखक : ओमप्रकाश

प्रकाशक : प्रसाद बुक ट्रस्ट
पैंठी वाला पोखरा
पटिया आजम खाँ, आगरा

मुद्रक : एजुकेशनल प्रेस, आगरा
[फोन : ७३७५]

मूल्य : ३ रुपया

आवरण : रिफारमा स्टूडियो, दिल्ली

प्रकाशन : १९६८

प्रमुख वितरक : गयाप्रसाद एण्ड संस,
सिटी स्टेशन रोड, आगरा

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी का आशीर्वाद

मानस मुद्रण
१६४ सिविल लाइन्स झाँसी

प्रिय ओमप्रकाश जी

मगध यात्रा पर मैं हृदय से आपको बधाई देता हूँ। यह मनुष्य का वहाँ तक अमानुषिक बनाने जा रहा है इसका एक काल्पनिक चित्र जो आपने अङ्कित किया है वस्तुतः रोमांचकारी है। ऐसी कल्पना भी कितने जन कर सकते हैं। आप जिस मार्ग पर अग्रसर हुए हैं उसके निर्माण का श्रेय भी आपको प्राप्त है। माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी का आह्वान व्यर्थ नहीं गया। आपने उसे मुखर सार्थकता दी है। अन्तिम अध्याय में आप केवल वैज्ञानिक ही नहीं दार्शनिक और कवि रूप में भी दृष्टिगोचर होते हैं। मैं उस रूप को नमस्कार करता हूँ।

आपका पथ प्रशस्त होता रहे यही मेरी कामना है। आप प्रसन्न होंगे।

भवदीय
मैथिलीशरण गुप्त

स्व० महापण्डित राहुल साकृत्यायन की मंगल कामना

प्रिय ओमप्रकाश जी,

'मंगलयात्रा' मिली। बड़ी ही रोचक और ज्ञानवर्धक है। वैज्ञानिक विषय को लेकर इतनी सरल और सुन्दर भाषा में लिखना आसान नहीं है। सफलता के लिए बधाई।

मुझे आशा है इस दिशा में आपकी यह पुस्तक आरम्भ मात्र है। आपकी लेखनी से विज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले और भी रोचक उपन्यासों के लिखे जाने की आशा की जायगी।

चन्द्रलोक की यात्रा का बहुत पहले किसी ने लिखा था। वह हिन्दी के आदि काल की रचना थी। अब आपने परमाणु-युग में अपनी लेखनी उठाई है, इसलिए इसका उसमें कोई मुकाबला नहीं हो सकता। इस विषय पर इतनी अच्छी पुस्तक का लिखा जाना बतलाता है कि हिन्दी साहित्य आगे बढ़ रहा है। मुझे आशा है कि हिन्दी पाठक इसका अच्छा स्वागत करेंगे।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

भूमिका

मनुष्य के मन पर आज जो औद्योगिक और वैज्ञानिक प्रभाव पड़ रहे हैं उन्हें व्यक्त करने का एक माध्यम वैज्ञानिक कथा साहित्य भी है। अंग्रेजी और दूसरी भाषाओं में इस प्रकार का साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया है और आज भी लिखा जा रहा है। हिन्दी में विज्ञान को माध्यम बना कर लिखे गये कथा साहित्य का लगभग अभाव-सा ही है। प्रसन्नता की बात है कि वर्तमान पुस्तक में लेखक ने हिन्दी में इस सरणी का सफलतापूर्वक आरम्भ किया है।

इसमें कुछ वैज्ञानिक तथ्यों और विज्ञान संगत कल्पनाओं को आधार बना कर आज से कुछ वर्ष बाद के जीवन की कल्पना की गयी है। इस कथा का मुख्य घटना-स्थल मंगल लोक है। आज के वैज्ञानिकों का विश्वास है कि यदि सौरमण्डल में कहीं पर भी जीवन की कुछ सम्भावना हो सकती है तो वह मंगल ग्रह ही है। इस उपन्यास में इसी सम्भावना पर आधारित मंगल ग्रह (लोक) में एक मानव समाज की कल्पना की गई है। वहाँ के लोग अपने को महा-मानव कहते हैं। जिस समय की यह कथा है उस समय पृथ्वी पर विश्व सरकार कायम हो गई है। चन्द्रमा को पृथ्वी निवासियों ने अपना उपनिवेश बना लिया है और वहाँ पर आना जाना भी काफी आसान हो गया है।

उपन्यास की कथा यहाँ से आरम्भ होती है। कुछ यात्री एक राकेट स्टेशन से राकेट यान द्वारा आकाश स्टेशन पर पहुँचते

है । आकाश स्टेशन आकाश में पृथ्वी से एक हजार मील की ऊँचाई पर मनुष्य द्वारा निर्मित उपग्रह है जो दो घण्टे में पृथ्वी का एक चक्कर लगा लेता है । इन यात्रियों में कुछ 'मित्र समाज' के सदस्य भी हैं । 'मित्र समाज' पृथ्वी की ऐसी संस्था है जो पूर्व के दर्शन और पश्चिम के विज्ञान में समन्वय स्थापित करने में लगी हुई है । ये यात्री जब आकाशपोत द्वारा चन्द्रलोक की ओर उड़ते हैं, तब मार्ग में आकाश पोत दुर्घटना का शिकार हो जाता है । शेष यात्री तो बचा लिये जाते हैं पर 'मित्र समाज' के तीन सदस्य अशोक, अनीता और मदालसा भटक कर मंगल लोक की ओर गिरने लगते हैं । मंगल लोक के तीन महामानवों को, जो आकाश की सैर करने के लिए निकले हैं, इनका पता चल जाता है और वे तीनों को बचा कर मंगल लोक के वनस्पति प्रदेश में ले जाते हैं । वनस्पति प्रदेश के प्रशासक प्रादेशिक-महामानव-निर्माता इनको अपने अतिथि के रूप में स्वीकार कर लेते हैं । अशोक, अनीता और मदालसा मंगल-लोक की वैज्ञानिक प्रगति को देख कर चकित रह जाते हैं । वहाँ के अद्भुत वस्त्र, वहाँ के अभिनव भवन, वहाँ का प्लास्टिक का बना हुआ कृत्रिम आकाश, महामानव निर्मित चन्द्रमा, वहाँ की स्वतः चालित अद्भुत गगन गाड़ियाँ और वहाँ के टेलीविजन सम्प्राहक पट, सभी उनको आश्चर्य से भर देते हैं । शिशु उत्पादन मिल, जहाँ पर बच्चे नर नारी के मिलन से नहीं, वरन् बोतलों में पैदा किये जाते हैं, उनको बड़ा विचित्र लगता है । यहाँ पर बच्चों को बोतलों में उत्पन्न करने के पूर्व ही, मंगल लोक की आवश्यकतानुसार, उनका भाग्य रचा जाता है । इसके अनुसार ही उनके शरीर की भूमावश्या

म तथा जन्म लेने के पश्चात्, उनके मन और मस्तिष्क का मानू-मन्दिर म, उनकी भावी स्थिति और पद के अनुरूप ढाला जाता है। उनका मगल लोक का मृत्यु-गृह भी अद्भुत दीखता है जहाँ पर महामानवों को अन्तिम अवस्था म मरने के लिए भेज दिया जाता है। मृत्यु-गृह म इस प्रकार का वातावरण है कि मरने वाला व्यक्ति शान्ति से मर सके।

इस लोक म सर्वत्र यन्त्र की पूजा होती है। उत्पादन यन्त्र करते हैं भोजन यन्त्र बनाते हैं और वहीं खाने का काम भी यन्त्र ही करते हैं। इनकी सहायता से जनसंख्या सतुलित कर ली गई है, सन्तति प्रजनन पर नियन्त्रण हो गया है और रासायनिक आहार आदि की सहायता से भूख और बुढ़ापा केवल गुजरे दिनों की याद रह गये है।

यदि यन्त्र कौशल और प्रौद्योगिक विकास चरम सीमा तक पहुँच जाय तो उनका मानव समाज और संस्कृति पर क्या प्रभाव पडेगा, इसकी एक झाँकी हम इस उपन्यास म मिलती है। लेखक वैज्ञानिक कल्पना के तर्कों के सहारे उस समय की सामाजिक प्रथाओं का वर्णन करता है और सास्कृतिक रचना में इसके फलस्वरूप क्या-क्या परिवर्तन हो सकते हैं इसका अनुमान लगाता है। उसके अनुसार महामानव समाज म परिवार पर आधारित और परम्परागत सम्बन्धों का प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिए वहाँ पर 'सब-सबके लिए', 'नहीं कोई एक के लिए' नियम का पालन किया जाता है। काम विषयक उच्छृंखलता वहाँ जीवन की प्रकृति समझी जाती है, जिसके

है। आकाश स्टेशन आकाश में पृथ्वी से एक हज़ार मील की ऊँचाई पर मनुष्य द्वारा निर्मित उपग्रह है जो दो घण्टे में पृथ्वी का एक चक्कर लगा लेता है। इन यात्रियों में कुछ 'मित्र समाज' के सदस्य भी हैं। 'मित्र समाज' पृथ्वी की ऐसी संस्था है जो पूर्व के दर्शन और पश्चिम के विज्ञान में समन्वय स्थापित करने में लगी हुई है। ये यात्री जब आकाशपोत द्वारा चन्द्रलोक की ओर उड़ते हैं, तब मार्ग में आकाश पोत दुर्घटना का शिकार हो जाता है। शेष यात्री तो बचा लिये जाते हैं पर 'मित्र समाज' के तीन सदस्य अशोक, अनीता और मदालसा भटक कर मंगल लोक की ओर गिरने लगते हैं। मंगल लोक के तीन महामानवों को, जो आकाश की सैर करने के लिए निकले हैं, इनका पता चल जाता है और वे तीनों को बचा कर मंगल लोक के वनस्पति प्रदेश में ले जाते हैं। वनस्पति प्रदेश के प्रशासक प्रादेशिक-महामानव-निर्माता इनको अपने अतिथि के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। अशोक, अनीता और मदालसा मंगल-लोक की वैज्ञानिक प्रगति को देख कर चकित रह जाते हैं। वहाँ के अद्भुत वस्त्र, वहाँ के अभिनव भवन, वहाँ का प्लास्टिक का बना हुआ कृत्रिम आकाश, महामानव निर्मित चन्द्रमा, वहाँ की स्वतः चालित अद्भुत गगन गाड़ियाँ और वहाँ के टेलीवीजन संग्राहक पट, सभी उनको आश्चर्य से भर देते हैं। शिशु उत्पादन मिल, जहाँ पर बच्चे नर नारी के मिलन से नहीं, वरन् कोषाणुओं से पैदा किये जाते हैं, उनको बड़ा विचित्र लगता है। वहाँ पर बच्चों को कोषाणुओं से उत्पन्न करने के पूर्व ही, मंगल लोक की आवश्यकतानुसार, उनका भाग्य रचा जाता है। इसके अनुसार ही उनके शरीर की मूलावस्था

में तथा जन्म लेने के पश्चात्, उनके मन और मस्तिष्क को मातृ-मन्दिर में, उनकी भावी स्थिति और पेशों के अनुरूप ढाला जाता है। उनका मरण लोक या मृत्यु-गृह भी अद्भुत दीखता है जहाँ पर महामानवों को अन्तिम अवस्था में मरने के लिए भेज दिया जाता है। मृत्यु-गृह में इस प्रकार का वातावरण है कि मरने वाला व्यक्ति शान्ति से मर सके।

इस लोक में सर्वत्र यन्त्र की पूजा होती है। उत्पादन यन्त्र करते हैं, भोजन यन्त्र बनाते हैं और वहीं खाने का काम भी यन्त्र ही करते हैं। इनकी सहायता से जनसंख्या मनुतित कर ली गई है, सन्तति प्रजनन पर नियन्त्रण हो गया है और रासायनिक आहार आदि की सहायता से भूख और बुढ़ापा केवल गुजरे दिनों की याद रह गए हैं।

यदि यन्त्र कौशल और प्रौद्योगिक विकास चरम सीमा तक पहुँच जाय तो उनका मानव समाज और संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इसकी एक झाँकी हमें इस उपन्यास में मिलती है। लेखक वैज्ञानिक कल्पना के तर्कों के सहारे उस समय की सामाजिक प्रथाओं का वर्णन करता है और सांस्कृतिक रचना में इसके फलस्वरूप क्या-क्या परिवर्तन हो सकते हैं इसका अनुमान लगाता है। उसके अनुसार महामानव समाज में परिवार पर आधारित और परम्परागत सम्बन्धों का प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिए वहीं पर 'सब-सबके लिए', 'नहीं कोई एक के लिए' नियम का पालन किया जाता है। काम विषयक उच्छृंखलता वहाँ जीवन की प्रकृति समझी जाती है, जिसके

लिए शासन की ओर से स्थान-स्थान पर आमोद-गृह बने हुए हैं। इसी प्रकार बंध्या होना सुसभ्यता का चिह्न माना जाता है।

घोर रूप से वैज्ञानिक युग के मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्ध क्या होंगे, लेखक ने इसकी भी कल्पना की है। महामानव समाज के कर्णधारों का विश्वास है कि—'व्यक्ति बोला, समाज डोला'। व्यक्ति द्वारा समाज के कार्यों की आलोचना करने से समाज की स्थिरता संकट में पड़ेगी, इसीलिए वहाँ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पूर्ण रूप से दबा दी गई है। जो व्यक्ति समाज से विद्रोह करता है, उसको नष्ट कर देना ही श्रेष्ठ है, ऐसी वहाँ की मान्यता है। इसलिए वहाँ पर 'सुधारने से नष्ट करना श्रेष्ठ है' नामक नियम चालू है।

लेखक का अनुमान है कि समाज स्थिर और अचल भी बना रहे तथा उसमें कला, सत्य और कल्याणकारी सुन्दरता भी विकसित हो, ये दोनों बातें साथ-साथ नहीं चल सकतीं। वैज्ञानिक समाज में इन दोनों विकल्पों में से केवल एक को चुनना ही संभव है और मंगलग्रह का महामानव समाज सत्य और सुन्दरता की बलि देकर समाज को स्थिर बनाने का मार्ग पसन्द करता है।

मंगल लोक में समाज को स्थिर बनाने की धुन में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं चित्त-स्वातन्त्र्य नष्ट कर दिए गये हैं। बुद्धि की उन्मुक्त स्वाधीनता के अभाव का सम्पूर्ण मानव समाज में भारी पतन का आभास दिखाई पड़ता है। उसकी दलील है कि सुरक्षा और सुस्थिरता केवल व्यक्ति स्वातंत्र्य के विनाश से ही सम्भव है। सामाजिक और राजनैतिक संगठनों को यह मानसिक व्यक्तिगत

के विनाश का सहायक मानता है और वह ऐसे सभी संगठनों के विरुद्ध है जिनसे समाज से अलग व्यक्ति को प्रधानता मिलती हो।

मंगल लोक में विज्ञान की अत्यधिक प्रगति से समाज का जो रूप दिखाई देता है, वह भयावह है। पर हम लेखक पर यह इल्जाम भी नहीं लगा सकते कि उसने जानबूझ कर विज्ञान का कुत्सित चित्रण किया है। क्योंकि अलेक्सिस केरल, बरट्रेन्ड रसल आदि महाचिन्तकों ने बराबर यह चेतावनी दी है कि मनुष्य के आशय यदि शुद्ध नहीं हुए तो विज्ञान उसका अभिशाप बनेगा। रसल ने कहा है कि मनुष्य की वर्तमान व्यवस्था में विज्ञान की ज्यों ज्यों प्रगति होगी, उसकी शासन व्यवस्था यानी सरकारों का दल बढ़ता जायगा और ज्यों-ज्यों सरकार की शक्ति बढ़ेगी व्यक्तियों के अधिकार क्षीण होते जाएँगे। इस कल्पना को मंगल लोक में लेखक ने सच होते दिखाया है।

हम विज्ञान को छोड़ना नहीं चाहते। साथ ही हम व्यक्तियों के आत्म सम्मान को भी अक्षुण्ण रखना चाहते हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने का उपाय यह है कि हम इस बात को स्वीकार करलें कि जीवन की सारी बातें विज्ञान से जाची परखी नहीं जा सकती। कुछ ऐसी बातें भी हैं जिनका सम्बन्ध धर्म और कला से है। विज्ञान का काम इतना ही है कि वह नई शक्तियों की खोज कर मनुष्य के हाथों में धर दे। किन्तु मनुष्य इन शक्तियों का उपयोग किस उद्देश्य के लिए करेगा, यह बात हमें विज्ञान नहीं, धर्म और कला से सीखनी होगी। इसलिए विज्ञान का अकल्याणकारी प्रभाव

तब नष्ट होगा जब मनुष्य के भीतर धार्मिक कोमलता और पवित्रता का वास होगा।

लेखक ने वैज्ञानिक कल्पनाओं के आधार पर एक ऐसी कथा की सृष्टि की है जिससे विज्ञान के गुण और उसके खतरे जनता की समझ में आसानी से आ जायेंगे। यह प्रयास अत्यन्त कठिन है और इसमें लेखक को जो भी सफलता मिली है उसके लिए हम उसे बधाई ही दे सकते हैं। 'मंगल यात्रा' हिन्दी उपन्यासों में एक नये क्षितिज का निर्माण करती है।

—रामधारीसिंह दिनकर

[१]

चन्द्रलोक को जाने वाले यात्री प्रतीक्षालय में बैठे थे। इनमें से कुछ अपनी तैयारियों को अन्तिम रूप दे रहे थे और कुछ अपने इष्टमित्रों से बातें कर रहे थे, जो उनको विदा करने के लिए राकेट स्टेशन पर आये हुए थे। यात्रियों के लाभ की आवश्यक सूचनायें लाउडस्पीकर द्वारा राकेट स्टेशन के नियन्त्रण-कक्ष से प्रसारित की जा रही थी। चारों ओर एक हलचल सी दीख पड़ती थी। प्रतीक्षालय के एक कोने में अशोक, मदालसा और अनीता कुछ स्नेहीजनों के बीच में बैठे थे।

"आपका यह मूक बलिदान पृथ्वीलोक के मानव कभी न भूल सकेंगे" उनके परिचितों में से एक अशोक को सम्बोधित करता हुआ बोला।

"और आप भी क्या कम साहस कर रही हैं। जीवन में प्रथम बार चन्द्रलोक की यात्रा और वह भी मानवता का शुभ सन्देश लेकर। हमारी शुभ कामनायें आपके साथ है" एक दूसरे व्यक्ति ने अनीता से कहा।

अशोक और अनीता दोनों ही चुप थे। अशोक ने अनीता और अनीता ने अशोक की ओर देखा। अशोक कहने लगा—"हम अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करेंगे कि जो उत्तरदायित्व आज आप हम सौंप

कप्तान ने रिपोर्ट को ध्यान से देखा और अपना आन्तरिक फोन उठाया 'हलो—मुख्य चालक, सब ठीक है।"

मुख्य चालक ने यह सुना तो अपनी कुर्सी के बाएँ हत्थे पर लगे बटन को दबा दिया। रॉकेट विमान की उड़ान के प्रथम खण्ड के गामक यन्त्रों से घर्र-घर्र की अत्यधिक तेज ध्वनि निकलने लगी। रॉकेट स्टेशन पर बैठे रॉकेट-मार्ग नियन्त्रक ने विमान का चलाने का संकेत किया। मुख्य चालक के केबिन से एक चकाचौंध पैदा हुई और रॉकेट के प्रथम खण्ड के गामक यन्त्र पूरी तेजी से काम करने लगे। घर्र-घर्र की आवाज और तीव्र हो उठी। स्वतः चालित यान्त्रिक चालकों ने काम करना आरम्भ कर दिया और तभी रॉकेट विमान तेजी से आकाश की ओर सीधा ऊपर उठा। रॉकेट के ऊपर उठने पर एक भारी झटका लगा, जिससे यात्रियों के हृदय को भारी धक्का-सा लगा और मदालसा का दिल तो कुछ बैठने सा लगा।

[२]

रॉकेट विमान की सीटों के साथ लगी खिड़कियों में पारदर्शक प्लास्टिक लगा हुआ था, जिससे बाहर का दृश्य साफ दिखाई पड़ता था। यही नहीं, प्रत्येक सीट के आगे एक टेलीविजन का सम्प्राहक-पट लगा था। अशोक अपने सम्प्राहक-पट द्वारा प्राप्त संजय जैसी दिव्य दृष्टि से रॉकेट विमान में, बाहर वायुमण्डल के दृश्य देखने में तल्लीन था। श्वेत बादलों को पार करता हुआ रॉकेट विमान तीव्र गति से ऊपर को उठ रहा था। आकाश का नीलापन धीरे-धीरे

शाला में यात्रियों को निरन्तर तीन मास तक सोने की भांति रटाई गयी थी।

तभी एक घण्टी बज उठी। वैमानिक ने कहा—"अब आप लोग सतर्क हो जाएँ। विमान के चलने में अधिक देर नहीं है, इसलिए आप सभी अपनी-अपनी रक्षक पेटियाँ बाँध कर अपनी-अपनी सीटों पर बैठ जाँय।"—और इतना कह कर वह चला गया।

राकेट विमान के बाहर खड़े कप्तान ने एक बार सरसरी दृष्टि से विमान का निरीक्षण किया। उसके साथ इंजीनियर, मुख्य चालक, सहचालक और दूसरे वैमानिक भी थे। उसने इंजीनियर को सम्बोधित करते हुए कहा—"कल रात आकाश स्टेशन से लौटते समय विमान का एक स्वतः चालित मापक यन्त्र खराब हो गया था, क्या उसको दुरुस्त कर दिया गया है ?"

"हाँ, मैंने उसको ठीक कर दिया है। उससे सम्बन्धित नियन्त्रण बोर्ड, सकेतक और चकाचौंधी-विद्युत-प्रकाशिकी भी खराब हो गये थे। लेकिन इस समय सब कुछ ठीक है।"

कप्तान कुछ आगे बढ़ा और उसने अपनी दृष्टि एयर कण्डीशन यन्त्र पर डाली। उसको ठीक पाकर वह विमान में चढ़ गया। उसके पीछे-पीछे विमान के सारे कर्मचारी अपने-अपने केबिनों में चले गये।

कप्तान अपने केबिन में जाकर बैठ गया। उसने मेज के नीचे का बटन दबा दिया। घण्टी बज उठी और तभी एक वैमानिक विमान के चलने से पूर्व की निरीक्षण रिपोर्ट लेकर उपस्थित हुआ।

घना और गहरा होता जा रहा था। बाहर आकाश में होने वाले निरन्तर परिवर्तनों के चित्र संग्राहक-पट पर क्षण-क्षण में आ रहे थे और अशोक उनको देखकर रोमांचित हो उठा था। अशोक ने ऊँचाई मापक यन्त्र की ओर देखा। विमान धरातल से दस मील ऊँचा उठ चुका था। आकाश की नीलाई धीरे-धीरे कासनी रंग में बदलने लगी थी। पृथ्वी से १५ मील ऊपर विमान पहुँचा तो आकाश का रंग पूरी तरह से कासनी हो गया। अशोक को यह बड़ा मोहक दृश्य लगा। कोने में लगे थरमामीटर की ओर भी उसका ध्यान गया। इतनी ऊँचाई पर तापक्रम बर्फ से ६७ गुना ठण्डा हो गया था, लेकिन राकेट विमान में बैठे अशोक को इसका रंचमात्र भी पता नहीं चला। एयर कण्डीशन के कारण उसे ऐसा लग रहा था, जैसे वह अपने घर के किसी कमरे मे बैठा हो।

सभी लोग अपने-अपने संग्राहक-पटों की सहायता से आकाश के दृश्य देखने में तल्लीन थे। विमान निरन्तर गति पकड़ता जा रहा था। वह पर्वतों और गहरे बादलों को नीचे छोड़, अब काफी ऊँचा उठ गया था। ऊँचाई मापक यन्त्र २० मील ऊँचाई बता रहा था और तभी अशोक के संग्राहक-पट पर अंधेरा छा गया। बाहर आकाश का कासनी रंग भयानक अन्धकार में बदल गया था। अशोक को पट पर कालेपन के अतिरिक्त और कुछ नजर नहीं आता था, इसलिए उसने अपने बांई ओर लगे बटन को दबाया। संग्राहक पट ने काम करना बन्द कर दिया। उसने मापक यन्त्र में देखा, विमान धरातल से २५ मील की ऊँचाई पर आ गया था। तभी अचानक राकेट को एक भारी धक्का लगा। मदालसा चीख कर

बोली—"अनीता बहन, मेरा दिल बैठा जा रहा है, मुझे बचाओ।"

अनीता स्वय भी घबराई हुई थी, इसलिए उसने याचना की दृष्टि से अशोक की ओर देखा। अशोक ने कहा—"कोई विशेष बात नही है मदालसा, उडान का प्रथम चरण समाप्त हुआ है और राकेट ने अपने शरीर स प्रथम खण्ड को विलग दिया है। इस खण्ड के अलग होने के कारण ही यह गहरा धक्का लगा है। घबराने की बात नही है।"

हाँ दीदी, अशोक ठीक कह रहे हैं। विमान का प्रथम खण्ड अपना काम पूरा कर चुका है, इसलिए उसको यान्त्रिक चालक ने अलग कर दिया है। अब हमारे विमान की गति ५५०० मील प्रति घण्टे से अधिक हो गयी है"—अनीता मदालसा का ध्यान बटाने की दृष्टि से बोली।

अशोक और अनीता की बातो को सुन कर मदालसा की घबराहट कुछ-कुछ दूर हुई। वह कहने लगी—"मैंने तो समझा था कि बस मेरा अन्त आ गया। फिर मैं हूँ भी तो बहुत भुलक्कड। मैं जानती हूँ कि ये सारी बातें मुझे आरोहण प्रशिक्षणशाला मे बताई गयी थी। पर न जान क्यों ऐसे अवसरो पर अनायास ही मेरे मस्तिष्क का सन्तुलन बिगड जाता है।"

अन्य यात्रियों ने मदालसा की ये बातें सुनीं तो वे सब हँस पडे। अशोक ने मदालसा का ध्यान बँटाने के लिए कहा—"यहाँ से यान्त्रिक चालक ने विमान के दूसरे खण्ड को अपने नियन्त्रण मे कर लिया है और उसके गामक यन्त्रा ने काम आरम्भ कर दिया है।"

"अनीता, पर यह यान्त्रिक चालक काम कैसे करता है?" कुछ झिझकते हुए मदालसा ने कहा, "मैं जानती हूँ कि यह मुझे प्रशिक्षणशाला में बताया गया था, पर तुम तो जानती हो मैं कितनी भुलक्कड़ हूँ और अब तुमसे ये सारी बातें पूछते हुए मुझे बड़ा संकोच हो रहा है।"

"दीदी इसमें संकोच की क्या बात है। जो बात मुझे नहीं आती है, मैं भी तो तुमसे पूछ लेती हूँ। हाँ तो यान्त्रिक चालक एक चुम्बकीय टेप के द्वारा विद्युत कणों की सहायता से चलाया जाता है। इस चुम्बकीय टेप में विमान के उड़ने से पूर्व ही आवश्यक आदेश उसी प्रकार भर दिये जाते हैं जैसे ग्रामोफोन रिकार्ड में ध्वनि भर दी जाती है।"

उधर विमान गति पर गति पकड़ता जा रहा था। मदालसा ने अपने सिर के ऊपर लगी घड़ी को देखा। फिर उसकी नजर अशोक के ऊपर लगे थरमामीटर पर जा पड़ी जो वाह्य-आकाश का ताप बता रहा था। वह थरमामीटर में बताये गये ताप को देखकर फिर चौंक उठी और अशोक से पूछ बैठी—'ऊपर देखो अशोक, थरमामीटर आकाश का ताप तो बहुत अधिक बता रहा है। अभी एक मिनट पहले तो आकाश हिम से कहीं अधिक शीतल था।"

"हाँ यह ठीक ही है। धरातल से २० मील की ऊँचाई पर वायुमण्डल में ओजोन गैस मिलने लगती है। इसमें सूर्यताप के सोखने का गुण होता है। उसी के कारण यह थरमामीटर इतनी गरमी बता रहा है। जब हम धरातल से ५० मील ऊँचे पर पहुँच जावेंगे तो बाहर आकाश का ताप बहुत बढ़ जाएगा। यदि इतनी

ऊँचाई पर किसी मानव को आकाश में छोड़ दिया जाय, तो जानती हो क्या होगा।"

"वह नीचे की ओर गिरने लगता होगा।' मदालसा की यह बात सुन कर पास बैठे यात्री भी हँस दिए। पर अशोक ने बात को सम्भालते हुए कहा—"हाँ वह तो होता ही है, लेकिन नीचे गिरने से पहले ही वह मर जाता है, क्योंकि सूर्य की ओर वाले उसके अङ्ग अत्यधिक ताप से भुलस जाते हैं और धरती की ओर वाले अङ्ग अत्यधिक शीत के कारण जम कर बरफ जैसे कठोर हो जाते हैं। साथ ही इतनी ऊँचाई पर वायुमण्डल में आक्सीजन इतनी कम रह जाती है कि सास नहीं लिया जा सकता।"

"यदि दीदी हम कृत्रिम वायुमण्डल में बन्द न होते तो हमारी भी ऐसी ही दशा होती।" —अनीता ने अशोक की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

'अच्छा ?" मदालसा आगे कुछ कहने वाली थी, अचानक तभी विमान को एक बार फिर भारी धक्का लगा। यह प्रथम धक्के से कहीं अधिक भारी था। मदालसा फिर घबराने-सी लगी, किन्तु अचानक उसे स्मरण हो आया कि राकेट विमान के ४० मील ऊँचा उठने पर यात्रा का दूसरा चरण पूरा हो जाता है और वह अपने से दूसरे खण्ड को भी अलग कर देता है।

राकेट को पृथ्वी से चले ३०० सैकिण्ड हो चुके थे। उसकी गति बढ़ कर १५ हजार मील प्रति घण्टा हो चुकी थी। अशोक ध्यान से अपने कमरे की छत को देखने लगा। प्लास्टिक और नाइलोन

बनी दीवारें देखने में बड़ी आकर्षक लग रही थी। कोने में एक छिद्र से वायुजनित्र (एयर जैनरेटर) द्वारा उपचारित वायु कमरे को भर रही थी।

उसने मापकयंत्र की ओर देखा। विमान धरती से सत्तर मील ऊँचा उठ गया था। कौतूहलवश अशोक ने संग्राहक-पट का बटन दबा दिया। संग्राहक-पट क्रियाशील हो उठा। पट पर अशोक को चिनगारी निकलती दीख पड़ी। वह समझ गया कि उल्का कणों ने विमान पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया है।

मदालसा ने भी अपना संग्राहक पट चालू कर दिया। उसने पट में चिनगारियों के चित्र देखे, तो वह घबरा गयी। वह चिल्ला उठी "विमान को आग लगने वाली है।"

"मदालसा, यह आग नहीं, उल्का कण हैं। इसमें घबराने की क्या बात है ? विमान को कोई हानि नहीं होगी, क्योंकि न पिघलने वाली धातु की चादरें विमान के बाहर चारों ओर लगी हुयी हैं।"

मदालसा का कौतूहल शान्त हुआ और वह अपने संग्राहक पट मे देखने लगी। उसने मापक यंत्र में देखा, विमान धरती से १३० मील की ऊँचाई पर आ गया था। अचानक पट पर एक चकाचौंध प्रकाश की झलक दिखायी पड़ी। उसे लगा जैसे अरुणोदय हो गया है। उसे याद हो आया कि यह एक ज्योति पुज है और इसी प्रकार के ज्योति पुंज ६०० मील की ऊँचाई तक बराबर मिलते रहेंगे। अपनी स्मरण शक्ति पर वह गर्वित हो उठी। और यह बात वह अशोक को बताना भी नहीं भूली, "जानते हो अशोक, अभी संग्राहक पट पर यह चकाचौंध किस वस्तु ने की थी ?"

अशोक जानकर भी अनजान बना रहा और उसने कहा "नहीं तो ?"

"इतना भी नहीं जानते। पृथ्वी के ध्रुवों पर महीनों तक सूर्य के दर्शन नहीं होते। फिर भी वहाँ पर उजाला रहता है। वह इन्ही ज्योतियों के कारण होता है जो अभी सग्राहक पट पर चकाचौंध प्रकाश के रूप में दिखायी पड़ी थी। क्या अरोरा बोलियास को भी भूल गए ?"

विमान के यात्री मदालसा के इस फूहड़पन पर हँस पड़े क्योंकि इन बातों से वे सभी परिचित थे। मदालसा ने सबको हँसते देखा तो वह झेंप गयी।

तभी एक राकेट वाला ने अपने आकाशवाणी यन्त्र से घोषणा की "कृपया अपने सग्राहक पटों को कुछ समय के लिये बन्द कर दीजिए क्योंकि विमान पर ब्रह्माड किरणों ने आक्रमण कर दिया है। पटों के चलाने से ब्रह्माड किरणें विमान के अन्दर आ सकती हैं।"

सभी यात्रियों ने अपने सग्राहक पटों को बन्द कर दिया, क्योंकि वे जानते थे कि ब्रह्माड किरणें भी उतनी ही भयानक होती हैं जितनी हाइड्रोजन और परमाणु बमों से निकली किरणें।

धरती को छोड़े अभी केवल साढ़े अड़तालीस मिनट ही हुए थे पर ऊँचाई मापक यन्त्र २०० मील की ऊँचाई बता रहा था। ज्यों-ज्यों राकेट विमान ऊपर उठ रहा था, त्यों-त्यों वायुमण्डल छिछला और हल्का होता जा रहा था। गुरुत्वाकर्षण भी पर्याप्त कम हो गया था।

अब राकेट विमान पृथ्वी से एक हजार मील की ऊँचाई पर आ गया था। लोग वायुहीन आकाश की यात्रा के कुछ अभ्यस्त हो गए थे। सब जानते थे कि आकाश स्टेशन समीप है। वे मनुष्य निर्मित इस उपग्रह को देखने के लिए बड़े उत्सुक थे। इसलिए सब ने अपने संग्राहक पटों को चालू कर दिया था। संग्राहक पट पर तीव्रगति से प्रकाश करता हुआ राकेट विमान से आकाश में सौगुना कोई पदार्थ सर्र से निकल गया। यही निरन्तर गतिशील और स्वतः चालित आकाश स्टेशन था। यद्यपि उसके बारे में यात्रीगण कुछ न जान सके, पर फिर भी सब को सन्तोष था कि उन्होंने कम से कम पट पर तो आकाश स्टेशन को देख लिया। पृथ्वी से १०७५ मील की ऊँचाई पर यह स्टेशन आकाश में बनाया गया था। मानव मस्तिष्क और इंजीनियरिंग का यह एक अद्भुत उदाहरण था। प्रत्येक दो घण्टे में यह सम्पूर्ण पृथ्वी का एक चक्कर लगा लेता था। इसकी गति १८ हजार मील प्रति घण्टा थी। हमारा राकेट विमान, भी अब धरातल से १०७५ मील की ऊँचाई पर आ गया था। इसको पृथ्वी से यहाँ तक आने में केवल डेढ़ घण्टा लगा था। हम अपनी यात्रा की पहली मंजिल पूरी कर चुके थे। इतने में ही एक राकेट वाला ने कहा, "यदि आप लोगों को कष्ट न हो तो आप अपने अपने वायुयुक्त आकाशीय कवच और शिरस्त्राण धारी स्पेट सूट पहन लें, क्योंकि आपकी यात्रा समाप्त होने वाली है। दो घण्टे पश्चात् आप आकाश स्टेशन पर होंगे।"

हमें लगा कि राकेट विमान रुक गया है, पर विमान के गामक यन्त्र अब भी आग बरसा रहे थे। यह एक तरह से हमारे लिए अच्छा ही हुआ, क्योंकि हम लोग आसानी से कवच पहन सकते थे। हमारे शरीर पर अत्यधिक गति से उत्पन्न त्वरण पड़ना अब बन्द हो गया था। गति के कारण जो मास पेशियाँ शिथिल हो गयी थीं वे पुन क्रियाशील हो उठी थीं। मदालसा अपने स्वभाव के अनुसार पूछ बैठी—"अशोक, विमान की मोटरें तो चल रही हैं, पर फिर भी विमान स्थिर है, यह क्या बात है ?"

यात्रियों के लिये मदालसा-मनोरंजन की वस्तु बन गयी थी, इसलिए सभी हँस पड़े। हँसे नहीं तो केवल अशोक और अनीता।

"दीदी, अब तक विमान आकाश की ओर ऊपर उठ रहा था। किन्तु अब विमान की मोटरें इसको पृथ्वी की ओर ले जा रही हैं" अनीता बोली।

'लेकिन वास्तव में यह नीचे की ओर तो नहीं जा रहा। यह तो जहाँ का तहाँ खड़ा है" मदालसा ने कहा।

"यहाँ पर किसी भी वस्तु को स्थिर करने के लिये उसको उल्टी दिशा में उसी गति से चलाना पड़ता है।"

"यह क्यों ?"

"इसलिए कि इस स्थान की यह विशेषता है कि जो वस्तु यहाँ पर जिस गति से आती है उसकी गति सदैव वही बनी रहती है। इस स्थान तक आने के लिये प्रत्येक पदार्थ की गति १८ हजार मील प्रति घण्टा होना आवश्यक होता है।"

"अरे मैं तो भूल ही गयी थी। यह तो मुझे आरोहण प्रशिक्षण-शाला में ही बताया गया था।" मदालसा ने कहा।

अशोक को हँसी आ गयी और अपनी हँसी को रोकने के लिये वह चापयुक्त आकाशीय कवच को पहनने लगा। कवच क्या था, पूरा एक छोटा मोटा कमरा था—नाइलोन और अन्य प्लास्टिकों का बना हुआ। परन्तु यह पर्याप्त हल्का था। कवच में ही शिरस्त्राण लगा था। अशोक उसके अन्दर घुस गया। उसका सारा शरीर सिर से पैर तक इस आवरण में ढक गया। बाहर से देखने पर वह गोताखोर जैसा लगने लगा। उसने अपने कवच में स्थित आक्सीजन-जैनेरेटर को चला दिया और वह जोर-जोर से सांस लेने लगा। मुख से निकली कार्बन डाइआक्साइड को यह जैनेरेटर आक्सीजन में बदलने लगा। अशोक ने कुछ ताजगी का अनुभव किया। उसने कवच में लगे जेबी रेडियो का सम्बन्ध अनीता से जोड़ा।

'हलो, अनीता, तुम्हारा क्या नम्बर है ?"

हलो कौन अशोक, मेरा नम्बर पाच है। जरा देर ठहरो मै अभी तक पूरी तरह से वायुहीन रक्षक कवच को नही पहन सकी हूँ।"

अशोक फिर अपने कवच के निरीक्षण में लग गया। उसने अपने दाहिने हाथ के पास कवच में लगे दो बटनों में से एक को दबा दिया, कवच में स्थित रडार का संग्राहकपट संजय की दिव्य दृष्टि की तरह काम करने लगा। अब उसे अपने चारों ओर की चीजें पट पर दिखायी पड़ रही थी।

मदालसा को कवच पहनने मे पर्याप्त देर लगी। फिर भी वह कवच न पहन सकी और उसको अपनी सहायता के लिये राकेट वाला को बुलाना पडा।

स्पेस सूट पहनने मे यात्रियो को लगभग डेढ घण्टा लग गया। अब भी विमान के गामक यन्त्र उसी चाल से काम कर रहे थे आर विमान उसी स्थान पर स्थिर खडा था। सभी यात्री अपन सम्राहक पटा से एक दूसरे को देख रहे थे। केवल अशोक ही कुछ और सोच रहा था। मन म रह-रह कर उसे अपने उन साथिया का स्मरण हो रहा था जिनको वह पृथ्वी पर छोड कर आया था। फिर उसे अपने उस गुरुतर काम की याद आई जिसके लिये वह चन्द्रलोक जा रहा था। इस यात्रा पर आने से पूर्व विश्व सरकार के प्रधान ने उसको विशेष रूप से बुलाकर कहा था 'तुम जानत हो, मानव की मगल यात्रा को न इतिहास रोक पाया है और न महाकाल का उत्ताल नर्तन। यह माना कि रागद्वेष स्वार्थपरता, कलह और विवादो ने मानव की मगल यात्रा मे समय-समय पर विक्षोभ पैदा किया है, पर मे उसकी इस यात्रा को न कभी रोक पाय है और न कभी रोक ही सकेंगे।"

उसे अनुभव हुआ जैसे इसी शाश्वत सदेश को फैलाना उसके जीवन का लक्ष्य है। जैसे वह चन्द्रलोक मे पहुँच कर सबको यही सन्देश सुना रहा है, वह इसी प्रकार न जाने कब तक सोचता रहा। अचानक उसको राकेट वाला का स्वर सुनाई पडा। 'भाई अशोक, यहाँ पर खडे-खडे क्या सोच रहे हैं, आपके सभी साथी बाहर नैवीगेशन डेक पर खडे आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

'ओह, माफ करिए बहन,—मैं कुछ यों ही सोच रहा था। आप चलिए, मैं अभी आया।" और अशोक अपने स्पेस सूट व पहने डेक की ओर चल पड़ा।

उधर दूसरी घण्टी बजी और राकेट वाला ने बताया कि १५ मिनट बाद आकाश स्टेशन धरती का चक्कर लगाता हुआ यहां आवेगा। तब तक आप राकेट टैक्सी में बैठकर उसका इन्तजार करें। इसके बाद राकेट वाला ने सबसे विदा ली। उसके जाते ही क्लिक जैसी आवाज हुई और नैवीगेशन डैक से एक पल्ला ऊपर उठा, नीचे जाने के लिये सीढ़ियाँ नजर आने लगी। एक एक करके सब लोग उनसे उतरे और नीचे लगी राकेट-टैक्सी में आ गये। टैक्सी विमान से अलग होकर आकाश मे ऊपर उठने लगी। सबने अपने टेलीविजन पर्दों पर देखा कि राकेट विमान धरती की ओर गिर रहा था। इसके बाद वे राकेट टैक्सी में बैठे आकाश स्टेशन के आने का इन्तजार करने लगे।

"राकेट टैक्सी ऊपर उठती जा रही थी। उसकी मोटरें अब भी आग बरसा रही थी। पर इतने ऊँचे पर हवा न हो... आवाज बिल्कुल भी सुनाई नही देती... देखने को बड़े उत्सुक थे, इसलिये... ऐसा अनोखा चांद था जो पिछले... घूम रहा था। कहा जाता था कि... इसी तरह घूमता रहेगा। ... नी का एक चक्कर दो घण्टे

'ओह, माफ करिए बहन,—मैं कुछ यों ही सोच रहा था। आप चलिए, मैं अभी आया।" और अशोक अपने स्पेस सूट को पहने डेक की ओर चल पड़ा।

उधर दूसरी घण्टी बजी और राकेट वाला ने बताया कि १५ मिनट बाद आकाश स्टेशन धरती का चक्कर लगाता हुआ यहाँ आवेगा। तब तक आप राकेट टैक्सी में बैठकर उसका इन्तजार करें। इसके बाद राकेट वाला ने सबसे विदा ली। उसके जाते ही क्लिक जैसी आवाज हुई और नैवीगेशन डैक से एक पल्ला ऊपर उठा, नीचे जाने के लिये सीढ़ियाँ नजर आने लगी। एक एक करके सब लोग उनसे उतरे ओर नीचे लगी राकेट-टैक्सी मे आ गये। टैक्सी विमान से अलग होकर आकाश मे ऊपर उठने लगी। सबने अपने टेलीविजन पर्दों पर देखा कि राकेट विमान धरती की ओर गिर रहा था। इसके बाद वे राकेट टैक्सी मे बैठे आकाश स्टेशन के आने का इन्तजार करने लगे।

"राकेट टैक्सी ऊपर उठती जा रही थी। उसकी मोटरें अब भी आग बरसा रही थी। पर इतने ऊँचे पर हवा न होने के कारण उनकी आवाज बिल्कुल भी सुनाई नही देती थी। सभी लोग आकाश स्टेशन देखने को बड़े उत्सुक थे, इसलिये कि वह आदमी द्वारा बनाया हुआ ऐसा अनोखा चाँद था जो पिछले सौ वर्षों से धरती के चारो ओर घूम रहा था। कहा जाता था कि वह धरती के खतम होने तक बराबर इसी तरह घूमता रहेगा। उसकी रफ्तार इतनी तेज थी कि वह धरती का एक चक्कर दो घण्टे में पूरा कर लेता था। कहाँ चाँद

[४]

आकाश स्टेशन एक बहुत बड़ी इमारत थी। यह पांच सौ फीट लम्बा और चार सौ फीट चौड़ा था। अल्युमीनियम गार्टर और तन्तु काँच की चादरों से इसका ढांचा बना हुआ था। यह ढांचा नाइलोन प्लास्टिक के एक विशेष वस्त्र से मढ़ा गया था। हम सभी आकाश स्टेशन के बाह्य रूप को देखकर आश्चर्यचकित हो गये। इसके चारों ओर एक डैक था। स्टेशन का शेष भाग प्लास्टिक से पूरी तरह ढका हुआ था। एक ओर हमारी ही तरह कवच पहने एक स्टेशन कर्मचारी खड़ा था। हम जब उसके समीप आये तो उसने एक बटन दबाया। दरवाजा स्वतः खुल गया और हम सब उसके अन्दर चले गये। हमारे अन्दर घुसते ही दरवाजा पुनः बन्द हो गया। यहाँ पर यात्रियों को पासपोर्ट आदि आवश्यक कागज पत्र दिखाने की औपचारिक कार्यवाही पूरी करनी पड़ी। हम कुछ देर वहीं बैठे रहे। इतने में एक सत्कार बाला ने आकर हमारा स्वागत किया और वह हमें अपने साथ ले चली। पृथ्वी के राकेट स्टेशन के अधिकारियों ने आकाश स्टेशन के अतिथि-गृह में हमारे लिए पहले से ही स्थान सुरक्षित करवा लिए थे। सत्कार बाला ने चलकर हमें हमारे कमरे दिखा दिये। एक कमरे में तीन व्यक्तियों के रहने का प्रबन्ध था। अशोक, अनीता और मदालसा तीनों ने एक ही कमरे में रहने का निश्चय किया। सत्कार बाला आवश्यक सूचनाएँ देकर वापस चली गयी। यहाँ आकर स्पेट सूट उतारे तो जान में जान आई। अशोक थोड़ी देर के लिए नीचे बिछे बिस्तर पर लेट गया।

लेटते ही उसे नींद आ गयी। अनीता और मदालसा दोनों ही स्नानागार में चली गयीं।

जब तक मदालसा और अनीता वस्त्र बदल कर आयीं तब तक अशोक अपनी नींद पूरी कर चुका था। वह बैठा हुआ दोपहर का समाचार पत्र देख रहा था। आज उसका मन कुछ उदास था। बिस्तर पर से उठने को उसका जी नहीं चाहता था फिर भी अनीता के कहने से वह उठा और वस्त्र बदले। तभी सत्कार बाला ने आकर बताया कि खाना तैयार है। तीनों उसके पीछे चल पड़े। सत्कार बाला ने इनको एक बड़े हाल में लाकर खड़ा कर दिया। यहाँ पर लगभग पचास व्यक्ति भोजन कर रहे थे। एक खाली मेज के तीन ओर ये लोग बैठ गये। भोजन में केवल कुछ पूर्व—पचित सघन खाद्य की गोलियाँ, कुछ पैक किया हुआ लच और कुछ निर्जल पररक्षित सब्जियाँ ही खाने को मिलीं और पीन के लिय दाव युक्त पात्र में कोई पेय। इस प्रकार के खाने के हम लोग आरोहण प्रशिक्षणशाला में आदी हो चुके थे। इसलिए हमको कोई विशेष असुविधा न हुई। भोजन के बाद हम पुन अपने कमरे में आ गये। हम सभी इतने थके हुए थे कि तुरन्त ही लेट गये और नींद ने हमको आ घेरा।

जब हम लोग सोकर उठे तो शाम हो गयी थी। रात का भोजन हमने अपने कमरे में ही किया। रात को आकाश स्टेशन के नृत्य हाल में एक विशेष समारोह आयोजित किया गया। सभी उसमें गये किन्तु अशोक और अनीता ने वहाँ जाना पसन्द नहीं किया। मदालसा न जाने कब चुपचाप खिसक गयी थी। अशोक मदालसा

वस्तु का विश्लेषण हुआ जाता है। टोनी ने इतना कह कर एक बटन दबा दिया। गगन गाड़ी के एक भाग से अत्यधिक तेज प्रकाश चकाचोंध करता हुआ कुछ क्षण के लिए निकला और उसके पश्चात कुछ अदृश्य शक्तिशाली किरणें मुक्त होने लगीं। रडार एक्स-रे पटल पर विश्लेषण स्पष्ट आ गया।

"बस टोनी बन्द कर दो, अधिक देर तक यन्त्र को चालू करने से इन भीमकाय जीवों को हानि पहुँच सकती है", जोन ने कहा। किन्तु टोनी उस समय तक यन्त्र को बन्द कर चुका था।

डोनाल्ड, टोनी, और जोन तीनों मिलकर विश्लेषण का गम्भीर अध्ययन करने लगे।

"जोन यह तो बड़ा जटिल रहस्य सा लगता है। मेरी समझ में तो कुछ आता नहीं। इतना अवश्य लगता है कि इस में कोई मानवाकृति अवश्य है क्योंकि अनेक स्थानों पर पटल छवि में तरंग-लम्बाई इसी प्रकार की आ रही है जैसी कि हमारे शरीर की रडार एक्स-रे से आती है। हाँ वह अपेक्षाकृत कुछ छोटी अवश्य है। तुम्हारा क्या विचार है?" टोनी बड़ी गम्भीरता से बोला।

"बात तो तुम ठीक ही कहते हो। ऐसा लगता है हम इनका विश्लेषण न कर पायेंगे। इनको क्यों न हम सुरक्षा केन्द्र तक ले चलें। इनको वहाँ के सचालक को सौंप देने से हमारा कर्तव्य समाप्त हो जाता है" जोन पटल का निरीक्षण करता हुआ बोला।

"डोनाल्ड, क्या हम इन तीनों भीमकाय आकारों को मंगल की आकर्षण शक्ति के क्षेत्र में ले जा सकते हैं?" टोनी ने प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा।

"जरा मुझे थोडा सोचने दो" डोनाल्ड ने कहा और वह गगन गाडी के दूसरे कमरे मे जाकर अपनी अणुक्रेन की परीक्षा करने लगा। कुछ समय पश्चात वह उसी स्थान से बोला-"हाँ टोनी यह सम्भव है। मैंन अपनी गगन गाडी उसी दिशा मे मोड दी है। अणु क्रेन नीचे लटका दी गई है। तुम अपने पास बायी ओर का बटन दबा दो। हा ठीक—मैंने भी गगन गाडी को खडा कर लिया है—जोन तुम भी अपने पास का दाहिना बटन दबाओ—बस—टोनी दाहिना बटन दबाओ—हाँ अब रहने दो"—

और जोन ने अपने रडार पटल पर देखा—तीनो भीमकाय आकार क्रेन द्वारा गगन गाडी के पिछले भाग मे यथास्थान लगा दिये गये हैं।

जोन वही से डोनाल्ड की ओर उन्मुख होकर बोला—"यान्त्रिक चालक मे आदेश भर दो, ताकि गगन गाडी अपनी तीव्रतम गति से मगल ग्रह की ओर वापिस चले। आज हम लोगो ने बहुत भारी काम किया है।"

[८]

मंगल लोक के वनस्पति प्रदेश मे चारो ओर एक ही विषय को लेकर चर्चा हो रही थी। इस चर्चा मे प्रदेश के सभी दैनिक समाचार-पत्र अत्यधिक रुचि ले रहे थे। चर्चा का विषय था—स वर्गीय महामानव जोन, टोनी और डोनाल्ड तथा उनकी आधुनिकतम खोज के फल—बर्बर भूलोक के तीन अर्ध सभ्य मानव, जिनको वे मगल लोक की आकर्षण शक्ति की सीमा से एक लाख मील बाहर से पकड़ कर लाये थे। वनस्पति प्रदेश के दैनिक समाचार पत्रों के

सम्यता अभी भी प्रारम्भिक अवस्था में है और यह सम्यता मंगल लोक की महामानव सम्यता से बहुत पीछे है।

प्रदेशीय गुप्तचर विभाग ने इन मानवों से प्राप्त कागज पत्रों को सूक्ष्मता से जांच कर ली थी और उसकी सूचना प्रधान महामानव निर्माता महोदय को दे दी गयी थी। उनके कार्यालय में इन सब सूचनाओं का गम्भीर अध्ययन किया गया और वे इसी निष्कर्ष पर आये कि ये मानव मंगल लोक में कोई सकटापन्न स्थिति उत्पन्न नहीं कर सकते, इसलिए इनको महामानव समाज में खुले रूप में छोड़ देने में कोई हानि नहीं है। अपने इस आदेश को उन्होंने वनस्पति प्रदेश के महामानव निर्माता के पास भेज दिया।

अंकुश हटते ही सभी समाचार पत्रों ने मानवों के चित्र बड़े-बड़े आकार में प्रकाशित किए। नर मानव के शरीर के प्रत्येक अंग का चित्र प्रकाशित किया गया। उसके प्रत्येक अंग की सुगठित रचना की ओर ध्यान आकर्षित किया गया। उसके मुख पर उभरी मृदु रेखाओं ने सभी महामानवीयों को मोहित कर लिया। उसकी छवि को देखकर सभी वर्गों की युवतियों ने अपने मन में इस नर मानव के कम से कम एक बार निशा-निमन्त्रण देने का मन ही मन निश्चय कर लिया। मादा मानवों के चित्र उनके वस्त्रों सहित प्रकाशित किए गए। पीत वर्ण के मादा मानव ने अर्ध नग्न होकर भी अपना एक चित्र खिचवाया था और उसको समाचार पत्रों ने बड़े सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया था। किन्तु दूसरा मादा-मानव केवल वस्त्रों सहित ही चित्र खिचवाने को तैयार हुआ।

चित्र मे जिस प्रकार के भाव मादा मानव के मुख से प्रगट होते थे उनसे उसकी छवि बड़ी मनोहारणी लगती थी। इसके मुख पर एक विचित्र आभा का दिग्दर्शन महामानवो को हुआ, जिसने उनके मन मे इस मादा-मानव के प्रति ऐसे भाव उत्पन्न कर दिये जैसे आज तक मगल लोक की महामानवीयो मे सुन्दर से सुन्दर युवती के प्रति भी नही हुए थे।

स वर्गीय महामानव जोन, टोनी और डोनाल्ड सारे वनस्पति प्रदेश मे विजेता बन गये थे। चारो ओर उनकी माग थी। शरीर विज्ञान विशेषज्ञ, मनोवैज्ञानिक, भावुकता इजीनियरिंग विशारद, ऋतु नियन्त्रक आदि सभी उपवर्गों के स वर्गीय महामानव इनसे मिलने को उत्सुक थे। इनको बहुत दिनो के बाद अपनी········· का अवसर हाथ आया था। और वे उसको अनायास ही हाथों से निकालना नही चाहते थे। इसस पूर्व वनस्पति प्रदेश की सभी युवतियाँ इन तीनों स वर्गीय महामानवो के साथ अपनी रात्रि व्यतीत करने मे बहुत हिचकिचाती थीं। फिर भी कभी-कभी उनको इनके साथ रहना पड़ता था, क्योकि वे मगल लोक के सामाजिक नियमो की अवहेलना नही कर सकती थीं। किन्तु मानवो की खोज ने उनको इतना महत्वपूर्ण बना दिया था कि सभी युवतियाँ इनको निशा-निमन्त्रण दे चुकी थीं।

स वर्गीय महामानव जोन, टोनी और डोनाल्ड को उनकी इस खोज पर दस-दस तोला सोमवटी और तीन माह का अवकाश मिला। इन तीनों के पदों मे भी वृद्धि हुई। अब तक वे महामानव शिशु निर्माता मिल मे केवल प्रयोगशाला-कर्मी थे। किन्तु अब वे

एक-एक विभाग के नियन्त्रक बना दिए गए। उनकी इस नयी खोज के प्रति आभार प्रदर्शित करने के लिये तीनों मानवों के रहने का प्रबन्ध भी जोन, टोनी और डोनाल्ड के कमरों से लगे बड़े भवन में किया गया। तीनों मानवों को सम्पूर्ण मंगल लोक में कहीं भी जाने की अनुमति प्रदान की गई।

अनीता, अशोक और मदालसा को जब होश आया तो उन्होंने अपने को एक बड़े भवन मे कुछ अदभुत परिस्थिति मे पाया। अपने चारो ओर सभी कुछ उनको अदभुत दिखाई पड़ रहा था। दीवार तारों जैसे चमकते हीरो से जडी थी। खिड़कियों के काच जैसे पदार्थ रग-बिरंगे प्रकाश से चमक रहे थे। छत की ओर देखा तो एक विचित्र चमक सी कौंध गई। मानो किसी ने सहस्रों दर्पण इस प्रकार सजा दिये हों कि एक दूसरे की चमक को दूना चौगुना कर दें। छत का प्रकाश बराबर बदल रहा था। ये तीनों जादू टोना में विश्वास नही करते थे। किन्तु इस भूल भुलैया को देख कर अचानक उन्हे लगा जैसे उन पर किसी ने जादू तो नही कर दिया हो। अब उनका ध्यान अपने वस्त्रों की ओर गया। वे बहुत महीन थे और लगता था जैसे उनको विशेष तन्तु से बनाया गया हो। एक रंग की विभिन्न पुट देकर इनकी छवि बहुत ही आकर्षक बना दी गई थी। भवन की दीवार किसी पारदर्शक पदार्थ की बनी हुई थी। धीरे-धीरे उनको सभी बातें याद हो आयीं। अनीता ने अचानक अशोक से पूछा, "हम लोग कहाँ पर हैं ?"

"यही तो मुझे भी पता नहीं। लेकिन इतना निश्चित है कि हम किसी ऐसे लोक मे आ गये हैं जहाँ के निवासी वैज्ञानिक उप-

लब्धियो मे पृथ्वी लोक से बहुत आगे हैं। कौन हमे यहां पर लाया है—यह रहस्य हमे शीघ्र ही सुलझाना होगा।" जब ये तीनो इस प्रकार बातें कर रहे थे तभी अचानक उस विशाल हाल मे चार व्यक्तियो ने प्रवेश किया।

[६]

उनमे से एक पीतवर्ण पुरुष ने अशोक, अनीता और मदालसा को पृथ्वी की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा मे सम्बोधित करते हुए कहा "ये हैं स वर्गीय महामानव जोन, टोनी और डोनाल्ड जो आपको मगल लोक के आकर्षण क्षेत्र की सीमा से एक लाख मील दूर जाकर यहां लाये हैं। आपकी जीवन रक्षा का सम्पूर्ण श्रेय इन्ही को है।"

हमको बडा आश्चर्य हुआ कि यह पीतवर्णधारी पुरुष किस प्रकार हमारी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा मे बोल रहा है, किन्तु शिष्टाचार-वश अशोक ने तुरन्त ही अन्तर्राष्ट्रीय भाषा मे उत्तर दिया—

"आपने हमे नवजीवन प्रदान किया है, इसके लिय हम आपके हृदय से आभारी हैं, आपके इस उपकार को हम जीवन पर्यन्त न भूल सकेंगे।"

जोन, टोनी और डोनाल्ड तीनो एक साथ ही कुछ-कुछ बुद-बुदाये, जिसे हम लोग न समझ सके। हम एक दूसरे के मुँह की ओर ताकने लगे। फिर वही पीतवर्ण पुरुष बोला। स वर्गीय महामानव आपसे कह रहे हैं कि उनको आपसे मिलकर बडी प्रसन्नता हुई है, वे आपका परिचय जानना चाहते हैं।

अशोक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा में बोला—"हमें भी आपसे मिलकर भारी प्रसन्नता हुई है। मुझे अशोक कहते हैं। ये मेरे सहयात्री अनीता और मदालसा हैं।"

स वर्गीय जोन, टोनी और डोनाल्ड तीनों एक साथ बोल पड़े।—"अशोक, अनीता और मदालसा" इसके बाद उन्होंने क्या कहा यह हम नहीं समझ सके।

फिर वही पीतवर्णधारी व्यक्ति बोला, "ये तीनों स वर्गीय महामानव आपका अभिनन्दन करते हैं और आपके आतिथ्य करने की स्वीकृति चाहते हैं।"

हमारी हैरानी का कोई ठिकाना नहीं था "हम सोच रहे थे कि ये लोग किस प्रकार हमारी भाषा को समझ लेते हैं। हमारे मस्तिष्क मे एक साथ सैकड़ों प्रश्न उठ रहे थे। अचानाक अनीता पूछ बैठी—"हम लोगों को यह पता नहीं कि हम लोग यहाँ पर है ? किस प्रदेश में हैं ? और यहाँ के उच्चाधिकारी कौन हैं ? हम यह भी नहीं जानते कि हम आपके निमत्रण को स्वीकार करने की स्वतन्त्रता है भी या नहीं ?"

"आप इस समय मंगल लोक के वनस्पति प्रदेश के एक स्वास्थ्य संवर्धन केन्द्र में हैं। प्रदेश के महामानव निर्माता महोदय अभी कुछ समय बाद आपसे भेंट करेंगे। वे ही इस प्रदेश के सर्वोच्च अधिकारी हैं। इस विषय में सारी बातें वही आपको बतायेंगे।" पीतवर्ण व्यक्ति बोला।

"लेकिन उनके वस्त्र तो बहुत ही आकर्षक थे।" मदालसा ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

"तुम दोनों ने उनकी छाती पर टगे चित्र नहीं देखे ? मैं उनको ही ध्यान से देख रहा था। उन पर बोतल से निकलते हुवे मानव शिशु अंकित थे।"—अशोक सोचता हुआ सा बोला।

"लेकिन मुझे तो इनमें से एक भी पसन्द नहीं आया। पीला रंग, गड्ढे में धसी आंखें, पिचके हुए गाल, टेढ़ी नाक, मुख पर अस्वाभाविक मुस्कराहट और चाल में एक प्रकार की कृत्रिमता। उनके मुख पर उभरी हुई अप्रीतिकर रेखाएँ और एक विचित्र सा तनाव देखकर मुझे भूलोक के उन सैनिकों की याद ताजा हो उठी, जो प्रायः बाहर से आरोपित अनुशासन के कारण मुख पर आ जाती है"—अनीता मुंह बनाकर बोली।

"तुम्हे कहीं कुछ पसन्द भी आता है। जहां जाती हो वहीं कुछ न कुछ कमी दिखाई पड जाती है।" मदालसा ने सोफे की चिकनाहट पर हाथ फेरते हुये कहा।

"यहाँ पर आपस मे इस प्रकार का मनोमालिन्य शोभा नहीं देता, यहाँ पर तो हमें बडी सावधानी से व्यवहार करना है।" लेकिन अशोक के इतना कहने के पूर्व ही मदालसा सोफे पर दूसरी ओर को मुंह करके बैठ गयी थी।

हम तीनों कुछ समय तक अपने-अपने विचारों में डूबे रहे। तभी कुछ आहट सी हुई और पीतवर्ण व्यक्ति के साथ एक और व्यक्ति हाल मे आ गया। हम लोग उसको देखकर अभ्यर्थना के

जाने की आपको पूरी स्वतन्त्रता है। किन्तु कुछ समय के लिए आपको स वर्गीय महामानव जोन, टोनी और डोनाल्ड के साथ रहना होगा, ताकि आप यहाँ की भाषा और संस्कृति की कुछ साधारण बातें सीख सकें। इसके लिए पूरा प्रबन्ध कर दिया गया है। आपको यहाँ के सभी नियमों का पालन करना होगा। एक बात आप स्मरण रखें कि आप यहाँ पर कभी भी अकेले नही रह सकेंगे। इसीलिए रहने के लिए आप तीनों को एक ही कमरा दिया गया है। इसके अतिरिक्त आपको जो भी असुविधा हो, उसके दूर करने के लिए मुझसे कभी भी सम्पर्क स्थापित कर सकते है। आप लोगों के लिए दो गगन गाड़ियों का भी प्रबन्ध कर दिया गया है। मैं चाहूँगा कि आप जब कभी भी चाहें, मेरे पास आकर मुझे बर्बर भू-लोक के विषय मे बताते रहें।"

इतना कह कर प्रादेशिक महामानव निर्माता महोदय कमरे से बाहर चले गये। हमें उन्होने न कुछ पूछने का अवसर दिया, न कुछ अपनी बातें कहने का। इससे हमें कुछ अचम्भा तो हुआ, पर फिर बाद में हमने यही सोच कर संतोष कर लिया कि कदाचित मगल-लोक में इसी प्रकार का रिवाज हो।

[१०]

दूसरे दिन सायंकाल उसी पीतवर्ण व्यक्ति के साथ जोन, टोनी और डोनाल्ड आये। वे बड़े प्रसन्न थे। आते ही वे अपनी छाती तक हाथ लाए और कुछ झुके। हम समझ गये कि यह उनके अभिवादन का तरीका है। हमने भी अपने तरीके से उनका अभिवादन किया। इसके बाद वे तीनों हॉल में पड़े सोफों पर बैठ गये।

"कहिये अशोक जी, आपका स्वास्थ्य कैसा है ?" जोन ने हमारी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा में बोलते हुये कहा। उससे हमे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर भी अशोक ने अपने कौतूहल को दबाते हुए कहा—"मैं धीरे-धीरे स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूँ, आप लोग तो स्वस्थ और प्रसन्न हैं ?"

"हाँ, हम सभी लोग ठीक हैं" जोन ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

मदालसा अपने कौतूहल को न दबा सकी, वह बोली—"महाशय जोन, आपको यदि कोई आपत्ति न हो तो मैं आपसे कुछ पूछूं ?"

"अवश्य"—जोन ने कहा।

"देखिये कल प्रातःकाल जब आप हमसे मिले थे, तो हमारी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा को बोलने मे आप असमर्थ थे और अब आप इसी भाषा मे बातें कर रहे हैं।"

"यहाँ स वर्ग के सभी महामानवो को बर्बर भू-लोक की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का थोड़ा ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य होता है। किन्तु मंगल लोक में अब आपकी भाषा एक मृत भाषा समझी जाती है। आज से दो सौ वर्ष पूर्व तक सम्पूर्ण मंगल ग्रह में इसी भाषा का उपयोग होता था, किन्तु भाषा—वैज्ञानिकों ने जब इस भाषा का सूक्ष्म रूप से अध्ययन किया, तो इसे अवैज्ञानिक पाया। इस भाषा मे सुधार किये गये। यह परवर्तित की गयी। इसका विकास किया गया। वर्णमाला के अक्षरों को कम किया गया। मंगल लोक की आज की भाषा आपकी उसी भाषा का अत्यन्त परिष्कृत रूप है।

हमारी भाषा की वर्णमाला में आज केवल दस अक्षर ही हैं। मैंने कल से आज तक आपकी भाषा को बोलने का कुछ अभ्यास किया और इसी का फल आज आपके सामने है।"

हम जोन की प्रतिभा के कायल हो गये। टोनी और डोनाल्ड अब तक चुप बैठे थे। उन्होंने जोन से कुछ कहा। जोन ने उसका अनुवाद करते हुए बताया—"मेरे ये साथी आपसे यह कह रहे हैं कि मंगल लोक की भाषा बहुत सरल है, इसको आप एक सप्ताह के अन्दर सीख सकते हैं। ये दोनों आपको भाषा सिखाने के लिए तैयार भी हैं। ये दोनों भी आज से आपकी भाषा को बोलने का अभ्यास आरम्भ कर रहे हैं।"

मदालसा बोली—"हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं है, हमें तो प्रसन्नता होगी कि हम आपकी भाषा को सीख कर उसे समझ और बोल सकें।"

"हम आप लोगों को आपके निवास स्थान पर ले चलने के लिए आए हैं", जोन ने कहा—"आप लोगों के रहने का पूरा प्रबन्ध हो चुका है। साधारणतया मंगल लोक के सभी महामानव और विशेषतः वनस्पति प्रदेश के सारे महामानव आपसे मिलने के लिए बड़े उत्सुक हैं। इस नगर के सभी स वर्गीय मानव आप के स्वागतार्थ एक महाभोज की तैयारी कर रहे हैं। हम तीनों को भी प्रधान महामानव निर्माता ने तीन मास का अवकाश स्वीकृत किया है। हम चाहते हैं कि हम लोग आपको अपने साथ लेकर मंगल लोक को पूरा घूम आएँ। आपका इस बारे में क्या विचार है?"

"हमे क्या आपत्ति हो सकती है, आपने हमे नया जीवन प्रदान किया है। आप इसका जिस तरह चाहे उपयोग कर सकते है" —मदालसा ने उल्लसित स्वर मे उत्तर दिया।

"हमने आप लोगो के एक सप्ताह का कार्यक्रम पहले से ही निश्चित कर लिया है। यदि आपको इसमे कोई आपत्ति न हो, तो उसे हम समाचार-पत्रो मे दे दें। वनस्पति प्रदेश के महामानव आपके बारे मे एक-एक बात जानना चाहते है। इसको दृष्टि मे रख कर हमने यह कार्यक्रम बनाया है। आपकी सुविधा के लिये मैं इसे आपकी ही भाषा मे टाइप करा लाया हूँ।" यह कह कर जोन ने एक बहुत सुन्दर और चिकने कागज को आगे बढा दिया। अशोक ने आज तक इस प्रकार का सुन्दर टाइप नही देखा था। हम तीनों कार्यक्रम पढने लगे। सातो दिनो मे नित्य ही रात को किसी न किसी स्थान पर भोज और सभा का आयोजन था। प्रात काल के कुछ घण्ट नगर देखने के लिए सुरक्षित थे, और दोपहर का समय इतिहास तथा भाषा सीखने के लिये था। अशोक कहने लगा—"हम आपके इस कार्यक्रम से सहमत हैं, पर यह तो बताइए कि यह इतिहास किस चीज का है?"

जोन ने कार्यक्रम छपे कागज को वापस लेते हुए कहा—"आधुनिक मगल लोक के बारे मे कुछ भी जानने से पूर्व यह बहुत आवश्यक है कि आप यह जान लें कि महामानवो के आने से पूर्व मगल लोक की क्या दशा थी। मगल लोक से परिचय प्राप्त करने के लिए यह भी जरूरी है कि आप लोगो को यह पता चल जाये कि महा-

मानवों ने कितनी तीव्र गति से मंगल लोक की काया पलट कर डाली है। यह हर्ष की बात है कि हमको मंगल लोक के इतिहास की एक प्रति आपकी भाषा में लिखी मिल गयी है। यह प्रदेशीय महामानव निर्माता के कौतुक भण्डार मे रखी हुई थी। उसको प्राप्त करने की हमने आज्ञा प्राप्त कर ली है। वह आपको कल तक मिल जाएगी।"

हम तीनों जोन की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे थे। हमें अब तक अपने चन्द्रलोक न जाने का काफी दुःख था। पर जोन की बातों ने हमारे दुःख को हलका कर दिया और हम मंगल लोक के विषय में तरह-तरह की कल्पना करने लगे। तभी टोनी और डोनाल्ड ने जोन से कुछ कहा, जिसे सुन कर जोन उठ खड़ा हुआ और हमसे बोला—"अब आप लोग हमारे साथ चलें। आज आपको जाकर अपने कमरे से परिचय करना है। हमारी गगन गाड़ियाँ स्वास्थ्य संवर्धन केन्द्र के ऊपर आपकी प्रतीक्षा में खड़ी हैं। आप लोग हमारे पीछे-पीछे आ जाएँ"—इतना कह कर जोन चल दिया। डोनाल्ड और टोनी भी उसके पीछे चल दिए। हम तीनों ने उनका अनुसरण किया। एक गलियारे में कुछ दूर चलने पर एक स्वतः चालित लिफ्ट मिली। हम सबने उसी में प्रवेश किया। लिफ्ट हमको बराबर ऊपर उठाती ले जाने लगी। जोन से पूछने पर पता चला कि यह भवन तीस मंजिला है। लिफ्ट में खड़े-खड़े ही जोन ने किसी को फोन किया। लिफ्ट से हम भवन की सबसे ऊपर वाली मंजिल पर आ गये। वहाँ पर हमने दो वायुयान जैसे वाहन देखे। किन्तु वे देखने में बड़े सुन्दर थे। उनका सम्पूर्ण ढाँचा काँच का बना हुआ था। कहीं-कहीं पर कोई धातु उपयोग में लाई गयी थी।

चे भूलोक के हैलीकॉप्टरो से कुछ-कुछ मिलते थे। मगल लोक के महामानव इनको ही गगन गाडी कहते थे। दो गगन गाडियाँ एक छत पर रखी हुई थी। दोनो मे हम तीन-तीन व्यक्ति बैठ गये। गगन गाडियो के अन्दर विश्राम और आमोद की सभी सामग्री उपस्थित थी। जोन ने अपनी गगन गाडी का एक बटन दबाया। गाडी घर्र-घर्र करने लगी और उसका स्वत चालित यान्त्रिक चालक[1] गगन गाडी को ऊपर उठाने लगा। हमारे लिए यह बिल्कुल नया अनुभव था।

[११]

गगन-गाडी आकाश मे ऊपर उठी और उडने लगी। हमे चारो ओर लाल रग के ही दर्शन हुए। तन्तु काँच के बने भवनो और वीथिकाओ पर सभी स्थानो पर रक्ताभ आभा छाई हुई थी। मगल के आकाश का रग भी लाल नजर आया।

अशोक को यह दृश्य देख कर अचानक पृथ्वी पर सायकाल के दृश्य का स्मरण हो आया। पर यहाँ के आकाशीय दृश्य मे उसे उतने सौन्दर्य की अनुभूति नही हुई।

अचानक गगन-गाडी एक तीस मजिली इमारत की छत पर आकर खडी हो गयी। जोन का अनुसरण करते हुए हम लिफ्ट की लिफ्ट तक आए। उसमे बैठ कर पाँचवी मजिल पर उतर पडे : एक गैलरी को पार करके हम ज्योही एक द्वार के सामने पहुँचे, त्योंही

[1] आटोमैटिक मेकेनिकल ड्राइवर।

द्वार पर लगे विस्तारक से हमें सुनाई पड़ा—"अतिथियों को लेकर जोन अन्दर चले आओ।"

हमारे विस्मय का ठिकाना न रहा। द्वार के बाहर कोई भी व्यक्ति नहीं था, फिर अन्दर के व्यक्ति को हमारे आने का पता कैसे चल गया। इससे भी अधिक अचरज तो हमें तब हुआ जब द्वार के पट स्वतः ही खुल गये। हमने जोन के साथ अन्दर प्रवेश किया और चारों ओर देखा, तो कमरा प्रकाश से जगमगा रहा था। छत, दीवार, खिड़कियाँ, द्वार के पट सभी से प्रकाश निकल रहा था। लगता था जैसे सम्पूर्ण कमरे मे हीरे जड़े हो और उन्ही से यह प्रकाश फूट-फूट कर निकल रहा है। कमरे मे कही भी हमे बिजली के तार दृष्टिगोचर नही हुए। खिड़कियों के पारदर्शक काँच तो और भी अधिक आकर्षक लग रहे थे, क्योकि उनसे रग बिरगे प्रकाश निकल रहे थे। उनका कोई भाग हरा प्रकाश दे रहा था तो कोई पीला; कोई नीला प्रकाश मुक्त कर रहा था तो कोई लाल। मदालसा अपने कौतूहल को न रोक सकी। वह पूछ ही बैठी, "यह मकान है या कोई तिलिस्मी घर।"

जोन ने थोड़ा मुस्करा कर उत्तर दिया, "घबराइए नहीं, आपको धीरे-धीरे सब कुछ ज्ञात हो जायगा। थोड़ा विश्राम कर लीजिए। उसके पश्चात बातें होंगी। पर विश्राम से पूर्व एक बार इस निवास स्थान से परिचय प्राप्त कर लीजिए ताकि आपको इसका उपयोग करने में सुविधा रहे।"

और यह कह कर जोन ने दीवार पर लगे एक बटन को दबा दिया। दीवार का कुछ भाग घर्र घर्र करता हुआ न जाने कहाँ लुप्त हो गया और उसके स्थान पर एक आलमारी का पल्ला खुल कर नीचे गिर पड़ा। "इनमें आपकी आवश्यकता की सभी सामग्री रखी हुई हैं। आप जो चाहें उपयोग में ला सकते हैं।"

जोन ने बटन को पुनः पूर्व दिशा की उल्टी ओर घुमा दिया। दीवार का लुप्त भाग पुनः यथास्थान पर आ गया। इसके पश्चात वह हम कमरे में पड़े पलंग के निकट लिवा ले लिया। पलंग के ठीक सामने दीवार पर जड़े हुए चित्र के समान एक प्लास्टिक का पट लगा हुआ था। ठीक वैसा ही पलंग पट के ऊपर छत में लगा था। जोन ने पलंग के पास दीवार में लगे दो बटनों में से एक को घुमा दिया। दीवार पर लगे पट पर कमरे के द्वार का चित्र स्पष्ट दिखाई देने लगा। अब हम समझे कि अन्दर के व्यक्ति ने इसी पट की सहायता से कमरे में बैठे बैठे ही हमें द्वार पर खड़े देख लिया था। पर वह स्वयं वहीं अन्तर्ध्यान हो गया।

जोन ने अब की बार दूसरे बटन को दबा दिया। छत पर लगे पट पर मंगल लोक का कोई चलचित्र आने लगा। जोन हमारी ओर उन्मुख होकर बोला—"इन दोनों पटों की सहायता से आप अपना मनोरंजन कर सकते हैं।"

पलंग के इधर उधर पर्याप्त रिक्त स्थान था। उसमें कुछ दूर हट कर एक बड़ी मेज और विचित्र आकार की कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। दूसरी ओर ठीक सामने काँच तन्तु के बने दो जाली खाने पड़े हुए

थे, जिन पर विचित्र रंगों का वस्त्र-सा पदार्थ चढ़ा हुआ था। मेज पर तीन चार यन्त्र रखे हुए थे। दो यन्त्र तो हमारे जेबी रेडियो प्रेषक और संग्राहक जैसे ही थे। एक टेलीफून जैसा था। पर जोन से ज्ञात हुआ कि इसको मंगल लोक में टेलीविजो फून कहते हैं। यह स्वय चालित है। इसको केवल आदेश देने से मगल लोक के किसी भी महामानव से बातें की जा सकती हैं। इस पर बात करते समय उस व्यक्ति का चित्र भी इसके डायल के साथ लगे पट पर आकर अंकित होता रहता है जिसके साथ बातें की जा रही हैं।

जोन से यह भी ज्ञात हुआ कि मेज के निकट जो यन्त्र रखा हुआ है वह यान्त्रिक मानव है। कमरे के प्रहरी का यही कार्य करता है। इसका विद्युत-नेत्र प्रत्येक व्यक्ति, जीव, अथवा वस्तु को कमरे में प्रवेश करने से पूर्व एक चेतावनी देता है। इससे निरन्तर प्रकाश और ध्वनि-तरंगें निकलती रहती हैं। जब जिस प्रकार की आवश्यकता होती है वैसा ही यह उत्तर देता है और साथ ही द्वार को खोलने का कार्य भी यह करता है।

अब हमें ज्ञात हुआ कि यह यान्त्रिक मानव ही था जिसने हम को कमरे में प्रवेश करने की आज्ञा दी थी। जोन से यह भी ज्ञात हुआ कि मेज पर लगे दो बटनों को घुमाने से कमरे को इच्छानुसार गर्म या शीतल बनाया जा सकता है।

पलंग के निकट ही छत से एक अलमारी लटक रही थी। जोन ने दीवार में लगा एक और बटन दबाया कि अलमारी खिसक कर फर्श पर आ लगी। उसके पल्ले स्वतः ही खुल गये। अलमारी क्या

क्रीम की थी। एक बटन दबाने पर और मुख को उनके सामने करने पर अपने आप ही इच्छित पाउडर और क्रीम की इच्छानुसार मोटी या पतली तह पुत जाती थी और पता नहीं क्या क्या पदार्थ वहाँ रखे हुए थे। बनाव शृंगार की इस विविधता को देखकर मदालसा मन ही मन प्रसन्न हो उठी किन्तु अशोक का मन चकरा गया। उसने जोन से कहा—"कृपया बाहर चल कर कुछ देर के लिए बैठ जायें। उसके बाद आप शेष वस्तुओं के विषय में बताइयेगा।"

जोन ने अनुभव किया कि वह अपने अतिथियों का काफी समय ले चुका है। उसने उनसे इसके लिये क्षमा माँगी और हम तीनों जोन के साथ पुनः कमरे में आ गये।

कमरे में आये तो हमने देखा कि कमरे के एक कोने में भी भीना-भीना लाल प्रकाश निकल रहा है। मदालसा जोन से पूछ बैठी—"हमने यहाँ पर सभी स्थानों में लाल प्रकाश देखा है। हमारे भूलोक में तो रात को जब चन्द्रमा निकलता है सारा धरातल स्निग्ध स्वच्छ चाँदनी से छिटक जाता है। जब चाँद नहीं निकलता तो रात्रि में चारों ओर काला-काला भयानक अँधियारा छाया रहता है। यहाँ पर क्या चन्द्रमा लाल रंग का प्रकाश देता है?"

जोन मदालसा की बातों पर मुस्कराता हुआ बोला—"नहीं मदालसा जी, यह बात नहीं है। जैसा कि मंगल लोक के इतिहास से पता चलेगा, मंगल लोक पर पहले केवल सूर्य का प्रकाश ही आता था। किन्तु जब से इसको महामानवों ने आबाद किया है तब से उन्होंने अपना एक कृत्रिम चन्द्रमा भी बना लिया है।"

अशोक आश्चर्य चकित हो गया, उसके मुह से अनायास ही निकल पडा "भला यह कैसे सम्भव हो सकता है।"

"अशोक जी यहाँ पर सभी कुछ सम्भव है। असम्भव कुछ भी नहीं। मगल का यह कृत्रिम चन्द्रमा तो पिछले चार सौ वर्षों से प्रत्यक्ष रूप से इसी प्रकार प्रकाश दे रहा है। गगन गाडी मे आते समय जो चाँद आपने आकाश मे निकला देखा था वह कृत्रिम चाँद ही था।"

इसके बाद वह कहने लगा—"रात्री मे एक और भी गोला आपने आकाश मे देखा होगा, यह गोला पृथ्वी लोक ही है। कल प्रात काल आप लिफ्ट के द्वारा भवन की सब से ऊपर की छत पर चले जाइयेगा तो आप को सूर्य निकलता दिखाई पडेगा। मगल लोक के कृत्रिम वायु मडल मे सूर्य प्रकाश का भी अधिक तेज कर लिया जाता है, और रात्री मे सूर्य प्रकाश के अभाव मे इसी कृत्रिम चन्द्रमा से काम लिया जाता है। इस से निकले प्रकाश की लगभग वही रचना है जो सूर्य प्रकाश की है। किन्तु जब कभी प्रधान महामानव निर्माता चाहते हैं, कृत्रिम चन्द्रमा के प्रकाश को बदल देते हैं। कभी कभी रात्रि मे हमारा आकाश पीले रग से भर जाता है और कभी वह बासनी हो जाता है। यह भी मैं आपको बता दूँ कि सूर्य निकले या न निकले, भवनों मे प्रकाश बराबर बना ही रहता है। सैलीनियम के कण और गुप्त विद्युत-धारा की सहायता से भवनो के प्रत्येक कमरे से, दिन हो या रात, प्रकाश बराबर फूटता रहता है।"

"यह सब कैसे सम्भव है ? अनीता जो अब तक एक टक जोन की बात सुन रही थी, अचानक बोली ।

"यह इसलिये सम्भव है क्योंकि हम लोग एक कृत्रिम वायुमंडल में रहते हैं। आज आपने जो आकाश देखा था वह भी कृत्रिम ही है और वह केवल यहाँ से १० मील की ऊँचाई तक ही है। उसके बाहर मंगल लोक का भयानक दृश्य दिखाई पड़ता है। यह सारा कृत्रिम आकाश एक प्रकार के प्लास्टिक पदार्थों से बनाया गया है और वायुमंडल उत्पन्न करने के लिए भूमि में उपस्थित नाइट्रेट से आक्सीजन प्राप्त की गई है। वायुमण्डल में विभिन्न गैसों का अनुपात इस तरह रखा गया है कि जिससे कृत्रिम आकाश पर वाह्य वायु का दवाव बराबर अधिक बना रहे और कृत्रिम आकाश इधर उधर नहीं जावे।"

"क्या हम लोगों को मंगल लोक के वास्तविक वायुमंडल का दृश्य देखने को मिल सकता है ?" अशोक ने जोन से पूछा ।

"इसके लिये तो मंगल लोक के प्रधान महामानव निर्माता का आदेश प्राप्त करना होता है।" जोन ने कहा ।

अचानक तभी कमरे में द्वार के पास लगे यान्त्रिक-मानव में एक लाल रंग की बत्ती जल उठी। जोन बोला—"अन्दर आ सकते हो"। उसके बोलते ही बत्ती का रंग हरा हो गया और द्वार स्वतः खुल गया। टोनी ने आकर जोन से न जाने क्या कहा कि जोन ने हमसे रात भर के लिये विदा ली और टोनी के साथ बाहर चला गया ।

से आप इस कमरे में आये हैं। उन सब बातों का आँखों देखा हाल भी प्रसारित किया जा रहा है।

अशोक ने कहा, "यह सब कैसे सम्भव है ?"

इसका कारण यह है कि आपके कमरे का सम्बन्ध वनस्पति प्रदेश के चलचित्र विभाग से स्थापित कर दिया गया है और उसने आपकी गतिविधियों को महामानवों के सभी चलचित्र पटों से सम्बन्धित कर दिया है।

"रडार द्वारा चालित संग्राहक पट पर आपकी गतिविधियों के चित्र आ रहे हैं और वहां से ये प्रत्येक कमरे में लगे चलचित्र पटों पर आ रहे हैं।"

हम सभी विस्मित थे। इसके अर्थ तो यह हुआ कि मंगल ग्रह में हम कोई भी काम ऐसा नहीं कर सकते थे जिसको वहां के निवासी न जान सकें।

जोन अपने साथ मंगल लोक का इतिहास भी लाया था। उसको देते हुए उसने कहा, "इससे महामानव समाज के बारे में आपको काफी पता चल जायगा।"

जोन के जाते ही अशोक ने मंगल लोक का इतिहास पढ़ना शुरू किया। मदालसा और अनीता भी उसको ध्यान से सुनने लगीं।

[१३]

अनेक शताब्दियों से पृथ्वी लोक के निवासी मंगल लोक के प्रति विशेष रूप से जिज्ञासु रहे हैं। दूरवीक्षण यंत्र के आविष्कार

ने वैज्ञानिकों का ध्यान मगल ग्रह की ओर आकर्षित किया था। ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाताओं का कथन था कि मगल लोक में जीवधारियों का रहना असम्भव है।"

"मगल पृथ्वी की अपेक्षा सूर्य से अधिक दूर है और इसी कारण यहाँ पर शीत अधिक पड़ती है। यन्त्रों से ज्ञात हुआ है कि यहाँ के धरातल पर दिन में तापमान बर्फ जमने के ताप से १०° अधिक रहता है और इसका मुख्य कारण यह है कि मगल सूर्य की परिक्रमा ६८७ दिन में पूरी करता है। पृथ्वी लोक सूर्य की परिक्रमा ३६५ दिन में पूरी करता है इसीलिए पृथ्वी पर ३६५ दिन का एक वर्ष होता है। मगल लोक में एक वर्ष में ६८७ दिन होते है।"

अनीता बीच में ही बोल उठी "जब हम लोग आरोहण प्रशिक्षणशाला में थे तो हमको भी मगल लोक का कुछ ज्ञान कराया गया था। उसमें और इस इतिहास में दिये गये तथ्यों में मुझे कोई विशेष अन्तर नहीं जान पड़ता।"

'अशोक जी को पढ़ने दीजिये। मैं तो वह सब कुछ भूल गई। जब हमको मगल लोक में ही रहना है तो हमें मगल लोक के इतिहास का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिये। आप आगे पढ़िये।" मदालसा ने जैसे अनीता की अवहेलना करते हुए कहा।

अशोक ने आगे पढ़ना आरम्भ किया, "ईसा की २० वीं शताब्दी में हिमलर नाम का एक बड़ा वैज्ञानिक पृथ्वी लोक के यूरोप महाद्वीप में हुआ। जो भी उसके सम्पर्क में आया उसी ने उसकी प्रतिभा का लोहा माना, पर पृथ्वी लोक के तथाकथित प्रथम श्रेणी

के वैज्ञानिकों को उसके नित नये आविष्कार और उसकी बढ़ती हुई ख्याति बुरी लगी। उन्होंने हिमलर के सभी आविष्कारों को गलत और बेकार कह कर बदनाम कर दिया। उसने जितनी भी गवेषणायें की उन सबको पृथ्वी के इस वैज्ञानिको ने कोई महत्व नहीं दिया। पृथ्वी पर उस समय वैज्ञानिकों के एक विशेष गुट का बोल बाला था, किन्तु वे हिमलर से कम प्रतिभावान थे। हिमलर ने प्रथम बार प्रयोगशाला में काँच की बोतलों में रसायनिक-भौतिक विधियाँ अपनाकर मानव गर्भ को उत्पन्न किया था और उसको एक माह तक जीवित रखा था। किन्तु वैज्ञानिकों ने उसकी इस खोज को गम्भीरतापूर्वक न लेकर हँसी में उड़ा दिया। वह जानता था कि एक न एक दिन वैज्ञानिको का वही गुट इस खोज को अपनी बताकर पृथ्वी पर प्रसिद्धी प्राप्त कर लेगा, और वह कुछ भी न कर सकेगा। उसे इस प्रकार के अनाचार का व्यवहारिक अनुभव था। इस गुट की इस प्रकार की धोखा देने की अनेक घटनायें उसने अनेक प्रतिभावन युवक वैज्ञानिकों के साथ होती स्वयं देखी थी। काम किसी ने किया, नाम किसी और का हुआ। कोई नई गवेषणा किसी कम प्रसिद्ध किन्तु प्रतिभाशाली युवक ने की। किन्तु उस अनुसंधान के लिये किसी और वैज्ञानिक को यश मिला। उसने यह भी देखा था कि अनेक युवक वैज्ञानिकों को केवल इसलिए मार डाला गया क्योंकि वे कुछ साधन सम्पन्न सामर्थ्यवान वैज्ञानिको से कुछ समय पूर्व ही उन्हीं बातो की खोज कर चुके थे जिन पर ये वैज्ञानिक काम कर रहे थे, और जिसमें उनको उस समय तक सफलता नहीं मिली थी। ऐसे लोग इन युवक वैज्ञा-

निको के गवेषणा कार्य को अपना बता कर आज वैज्ञानिक बन बैठे थे। इसी कारण अनेक युवक वैज्ञानिकों को योरोप से लुप्त कर दिया गया और उनका क्या हुआ यह आज तक पता नहीं है। उनके द्वारा हुए अनुसधान उक्त गुट के किसी वैज्ञानिक के नाम से पुकारे जाने लगे।

"हिमलर को भी वही भय था। उसने अनेक ऐसे युवक वैज्ञानिकों से अपना सपर्क स्थापित कर लिया जो उसी की तरह सत्ताधीश वैज्ञानिको के गुट से परेशान थे। उन सबको अपना जीवन सदैव सकट मे दिखाई पडता था। इसी बीच म हिमलर रसायनिक भौतिक विधि द्वारा प्रयोगशाला म कोनलो से मानव शिशु पैदा करने मे सफल हो गया। उसने अपनी यह खोज अपने साथी वैज्ञानिको को बताई। सभी उसकी इस क्रान्तिकारी खोज से बडे प्रभावित हुए जो विश्व की वर्तमान रचना मे मौलिक परिवर्तन कर सकती थी। इसलिये सभी साथियो ने उसके नेतृत्व को एक स्वर से स्वीकार कर लिया।"

"यह तो बडी रोचक होती जारही है अशोक जी"। मदालसा ने कहा।

"हाँ लगता तो कुछ ऐसा ही है।" अशोक ने उत्तर देकर आगे पढना आरम्भ किया। "एक दिन हिमलर की प्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञ हैल्म होल्टस से अचानक भेंट हो गई। उसने मगल लोक के विषय मे स्वय अपना एक मत भी प्रतिपादित किया था। उसके बारे मे उसने हिमलर को बताया।

इसके बाद हैल्म होल्टस ने हिमलर को अपना मत बताया जो उसने मंगल लोक के विषय में स्वयं बनाया था। वह कहने लगा, 'मेरे मत के अनुसार मंगल लोक पर मानव जाकर रह सकते हैं। सौर मण्डल के सभी ग्रहों में केवल मंगल पर ही वायु मण्डल है। यद्यपि यह वायु मण्डल पर्याप्त हल्का और छिछला है पर बहुत व्यापक है और इसे मानव अपने अनुरूप बना सकते हैं। वहाँ पर पानी की कमी है, किन्तु हिम को गला कर उस कमी को पूरा किया जा सकता है। वहाँ पर ऑक्सीजन नही पाई जाती लेकिन उसकी धरती में सिल्कन और लोह ऑक्साइड के रूप में अत्यधिक मात्रा में ऑक्सीसन जमा है। वहाँ के रेत मे यह लोह ऑक्साइड बहुत अधिक पाई जाती है। लोह ऑक्साइड का रग लाल होता है, इसलिये हमें मंगल का रंग भी लाल दिखाई पड़ता है। पृथ्वी लोक पर वृक्ष, क्लोरोफिल की सहायता से जिस प्रकार वायुमण्डल की कार्बन डाइ ऑक्साइड से ऑक्सीजन निर्माण करते हैं उसी प्रकार मंगल लोक में ऑक्सीजन बनाई जा सकती है। रेत में मिली लोह ऑक्साइड से भी ऑक्सीजन अत्यधिक मात्रा में अलग की जा सकती है।'

हिमलर ने हैल्महोल्टज की बातें सुनीं तो उसको अपनी चिर-संचित अभिलाषा पूर्ण होती दिखाई दी। वह जानता था कि उसको और उसके दूसरे युवक वैज्ञानिक साथियों को सत्ताधीश वैज्ञानिकों का गुट एक एक करके नष्ट कर देगा। इसलिये वह वर्षों से पृथ्वी लोक को छोड़ कर कहीं अन्यत्र जाना चाहता था। हैल्म होल्टज की खोज ने दूरदर्शी हिमलर को नई सूझ प्रदान की और उसने पृथ्वी लोक

के उन सभी युवक वैज्ञानिकों की एक गुप्त सभा बुलाई जिनको वैज्ञानिको का सत्ताधीश दल किसी न किसी तरह शोषण कर रहा था। उसने मगल लोक को आबाद करने की योजना सबके सामने रखी। उसने कहा—"मित्रो-आज मैंने आप सबको एक महत्वपूर्ण मन्त्रणा के लिये आमन्त्रित किया है। जैसा कि आप सभी जानते हैं मेरी क्रान्तिकारी गवेषणा सफल हो चुकी है। इसके परिणाम मानव समाज को पूर्ण रूप से बदल देंगे। अब तक मानव एक जैविक प्राणी था क्योंकि वह जैविक प्रक्रियाओ से उत्पन्न होता था और उन्हीं के कारण उसका सवर्धन होता था पर अब भौतिक रसायनिक विधि का अपना कर हमने बोतलो से मानव शिशु को उत्पन्न कर लिया है। इससे आज तक मानव के जो दो पहलू थे और जिनमे परस्पर सघर्ष होने के कारण वह बराबर ही असतुलित रहता था वह समाप्त हो गया है। विकास की दृष्टि से हम एक नवीन अध्याय आरम्भ कर रहे हैं जिसमे एक नवीन जीव जाति का हम यन्त्र कौशल की सहायता से जन्म देंगे। अब तक विकास के सम्पूर्ण इतिहास मे यह अभिनव प्रयोग है। जैविक क्रियाओं के ऊपर यन्त्र-कौशल की, प्रकृति के ऊपर मानव की विजय है। महामानव को उत्पन्न करने की, मानवों को देवताओ के गुण प्रदान करने वाली कल्पना आज साकार हो उठी है। पर इस अभिनव समाज को बनाने के मार्ग मे आज के सत्ताधारी वैज्ञानिक सबसे अधिक बाधक है। उनके कारण हम युवक वैज्ञानिको का अस्तित्व ही सकट मे पड गया है। ऐसी दशा मे मेरे मित्र हेल्म होल्टज ने अपने निरीक्षण और परीक्षण से एक ऐसा स्थान खोज निकाला है जहाँ

हम निरापद रह कर अपने आविष्कारों का मन चाहा विकास कर सकते हैं। और वह स्थान है मंगल ग्रह। हम जानते हैं कि वहाँ तक पहुँचने में मार्ग में अनेक व्यवधान आयेंगे। सम्भव है इस अभियान में हम सबको अपने जीवन से ही हाथ धोना पड़े। पर अज्ञात की खोज के लिये हमारे से पहले के वैज्ञानिकों के आत्म बलिदान और त्याग के अनेक उज्ज्वल उदाहरण हैं। उनकी इस परम्परा को निभाने में कौन गर्व अनुभव न करेगा। हम यह भी मान सकते हैं कि हेल्म होल्टज के मत हमारे लिये अनुकूल सिद्ध न हों किन्तु पृथ्वी लोक मे भी तो हमारे जीवन का कोई भरोसा नही। किसी भी क्षण हमारी हत्या की जा सकती है अथवा हमें गुप्त रूप से उड़ा कर सदैव के लिए लुप्त किया जा सकता है। ऐसी दशा में मेरा मत तो यही है कि हमें इस भारी और भयानक अभियान का आमन्त्रण स्वीकार कर लेना चाहिये क्योंकि यदि इस प्रयत्न में हम मर भी जाते है तो भी यह मृत्यु इन अनाचारी वैज्ञानिकों के हाथों कुत्ते जैसी मृत्यु प्राप्त करने से कहीं अधिक पवित्र होगी और अपने पूर्वज वैज्ञानिक बन्धुओं की परम्परा पर मर मिटने में हमे अत्यधिक गर्व होगा। इसलिये मित्रो, मैं इस पवित्र कर्त्तव्य के लिये आपका आवाहन करता हूँ।"

हिमलर ने अपनी बात इतने प्रभावशाली ढंग से कही थी कि लगभग सभी उपस्थित वैज्ञानिकों के हृदय में उसकी बातें जम कर बैठ गईं और उपस्थित सभी व्यक्ति मंगल लोक पर चलने के लिये तैयार हो गये। प्रश्न यह था कि मंगल लोक में जाने के लिये कौन सा वाहन उपयोग में लाया जाय। इस प्रश्न का भी समाधान हो गया जब एक रूसी वैज्ञानिक बैलेस्टोटस्की ने बताया कि वह मंगल

वह बराबर विचारों में डूबा रहा। अनीता और मदालसा संग्राहक पटल पर रडार चालित चलचित्रों को देखती रहीं। जब जोन ने कमरे में प्रवेश किया तो भी अशोक अपने पलंग पर पड़ा विचार-मग्न था। जोन ने आकर जब उसको आज रात सहभोज मे चलने की बात स्मरण कराई तो उसको अपने कर्त्तव्य का भान हुआ। वे तीनों जोन के साथ सहभोज के लिये तैयार होने लगे।

[१४]

अशोक के मस्तिष्क में अभी तक भी महामानव सभ्यता का इतिहास ही चक्कर काट रहा था। उसने मंगल लोक में जो कुछ अब तक देखा था, उससे यह निष्कर्ष तो निकाल ही लिया था कि महामानवों की यह सभ्यता पूर्ण रूप से विकसित यन्त्र कौशल के ऊपर टिकी हुई है। मानवता के जिस संदेश को लेकर वह चन्द्रलोक जा रहा था उसको प्रसारित करने की उसको यहाँ अधिक आवश्यकता दिखाई पड़ी। सहभोज में जाने से उसको यहाँ के व्यक्तियों के मत जानने का उचित अवसर लगा।

तभी जोन, टोनी और डोनाल्ड अशोक के कमरे में आये। वे इस समय बहुत ही सुन्दर वस्त्र पहने हुये थे। मदालसा बहुत देर की तैयार बैठी हुई थी। अशोक और अनीता गुसलखाने में अभी-अभी गये थे।

टोनी मदालसा के पास जाकर बैठ गया और बोला—"आज रात को क्या आप मेरे साथ नृत्य करने का निमन्त्रण स्वीकार कर मुझे अनुगृहीत करेंगी ?"

मदालसा तो ऐसे अवसर की प्रतीक्षा मे ही थी, पर वह स्वय पहल करना अनुचित समझती थी। इसलिये उसने टोनी का निमन्त्रण तुरन्त ही सहर्ष स्वीकार कर लिया। जोन और डोनाल्ड को टोनी के भाग्य पर ईर्षा हुई। अनीता और अशोक अब तक गुसलखाने से बाहर आ चुके थे।

आज रात को नगर के सभी स वर्गीय महामानवो ने हमारे सम्मान मे एक सामुदायिक कार्यक्रम और भोज आयोजित किया था। उसी के लिये हम चल दिये। गगन गाडियो से हम जिस भवन की छत पर उतरे वह ५० मजिल का था। स वर्गीय महामानवो के आमोद प्रमोद और मनोरजन के लिये इसका उपयोग होता था। आज नगर के सभी स वर्गीय महामानव वहाँ उपस्थित थे। हम लोग भवन के हॉल मे पहुँचे तो सभी लोग उठ खड हुए। जोन हमको हॉल के मच पर ले गया। चारो ओर शान्ति छा गई। उसने वहाँ उपस्थित सभी महामानव और महामानवीयो से हमारा परिचय करवाया। इसके बाद सामुदायिक भोज आरम्भ हो गया।

भोज चलते समय भी मच के सग्राहक पट पर एक चलचित्र दिखाया जा रहा था। अशोक को लगा कि यह तो उसी के आगे का प्रसग मालूम होता है, जहाँ उसने महामानव सभ्यता का इतिहास पढ़ना छोडा था। कथानक कुछ इस प्रकार था—लगभग सौ व्यक्ति धरातल से दस आकाश पोतो द्वारा आकाश की ओर उडे और उडते ही चले गये। चन्द्रमा एक ओर रह गया फिर भी उनका आकाश पोत बराबर आगे बढता जा रहा था। अचानक वे एक

ग्रह के निकट पहुँच गये। उसका उन्होंने निरीक्षण किया तो पाया कि वह अभी तक सुनसान पड़ा हुआ है। उस उजड़े ग्रह पर ही उन्होंने अपने आकाश पोत उतार दिये। वहाँ के जलवायु, ताप और दाब ने उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालना आरम्भ किया। इसलिये उन्होंने एक कृत्रिम वातावरण और वायुमण्डल का निर्माण किया। ग्रह पर पानी का नितान्त अभाव था उसके लिये उन्होंने जमे हुए हिम को तापवर्द्धन विधि द्वारा पिघलाया। उसको सम्पूर्ण ग्रह पर पहुँचाने के लिये नहरें निकालीं। आक्सीजन की भी वायु मण्डल मे कमी थी। उसकी कमी को धरातल के सयुक्तों से पूरा किया। चलचित्र यहीं पर समाप्त हो गया था।

इसके पश्चात् हाल के एक कोने से विचित्र प्रकार के संगीत की ध्वनि आने लगी। यह सगीत किसी यन्त्र से निकल रहा था। जोन से पूछने पर पता चला कि यहाँ पर किसी भी महामानव के पास सगीत आदि सीखने के लिए विशेष समय नही रहता और न महामानव निर्माता इसको पसन्द ही करते हैं। फिर भी महामानवों को सगीत सुनने में अत्यधिक रुचि है। इसीलिए सगीत के स्वरों को कृत्रिम रूप से इस प्रकार मिलाया जाता है जिससे अपने आप यान्त्रिक संगीतज्ञों के मुख से सगीत निकलने लगता है। यह एक यान्त्रिक संगीतज्ञ ही गा रहा है। भोज के बाद सोमवटी दी गयी। मदालसा ने सोमवटी को चखा, किन्तु अनीता और अशोक ने उसको नहीं खाया।

इसके बाद स वर्गीय महामानवों की मनोरंजन सभा के प्रधान मंच पर आये। उन्होंने अपनी भाषा में कुछ कहा, जिसका अनुवाद

करके जोन ने हमें बताया कि वे स वर्गीय महामानवो की ओर से आपका स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि आप बर्बर भू-लोक की बर्बरता के विषय मे कुछ प्रकाश डालेंगे। इसके बाद वह महामानव अपनी जगह जाकर बैठ गया।

अशोक को पृथ्वी के बारे मे इस प्रकार का सम्बोधन सुन कर बड़ा क्षोभ हुआ, किन्तु फिर भी वह अपने को सम्भालता हुआ सयमित स्वर मे बोला—"मगल लोक के आदरणीय महामानव और महामानवीयो, आप सभी ऊँचे वैज्ञानिक हैं और विकासवाद के सिद्धान्त से भली प्रकार परिचित हैं। इस नियम के अनुसार किसी विशेष जीव जाति के लिए जीवित बना रहना कोई खेल नही है। एक ओर अग्नि परीक्षायें और सघर्ष है तो दूसरी ओर विजय और प्रगति। जो जीव जाति इस बदलते हुए वातावरण से समझौता करने की प्रतिभा रखती है वही इस खेल मे विजयी होती है। जिस जाति के स्थिति अनुकूलन अवयव प्रत्येक दशा मे सक्रिय रहते हैं, वे ही इस ब्रह्माण्ड मे जीवित रह सकती हैं, और ऐसा वे ही जीव-जातियाँ कर सकती हैं, जिनकी रचना साधारण हो, जिनके जीवन का लक्ष्य सामान्यीकरण हो, विशेषीकरण नही। किन्तु जो जीव जातियाँ किसी विशेष प्रकार के वातावरण मे रहने की आदत बना लेती हैं, उस वातावरण मे खपा लेने के कारण उनका अन्य वातावरण मे रहना असम्भव हो जाता है। एक वातावरण पर पूर्ण रूप मे आश्रित होने और किसी एक विशेषता को बढाते-बढाते अति की सीमा उल्लघन कर जाने के कारण अनेक जीव जातियाँ नष्ट हो चुकी हैं।"

अचानक ही बीच में ही भौतिक विज्ञ श्री बोस बोल उठे—"यह भू-लोक का बर्बर ठीक ही कह रहा है।"

अशोक पुनः अपनी उत्तेजना को रोकते हुए बोले—"मैं कहता हूँ ठीक उसी दशा में आज आपका महामानव समाज है। अधिक से अधिक सुविधायें और विलास तथा कम से कम श्रम और पराक्रम महामानव सभ्यता के आदर्श ज्ञात होते हैं। यन्त्र कौशल की सहायता से महामानव ने स्वनिर्मित कृत्रिम परिस्थितियों के बीच अपने लिए एक आदर्श-सा स्वर्ग स्थापित कर लिया है। पर जिस यन्त्र कौशल को महामानव ने जन्म दिया है, अपने हाथों पाला पोसा है, आज वही उसको खाने के लिए अग्रसर हो रहा है। अपने दुर्दान्त-चक्रों में वह महामानव की पवित्रता और सत्ता दोनों को ही पीस डालने की चेष्टा में है। एक ओर यह मशीन महामानव को पशु बनाने के लिए खुराक जुटा रही है तो दूसरी ओर उसकी अन्तर आत्मा की उज्ज्वलता को, उसकी सम्वेदना को नष्ट कर चुकी है। यन्त्र कौशल ने महामानव के हाथ में शक्ति नही दी है, शक्तियों के हाथ में महामानव को सौंप दिया है और आज यही शक्तियाँ महामानव को खाती-सी जान पड़ती हैं।"

अशोक पुनः रुक कर बोला—"और इससे बचने का एक मात्र यही उपाय अब महामानव के पास रह गया है कि वह नये-पुराने सभी मूल्यों में परिवर्तन करे और यथार्थ आवश्यकताओं के अनुकूल जीवन और समाज का निर्माण करे।"

इतना कह कर अशोक अपने स्थान पर बैठ गये। जोन ने अशोक के भाषण का मंगल भाषा में अनुवाद करके सबको सुनाया।

बहुत कम महामानव अशोक की बातों को समझ सके। फिर भी सभी ने औपचारिक शिष्टता निभाने के लिए तालियाँ बजाई। महामानव समूह में से तीन चार व्यक्ति, जिन पर अशोक की बातों का कुछ प्रभाव पड़ा था, आगे बढ़ कर अशोक के पास आये। जोन ने उन सभी का परिचय एक-एक करके अशोक से करवाया "ये मनोवैज्ञानिक विशारद श्री भावानन्द हैं। ये पूर्व भाग्य-रचियता श्री अविनाश हैं और ये भौतिक विज्ञ श्री अरुण हैं। इनका कहना है कि वे आपकी बातों को पसन्द करते हैं।'

अशोक को यह जान कर प्रसन्नता हुई कि कम से कम कुछ महामानव तो उनकी बातों को समझे हैं। जोन ने बताया कि ये तीनों व्यक्ति कभी भी सामवटी का उपयोग नहीं करते। वे सर्दैव हैं कुछ न कुछ सोचते रहते हैं। कुछ गिने चुने लोगों से ही ये मिलना पसन्द करते हैं।

अनीता से अनेक वर्गीय महामानवों ने परिचय करना चाहा, किन्तु उसने किसी से विशेष बातें नहीं कीं। नीलिमा, कुमुदनी, मारगरेट, ऐनी और मैरी महामानवियों ने भी अशोक से परिचय प्राप्त किया। मदालसा ने डिम्बोत्पक प्रयोगशाला के कुछ महामानवों, कृत्रिम रक्त निर्माण मिल के कुछ कर्मियों और कृत्रिम आकाश के कारखाने में काम करने वाले कुछ कर्मचारियों का परिचय कराया गया। उन सबने उनको निशा निमन्त्रण दिया, और उसने सभी का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। इसके बाद नृत्य होना आरम्भ हुआ। अशोक और अनीता को नृत्य में कोई रुचि नहीं थी। उन्होंने जोन से वापिस कमरे पर चलने के लिए कहा। अब जोन अशोक और

अनीता को लेकर चुपचाप हाल से बाहर निकले। वे तीनों गगन गाड़ी पर सवार होकर वापिस अपने कमरे में आ गये।

[१५]

सभी स वर्गीय महामानव इस बात से अत्याधिक चकित हुए कि अशोक और अनीता जोन के साथ समारोह को बीच ही में से छोड़कर चले गये। आज के इस समारोह के लिए महामानवों ने पूर्व निश्चित कुछ बड़ी-बडी योजनायें बना रखी थीं। उनको अनीता और मदालसा से बड़ी-बडी आशायें थीं। किन्तु अनीता के इस प्रकार चले जाने पर उनकी कामनाओं पर जैसे पानी फिर गया। महामानवियों ने भी इस अवसर के लिए विशेष आयोजन किया था। नीलिमा, कुमुदनी, मारगरेट, ऐनी और मैरी ने आज विशेष बनाव और श्रृङ्गार किया था। उनका मेक-अप सभी को आकर्षित कर रहा था। आज वे निश्चय कर चुकी थीं कि जैसे भी हो अशोक से परिचय अवश्य प्राप्त करेंगी। वस्तुस्थिति तो यह थी कि मंगल लोक की जिस नारी ने भी अशोक को देख लिया था, वही उसके निकट सम्पर्क मे आने की लालसा लेकर इस सहभोज मे आई थी। पर जब अशोक बिना किसी से बोले चुपचाप नृत्य-समारोह को छोड़ कर चला गया तो सबकी आशा पर भारी तुषारापात हुआ।

आज सबको टोनी और डोनाल्ड के भाग्य पर ईर्षा हो रही थी, जो बारी-बारी से मदालसा के साथ नृत्य करने में तल्लीन थे। सभी महामानव ललचाई और आशाभरी दृष्टि से मदालसा की ओर देख रहे थे कि वह उनको भी सह-नृत्य के लिए आमन्त्रित करे, पर मदा-

लसा टोनी और डोनाल्ड के साथ नृत्य करने में इतनी तल्लीन थी कि उसको अपने चारों ओर देखने का भी अवसर नहीं था। अब तक टोनी और डानाल्ड को सभी महामानव मूर्ख समझने लगे थे। उनके विषय में सम्पूर्ण वनस्पति प्रदेश में यह प्रसिद्ध था कि शिशु-उत्पादन मिल में उनकी बोतला में जन्म होने से पूर्व कुछ भयंकर भूल हो गयी थी, जिसके कारण उनका मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया है। पर आज उन्हीं से वनस्पति प्रदेश के बड़े-बड़े अधिकारी मिलने को उत्सुक थे। इतिहास तो उन्होंने उसी दिन बना दिया था, जिस दिन उन्होंने जोन के साथ मिल कर मृत्युलोक के इन निवासियों को खोज निकाला था। पर मदालसा को अपनी ओर आकृष्ट करने में वे सफल हुए, अन्य महामानव इस बात से और भी अधिक प्रभावित हुये थे।

स वर्ग की महामानव नारियाँ अशोक और अनीता के चले जाने के पश्चात् आपस में उनके बारे में चर्चा करने लगीं। मैरी ने कहा—"अशोक जैसा हृष्टपुष्ट और सुन्दर युवक मैंने तो अब तक देखा नहीं।"

"उनके मुख से एक ओज टपकता है।"—यह मार्गरेट थी।

"हम लोगों का पीतवर्ण तो उनके सम्मुख फीका पड़ गया है।" ऐनी ने यह बात कुछ ऐसे ढंग से कही, मानो वह अशोक को देखकर जैसे अपने से ही असन्तुष्ट हो उठी थी।

"यही कारण है कि उसने एक बार हमारी ओर आँख उठा कर देखा तक भी नहीं"—नीलिमा बोली।

"देखे भी क्यों, जब उसको हमसे कहीं अधिक सुन्दर सुडौल और हृष्टपुष्ट अनीता मिली हुई है। मैंने तो दोनों को सदैव साथ ही देखा। कोई कुछ भी कहे, पर मुझे तो अनीता मदालसा से भी अधिक सुन्दर लगी।"—कुमुदनी जो अब तक सबकी बातें सुन रही थी, बोली।

"पर मदालसा ने ही यहाँ के महामानवों को पूरी तरह से वशीभूत कर लिया है। सबकी दृष्टि उसी पर जमी है, कोई इस समय हमारी ओर आ भी रहा है?" हुदोज निकोवा ने झुंझला कर कहा।

"उनमें से कोई नही आता तो तुम स्वयं ही उनको क्यों नहीं आमंत्रित कर देतीं। मैं तो अभी-अभी प्रादेशिक महामानव निर्माता के साथ शारीरिक सम्पर्क करके लौटी हूँ।" महामानवीयों में सबसे सुन्दर मैरी बोल उठी।

ऐनी मैरी की बात सुनकर उठी और महामानवों की भीड़ में जाकर मिल गई। मैरी को हँसी आ गई, वह बोली "ऐनी भी अपने में एक ही है। जब इसको निशा-निमन्त्रण मिलता है तो उससे दूर भागती है और जब नही मिलता तो उसके लिए कामना करती और चिल्लाती है।"

अचानक बीच में ही कुमुदनी उसकी बात को काटती हुई बोली "देखो टोनी मदालसा को परस्पर मिलन के लिये ले जा रहा है।"

"ठीक ही है, न जाने कितनी बार वह तुम्हें आमंत्रित कर चुका है पर तुमने सदैव उसका तिरस्कार किया। यद्यपि तुमको 'सब सब के लिये, नहीं कोई एक के लिये' नियम के अनुसार विवश हो कर

उसके साथ जाना पड़ा, पर तुम्हारी उसे सहमति कभी प्राप्त नहीं हुई"—मारगरेट बोली।

"और तुमने स्वय ही उससे कब सहानुभूति का व्यवहार किया है" ऐनी ने कहा। ऐनी और भी कुछ कहती पर तभी डानाल्ड उनकी ओर आता दिखाई पड़ा। महामानवीयों में एक हलचल सी मच गई। सभी डोनाल्ड के निकट जा खड़ी हुईं। मैरी ने पूछा "कहो डोनाल्ड—आज हम लोगों के पास आने का समय तुमको मिल गया। हमने तो समझा था कि पृथ्वी से आये अतिथियों के सत्कार करने से ही तुमको अवकाश नहीं मिलेगा। क्या तुम हम एक निशा-निमत्रण के योग्य भी नहीं समझते" ?

'सो बात नहीं है मैरी।" डोनाल्ड थोड़ा हिचकचाता हुआ बोला।

"तो फिर और क्या बात है।" मारगरेट, मैरी, नीलिमा और मैं अभी तुमको एक निशा निमन्त्रण देने के लिए तरस रही है।"

"भला इसमें डोनाल्ड को क्या आपत्ति होने लगी" मारगरेट ने कहा।

डोनाल्ड अभी तक चुपचाप खड़ा था। वह मन ही मन सोच रहा था कि वनस्पति प्रदेश की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मैरी जो कभी उसको देखने के लिये भी नेत्र ऊपर को नहीं उठाती थी, आज वही इस प्रकार उसको आत्मसमर्पण कर रही है। उसे अपने पर गर्व हुआ और बोला, "भला आपका प्रस्ताव मैं कैसे अस्वीकार कर सकता हूँ ?

मंगल लोक का नियम 'सब सबके लिये—नहीं कोई एक के लिये' तोड़ने का मेरा साहस कहाँ ?"

"पर जानते हो—इसके लिये तुमको हमारा भी एक काम करना पड़ेगा। तुमको उस रक्त वर्ण अर्ध-सभ्य मानव को हमारा निदा निमन्त्रण स्वीकार करवाने में सहायता करनी होगी।" मैरी बोल उठी।

डोनाल्ड कुछ घबराया सा बोला, "सो तो ठीक है पर अशोक तो कभी इन बातों की चर्चा ही नहीं करता। वह मंगल लोक के इस रिवाज को अनुचित समझता है। उसका कहना है यह तो खुला व्यभिचार है और इसी के कारण मंगल लोक के महामानव और महामानवीयों का विकास नहीं हो पाता। वह कहता है कि मंगल लोक की यह स्वच्छन्द और अनियंत्रित यौन व्यवस्था एक दिन महामानव सभ्यता को नष्ट करने का कारण बनेगी। मैंने उसे बताया भी कि इस प्रकार बोलना मगल लोक मे अपराध है, क्योंकि यहाँ का नियम है—'व्यक्ति बोला—समाज डोला।' पर उस पर इस बात का भी कोई प्रभाव नही पड़ा। हां, टोनी शायद इसमें आपकी सहायता कर सके।' यह कह कर डोनाल्ड ने अपना बोझ टोनी पर डाल दिया और वह उनको पीछे ही छोड़ कुछ आगे बढ़ गया।

तभी इस नारी मण्डली को टोनी अकेला आता दिखाई पड़ा। ये सभी महामानवीयाँ उसकी ओर लपक कर आगे बढ़ीं और उसको चारोओर से घेर लिया। मारगरेट टोनी को छेड़ती हुई बोली—'अब तो शायद तुम यह भी भूल गये होंगे कि मंगल लोक में भी नारियाँ रहती हैं।'

'ऐसी बातें क्यो करती हो मारगरेट—भला ऐसा कभी हो सकता है ? जिस मगल लोक मे बाँकपन सभ्यता का चिन्ह माना जाता है वहाँ की स्त्रियो को कोई भूल सकता है', टोनी बोला।

'यदि ऐसी बात है तो मैं तुम्हे एक सप्ताह के लिए निशा निमन्त्रण देती हूँ। बोलो स्वीकृत है मेरा यह प्रस्ताव ?' मारगरेट कुछ मुस्करा कर बोली।

'इसमे इन्कार किसे हो सकता है।?'

'पर तुमको इस कार्य मे मेरी सहायता करनी होगी। उस अर्ध-बर्बर अशोक को मेरा एक निशा निमन्त्रण स्वीकार करवाना होगा।'

'देखो मैं प्रयत्न करूंगा' टोनी बोला।

अचानक मेरी पूछ बैठी—'उस अर्ध-बर्बर मदालसा को कहाँ छोड आये ?'

'लगता था प्रादेशिक महामानव निर्माता महोदय उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अत उन्होने मदालसा को देख कर तुरन्त ही निशा निमन्त्रण दे डाला। मैंने मदालसा को मगल ग्रह का 'सब सबके लिये' वाला नियम बताया। वह प्रादेशिक निर्माता का आदर करती थी। वह उनके मुख से इस प्रकार के प्रस्ताव को सुनकर पहले तो चौंकी। मुझे वह एकान्त मे ले गई और कहा—'मैंने तो यहाँ पर केवल तुम्हें और डोनाल्ड को ही समर्पण किया है।'

"फिर क्या हुआ ?" मैरी ने पूछा—

टोनी बोला कि मैंने जब उसे बताया कि मंगल लोक का नियम है कि 'सब सबके लिये तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा—"प्रादेशिक निर्माता जैसे पदाधिकारी भी सामान्य महामानव की तरह निशा-निमन्त्रण क्यों देते हैं। उन्हें अपने पद की मर्यादा का तो कुछ ध्यान होना चाहिये।'

हुदोज निकोवा हँसती हुई बोली, "तब तो मदालसा सचमुच में बड़ी भोली है।"

टोनी हँसता हुआ बोला, "मैंने उसे बताया कि मंगल लोक में पद केवल कार्यभार सम्भालने और व्यवस्था को बनाये रखने के लिये ही बनाये जाते है। उनके कारण किसी का कम या अधिक सम्मान नहीं होता। वे भी मंगल लोक के अन्य नागरिकों की भाँति सामान्य नागरिक हैं। इस पर उसने कहा—"बड़ी विचित्र बात है।" पर क्यों कि उसने अब मंगल लोक में ही स्थाई रूप से ही रहने का निश्चय कर लिया है इस लिये बाध्य हो कर वह इस नियम का पालन करने के लिये ही निर्माता महोदय के साथ चली गई।" यह बात कहते हुये टोनी बेहद उदास हो गया था।

"और तुम को अकेला आना पड़ा। चलो तुम्हारा एकाधिकार तो समाप्त हुआ।" नीलिमा कुछ व्यंग करते हुए बोली।

टोनी को उदास देख कर मारगरेट बोली—"पर इसमें उदास होने की क्या बात है ? आज तुमने निर्माता महोदय पर जो

उपकार किया है उसे कभी भूल सकेंगे ? और फिर सोमवटी तो तुम्हारी सेवा मे उपस्थित है। यह क्यों भूल जाते हो कि सोमवटी खावे चिन्ता उदासी भागे, खाओ एक सोमवटी।" यह कह कर उसने स्वयं अपनी जेब से एक गोली निकाल कर मुंह मे डाली। टोनी ने भी उसका अनुकरण किया। फिर तो नीलिमा कुमुदनी और मैरी ने भी एक एक सोमवटी खाई। सब म एक नया उत्साह और जोश आ गया। एक विचित्र कम्पन उनके शरीर म पैदा हो गई। मारगरट टोनी के साथ साथ परस्पर-मिलन के लिय चली गई। नीलिमा प्रादेशिक ऋतु नियंत्रक को लेकर सहनृत्य करने चली गई। कुमुदनी और मैरी भी महामानवो के समूह म घुल गई।

[१७]

जोन के जाते ही अनीता अशोक के निकट आई और उसके सर को अपने कोमल करो से स्पर्श करती हुई बोली 'क्या बहुत थक गये हो ?'

'नही तो।'

'फिर क्या बात है ?'

'मंगल लोक के इतिहास को पढ कर यहाँ की रचना का नक्शा मेरे मस्तिष्क मे लगभग पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गया है। यही नहीं हिमलर ने अपने भाषण मे जो उसने पृथ्वी को छोडते समय

साथी वैज्ञानिकों के बीच में दिया था, पूर्ण रूप से एक नवीन विचार प्रस्तुत किया था। सम्पूर्ण महामानव सभ्यता उसी विचार को विकसित करके खड़ी की गई है। अभी तक भी मैं अपने विचारों को यान्त्रिक मंगल लोक के वातावरण के सदर्भ में संतुलित नहीं कर पाया हूँ।'

'पर इसमें परेशान होने की क्या बात है? ज्यों-ज्यों यहाँ की परिस्थितियाँ स्पष्ट होती जायेंगी, यन्त्र कौशल और विज्ञान का परस्पर घात प्रतिघात उभरता आयेगा और तब स्वतः ही एक मार्ग निकल आयेगा।'

'नहीं अनीता—इस प्रकार अनागत पर छोड़ने से काम नहीं चलेगा। चन्द्रलोक में जिस मिशन को लेकर हम जा रहे थे हमें अब उसको यहीं पर पूरा करना है।'

'पर न केवल चन्द्रमा और मंगल के वातावरण में ही विशाल अन्तर है वरन् यहाँ की महामानव सभ्यता जैसी पतित सभ्यता तो मैंने आज तक न देखी और न सुनी है।'

'इसीलिए इस सभ्यता के अवगुणों को प्रकाश में लाने के लिए इस पर किस ओर से प्रहार किया जाय, यही मैं सोच रहा हूँ।'

'पर मुझे तो यहाँ रहना बड़ा खलता है। जिस ओर भी हम जाते हैं, जहाँ पर भी हम बैठते हैं, वहाँ हमको बर्बर भू-लोक का अर्ध-सभ्य मानव कह कर पुकारा जाता है। मानवता और सत्य का क्या इससे अधिक अपमान और कहीं हो सकता है।'

'उत्तेजित न हो अनीता, हमें सबसे पहले इसी भ्रम को दूर करना है कि भूलोक बर्बर नहीं, वह मंगल लोक से अधिक सभ्य है।'

'वह क्या ?'

'यहीं कि महामानवों में जैविक-प्रक्रिया के प्रति एक कौतूहल जन्य जाग्रति हो रही है। निश्चय ही यह महामानवों को उनकी वास्तविक दशा समझने में सहायता देगी।'

'तो फिर क्या निश्चय किया ?'

'हमें अभी और प्रतीक्षा करनी होगी। पर मुझे लगता है कि अन्तर-दर्शन अवश्य होगा। इतना तो निश्चय है कि जिस क्रान्ति के लिये हम निकले है वह यहाँ पर भी होकर रहेगी। इसके लिये अभी तो हमें महामानवों के विचार परिवर्तन का प्रयास करना चाहिये क्योंकि इससे उनका हृदय परिवर्तन हो सकता है और जब विचार और हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया आरम्भ हो जायगी तो यह निश्चय है कि परिस्थिति मे परिवर्तन होकर रहेगा।'

अनीता अशोक की बात सुन कर चुप हो गई। अशोक भी मौन हो गया। अनीता अशोक से कुछ कहना चाहती थी पर कहते नहीं बनता था। किसी प्रकार साहस एकत्र कर वह मौन को भंग करती हुई बोली—'एक बात कहूँ।'

'अवश्य।'

'तुम्हारे स्नेह, करुणा और वात्सल्य ने मेरे जीवन की धारा को पूर्ण रूप से मोड दिया है। कुछ नया सा मेरे मन में उभरता जा रहा है। मैं तुमसे उस सबको प्रकट करना चाहती हूँ। पर मुझे उस के लिये शब्द नहीं मिलते। कभी कभी जब कुछ कहने का बहुत प्रयत्न

करती हूँ तो लगता है जैसे शब्द मुझसे उच्चारण माग रहे हो।'

'अनीता मैं तुम्हारी भावना को समझता हूँ। पर उसके लिये चिन्ता क्या। जो कुछ हो रहा है यदि वह प्राकृतिक है तो अवश्य मंगलकारी है। यह निश्चय है कि हम दोनों साथ साथ आगे बढ़ेंगे। आज की सामाजिक शक्तियों के खेल और संघर्ष में हम दोनो सहायक बन कर भविष्य का निर्माण करेंगे। जर्जर मान्यताओं का विनाश करेंगे। फिर अवसाद क्यों ?'

और यह कह कर अशोक ने अनीता के हाथों को अपने हाथों में ले लिया। और उस स्पर्श में जो शक्ति थी उसने उच्चारण के अधूरेपन को ढक दिया। उस मौन समर्पण में उन्हें केवल यही संवेदना हुई कि उनके अलग-अलग 'मैं और तुम' का अस्तित्व इस समर्पण के पश्चात् 'हम' में परिवर्तित हो गया है। केवल एक व्यापक कृतज्ञता अनीता के मन में भर गई। अशोक को लगा कि एकाकार होकर भी न उसने अनीता को बाँधा है और न अनीता ने उसके लिये कोई बन्धन खड़ा किया है।

[१६]

प्रादेशिक महामानव निर्माता को मदालसा से एक बिलकुल नये तथ्य का पता चला और उसका उन्हें स्वयं अनुभव भी हुआ। बातों बातों में जब मदालसा ने उनसे उनकी माता के बारे में पूछा तो महामानव निर्माता ने कहा था—

'जन्म देने वाली माता से उसका तात्पर्य उस बोतल से तो नहीं है जिसमें से महामानव शिशु को उत्पन्न करवाया जाता है।'

इस बात को सुन कर मदालसा बड़े जोर से हँसी थी। उसने कहा था—'भला यह भी कभी सम्भव हुआ है। यह तो केवल कुछ वैज्ञानिक विचारकों की कोरी कल्पना है। यह माना कि 'मगल लोक के इतिहास में यह बात कही गयी है पर वह तो केवल पुस्तक का तथ्य है। व्यावहारिक जगत में यह कभी सम्भव नहीं हो सकता।'

महामानव निर्माता बड़ी कठिनाई से उसको इस तथ्य पर विश्वास दिला पाये थे। उन्होंने उसको शिशु उत्पादन मिल दिखाने का वचन दिया ताकि वहाँ पर जाकर वह अपनी आँखों से बोतलों से महामानव शिशुओं को पैदा होता देख सके। मदालसा ने अपने बारे में जो बातें कही थी, उनसे महामानव निर्माता को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने बताया था कि वह तो ठीक अपनी जैसी ही आकृति की नारी के गर्भाशय से उत्पन्न हुई है। नौ माह तक वह उस नारी के ही शरीर में रही। निर्माता महोदय ने ये बातें शिशु-उत्पादन विधि के पाठ्यक्रम का अध्ययन करते समय पढ़ीं तो अवश्य थीं, पर जीवित नारी के शरीर से उत्पन्न प्रथम नारी के दर्शन उनको मदालसा के रूप में ही हुए थे। उसी से उनको यह भी पता चला था कि अनीता और अशोक भी अपनी माताओं के गर्भाशय से ही उत्पन्न हुए हैं।

निर्माता महोदय को मदालसा के साथ 'परस्पर-मिलन' के बाद पहली बार इस बात की अनुभूति हुई कि नारी से उत्पन्न मनुष्य के क्या अर्थ होते हैं। सर्व प्रथम उसी दिन उनको अपने बोतल से उत्पन्न होने की बात से चोट पहुँची और उसी दिन नारी शरीर से उत्पन्न और रसायनिक-भौतिक विधि से कारखानों में बोतलों से

पैदा हुये मानव के बीच मौलिक भेद का अन्तर स्पष्ट हुआ। वे अब तक यही समझते आये थे कि नारी जनन का उपयोग मगल लोक मे केवल इसीलिये बन्द कर दिया गया है, क्योकि बोतल वाली भौतिक-रसायनिक प्रक्रिया से उत्पन्न मानवो को तुलना मे इससे बहुत घटिया नतीजे प्राप्त होते थे। पर भू-लोक के इन प्राणियो को देख कर वे इस वैज्ञानिक तथ्य की सचाई के बारे मे भी शकाशील हो उठे।

मदालसा ने देखा कि महामानव निर्माता उसकी बातो को सुन कर किसी गहरे सोच मे पड गए हैं। इसलिये उसने उनको अकेला छोड दिया। वह बाहर आई तो देखा अनेक महामानवियाँ उसकी ओर ही चली आ रही हैं, क्योकि उन सभी को टोनी से यह पता चल गया था कि मदालसा पुरुष और नारी के परस्पर मिलन से पैदा हुई है। उनके लिए यह बात बिलकुल नई थी और वे इस बारे म सारी बातें जानना चाहती थी। उन्होन चारो ओर से मदालसा को घेर लिया और उससे तरह-तरह के प्रश्न पूछने शुरु कर दिये। जब मदालसा ने शिशु जनने से पूर्व होने वाली पीडा का वर्णन किया तो उसको सुन कर वे काँप उठी। पहले तो उनकी समझ म यह बात ही नही आई कि प्रसव पीडा होती क्या है। पर जब मदालसा ने नारी के शरीर का शिशु जनन के समय का पूरा चित्र खचा तो वे इसका कुछ अनुमान लगा सकी। इस चर्चा मे भाग लेते हुय मेरी ने कहा—'नौ माह मे तो गर्भ लगभग उतना ही बढ जाता होगा, जितना बोतलो से निकालते समय महामानव शिशु होता है।'

मदालसा को पुन यह बात कुछ विचित्र-सी लगी। वह बोली—'जब तक बोतल से निकलते हुये शिशु को मैं स्वय न देख लूँ, तब तक

यह सब कैसे बता सकती हूँ। पर नारी द्वारा उत्पन्न स्वस्थ शिशु का भार लगभग चार सेर और लम्बाई पौन फुट होती है।'

'चार सेर वोझ से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ?'—ऐनी बोल उठी।

'चार किलोग्राम मदालसा ने यह सोच कर पृथ्वी की अन्तर्राष्ट्रीय इकाई में उत्तर दिया कि सम्भवतः महामानवियाँ इससे कुछ अनुमान लगा सकें।

सब महामानवियाँ चौंक पड़ी, 'चार किलोग्राम यानी बोतल शिशु से भी दो किलोग्राम अधिक।'

'तो इसमें नारी को पीड़ा क्यों होती है ?'—मारगरेट बोली।

"यह भी भला कोई पूछने की बात है।" मदालसा नारी जनित-लज्जा से एक बार को तो सकुचा-सी गई, किन्तु फिर उसे याद आया कि मंगल लोक की मान्यतायें तो दूसरी ही हैं, इसलिये वह अपने को सम्भालती हुई बोली—'जब चार किलोग्राम भार का शिशु योनि से निकल कर शरीर से बाहर आता है तो उसके दबाव से त्वचा धीरे-धीरे फटने लगती है। त्वचा के इस फटने से ही नारी को तीव्र वेदना होती है और इसी को भू-लोक मे प्रसव पीड़ा कहते हैं।'

सभी महामानव और महामानवीयाँ चौंक-से पड़े। 'योनि द्वार से चार किलोग्राम के शिशु का निकलना—ओह कितना अमहामानुषिक है। कितना कष्ट होता होगा नारी को। वास्तव में यह बर्बर भू-लोक की असभ्य नारियाँ ही सहन कर सकती हैं।' मैरी जैसे प्रसव वेदना को स्मरण करके ही सिहर उठी हो।

'इसलिए तो मंगल लोक में बांझपन को सभ्यता माना गया है न गर्भाशय होगा, न महामानवी को यह पीड़ा सहन करनी होगी।' —टुडोज निकोवा बोल उठी।

मदालसा को यह बात और भी अजीब लगी। उसने पूछा—'क्या महामानवियों के शरीर में गर्भाशय सचमुच में नहीं होता?'

इस बात पर सभी महामानवियों को हँसी आ गई और उनको बेचारी मदालसा के अज्ञान पर तरस आ गया। पर तभी बहुत जोर से भोंपू जैसी आवाज हुई। मदालसा को पूछने पर पता चला कि यह भोंपू सभी प्रकार के मनोविनोदों के बन्द होने का सूचक है। तभी मदालसा ने देखा कि सहभोज का कार्यक्रम समाप्त हो गया और उसके चारों ओर इकट्ठी महामानवियाँ सोमवटी खाकर जैविक प्रक्रिया से उत्पन्न नर-नारी की रंगीन कल्पनाओं में खो-सी गयीं। उधर एक कोने में एक विचित्र प्रकार का संगीत सारे भवन में गूंज उठा। स्वर और तालों से बंधा संगीत यान्त्रिक संगीतज्ञ यन्त्र से निकल शनैः-शनैः सभी पर एक अद्भुत सम्मोहन-सा डालने लगा।

[२०]

प्रातःकाल अशोक ने अपने को पर्याप्त हल्का पाया। आज जोन, टोनी और डोनाल्ड ने यथासमय उनके कमरे में प्रवेश किया। टोनी आते ही अनोखा में बोला—'कल रात्रि के सहभोज में प्रादेशिक महामानव निर्माता आपसे मिलने के लिए बड़े आतुर थे। आप दोनों भोज के बीच में से ही चले आये। इस पर उन्हें पर्याप्त खेद था। उनका कहना था कि सम्भवतः आप यहाँ कुछ निराशा-सा

अनुभव कर रहे हैं। मंगल लोक के महामानवों और आपके बीच में उन्हें जैसे कोई व्यवधान दिखाई पड़ा। इसीलिए उन्होंने आज आपको महामानव शिशु उत्पादन मिल देखने के लिये आमन्त्रित किया है। वे स्वयं आपको मिल दिखाने के लिये आवेंगे। हम लोगों को भी आपके साथ आने का निमन्त्रण मिला है।'

मदालसा कुछ झेंपती हुई अशोक से बोली—'यह निमन्त्रण मुझे महामानव निर्माता महोदय ने स्वयं दिया था, तुमको इस बारे में मैं बताना भूल गई थी।'

अशोक और अनीता को सहभोज की सभी बातें जोन से मालूम हो गई थीं। इसलिए अशोक ने मदालसा की बात का कोई जवाब नहीं दिया। पर उसने दोनों से कहा—'हम लोग अभी तैयार हुए जाते हैं।'

हम लोग इस अद्भुत कारखाने को देखने के लिये बड़े इच्छुक थे, इसलिए हम बहुत जल्दी तैयार हो गये। भवन की सबसे ऊपर की छत पर गगन गाडियाँ तैयार थीं। लिफ्ट द्वारा छत पर आकर सभी गगन गाड़ियों में बैठ गये। यान्त्रिक चालक सक्रिय हो उठे। घर्र-घर्र करती हुई गगन गाड़ियाँ ऊपर उठीं। अशोक ने नीचे देखा तो उसे लगा जैसे वह इन्द्र की अमरावती के ऊपर उड़ रहा हो। सभी एक जैसे भवन इतनी ऊँचाई से छोटे-छोटे चौकोर कमरों के से लगते थे, पर उनका साम्य जैसे रह-रह कर अशोक को मंगल लोक के यान्त्रिक कौशल का स्मरण दिला रहा था। अचानक कुछ दूर जाने पर बसावट समाप्त हो गई और कुछ दूरी पर एक बड़ी पारदर्शक इमारत नजर आने लगी। आस-पास चारों ओर रेत का ढेर दिखाई देता था, उसमें न जंगल थे और न खेत थे। अशोक को उस रेगि-

स्तानी प्रदेश मे बना यह पारदर्शी भवन ऐसा लगा जैसे कोई पिशाच खडा हो। उस विशाल भवन से निकला भमानव प्रकाश ऐसा लग रहा था जैसे कोई क्रूर राक्षस अपने सहस्रो नेत्रो से उन्ही को देख रहा हो।

गाडियाँ भवन की छत पर आकर रुकी तो अशोक के विचारो का सिलसिला टूटा। उसने नीचे देखा और अनीता के साथ चुपचाप चलने लगा। लिफ्ट पर बैठ कर सभी दसवी मन्जिल पर उतर गये। सामने गैलरी को पार करते हुये वे एक हाल के द्वार पर जा पहुँचे। वहाँ पर प्रादेशिक महामानव निर्माता इनस कुछ क्षण पूर्व ही आ गये थे और मिल मैनेजर से बातें कर रहे थे। पारस्परिक औपचारिक परिचय के बाद निर्माता महोदय बोले—'मिल अत्यधिक बडा है। उसका देखने के लिए पर्याप्त समय लग जायगा। इसलिये हम सीधे ही मिल देखने के लिय चल रहे है।'

यह कह कर वे उसी गैलरी मे चलने लगे। शेष अन्य व्यक्तियो ने भी उनका अनुसरण किया। गैलरी के दूसरे सिरे पर एक वृहत द्वार था, जिस पर किसी व्यक्ति का एक चित्र लगा हुआ था। निर्माता महोदय चित्र की ओर सकेत करते हुये बोले—'यही मगललोक की महामानव सभ्यता के सस्थापक और आदि प्रधान महामानव निर्माता श्री हिमलर हैं।'

इसके पश्चात उन्होन दीवार के पास लगे एक बटन को दबा दिया। द्वार स्वत ही खुल गया। द्वार को पार कर जिस कमरे में हमने प्रवेश किया वह बहुत बडा था। पारदर्शक होते हुए हम किसी भिन्न सामग्री से बना हुआ लगा। सम्पूर्ण

वातावरण कुछ विचित्र सा, कुछ निराला सा लग रहा था। इसमें कांच की बड़ी-बड़ी मेजें अनेक समानान्तर कतारों मे लगी हुई थी। सभी मेजों पर दो दो अणुवीक्षण यन्त्र रखे हुए थे। इन यन्त्रों के नीचे हवा बद परख नलियां परीक्षा के लिये रक्खी हुई थीं। लगभग १०० प्रयोग कर्मी इनकी परीक्षा में लगे थे। ये श्वेत वस्त्र धारी कर्मी हाथों में विशेष प्लास्टिक के पीले दस्ताने पहने हुए थे। नीचे से ऊपर तक इनके शरीर का प्रत्येक अवयव वस्त्र से ढका हुआ था।

श्वेत वस्त्र, हाथों में पीले दास्ताने, पैरों में पीले जूते, घुटनों से नीचे तक एक लम्बा वस्त्र इन सभी चीजों ने पीतवर्ण कर्मियों को वास्तव में भूत जैसा आकार दे दिया था। कमरे में खड़े ये महामानव भूत व्यक्ति जैसे लग रहे थे, जिनको किसी सम्मोहन यंत्र द्वारा खड़ा करके यांत्रिकों की भांति काम लिया जा रहा हो। कमरे की दीवारों के कण कण से एक विचित्र प्रकार का स्निग्ध, उज्ज्वल किन्तु तीव्र श्वेत प्रकाश निकल रहा था जिसने सम्पूर्ण भवन को श्वेतित कर दिया था। एक विचित्र प्रकार की नीरवता भवन मे छाई हुई थी। हमें लगा जैसे हम किसी भूत-गृह में पहुँच गये हों।

उसी समय प्रादेशिक महामानव निर्माता ने हमको सम्बोधित करते हुए कहा,'इस समय हम लोग शिशु उत्पादन मिल के वर्गीकरण विभाग मे खड़े हैं। यहाँ पर हवा बन्द परख-नलियों में रखे हुए शुक्राणुओं को छांटा जाता है और उनको नष्ट करके शेष को गर्भाधान केन्द्र में भेज दिया जाता है। इस प्रकार एक हजार परख-नलियों में भरे हुए अरबों और खरबों शुक्राणुओं की परीक्षा प्रति दिन की जाती है।'

अशोक ने प्रादेशिक महामानव निर्माता की ओर विस्मय भरी दृष्टि से देखते हुए पूछा, 'इतनी अधिक सख्या मे शुत्राणुओ को प्राप्त करने का आपका कौन सा स्रोत है।'

प्रादेशिक महामानव निर्माता मुस्कराये और बोले 'विस्मित होने जैसी इसमे कोई बात नही है। इन शुत्राणुओ को हम भौतिक रसायनिक विधि द्वारा कारखानो मे उसी प्रकार तैयार करते हैं जैसे कि तुम्हारे यहाँ कॉस्टिक सोडा या दूसरे रसायनिक तैयार किये जाते हैं। यद्यपि मानव शरीर से बाहर ही इनका निर्माण होता है पर ये ठीक उतने ही सक्रिय होते हैं जितने कि मानव के अण्डकोष मे पाये जाने वाले शुत्राणु।'

इतना कह कर वे हमको एक मेज के समीप ले गय। उस पर कार्य करने वाले प्रयोगकर्मी स्वत ही एक ओर हट गय। तीन अणुवीक्षक यन्त्रो मे हमको निरीक्षण करने का आदेश देकर एक निरीक्षण यन्त्र मे वे स्वय देखते हुए बोले, 'परख-नली म ये जो लम्बी लम्बी दुमो को घुमाते हुए घु डीदार शिर वाले जीव हैं यही वे शुत्राणु हैं जो मानव का बीज कहलाते हैं।'

अशोक ने देखा लम्बी लम्बी दुमो को घुमाते हुए शुत्राणु परख-नली मे एक दूसरे से टकरा रहे थे। लम्बी दुम और घु डीदार सिर, बस यही उनका शरीर था। किसी श्वेत चिकन पदार्थ मे वे रखे हुए थे। इसके बाद हम दूसरे कमरे मे आदे। यह भी पहले कमरे जितना ही बडा था और उसी प्रकार के उपकरणो से था। अन्तर केवल यही था कि यहाँ पर पीतवर्ण के

पीतवस्त्रों को पहने कांच की बड़ी बड़ी बोतलों को भारी भारी अणुवीक्षण यन्त्रों से देख रहे थे। प्रादेशिक महामानव निर्माता ने कहा यह गर्भाधान केन्द्र है। इन बडी बड़ी कांच की बोतलों को डिम्बोपक कहते हैं। इन डिम्बोपकों मे ही नारी अंडे और शुक्राणु का संयोग करवाया जाता है और इसी में नवीन भ्रूण की उत्पत्ति होती है।'

प्रत्येक परीक्षण मेज पर चार प्रयोगकर्मी चार विभिन्न बोतलों के साथ काम कर रहे थे। इन चारों बोतलों को हम क्रमानुसार अणुवीक्षक से देखने लगे।

पहली बोतल के निकट एक शुक्राणु एक नारी अण्डे की झिल्ली पर आक्रमण कर रहा था। दूसरी बोतल मे शुक्राणु नारी अंडे की झिल्ली को फाड़ कर उसके अन्दर स्थित श्वेत पदार्थ में प्रवेश पा चुका था। तीसरी बोतल में शुक्राणु की घुंडी और दुम एक दूसरे से अलग हो गई थी और घुंडी नारी अण्डे के केन्द्र को खोजती हुई आगे बढ रही थी और चौथी बोतल में शुक्राणु की घुंडी और नारी अण्डे के केन्द्र का संयोग हो गया था।

बोतलों मे बच्चों को पैदा होने की सभी प्रक्रियाओं में मदालसा सबसे अधिक रुचि ले रही थी। उसने निर्माता महोदय से पूछा, 'इतनी बड़ी संख्या मे नारी अण्डों को किस प्रकार उपलब्ध किया जाता है?'

'आइये, आपको यह तीसरे विभाग में चल कर ज्ञात होगा।'

प्रादेशिक निर्माता के साथ जिस कमरे में इस बार हमने प्रवेश

किया वह अब तक के कमरों में सबसे बड़ा था। एक ओर से भारी यन्त्र के चलने जैसी ध्वनि आ रही थी। निकट खड़े एक प्रयोगकर्त्ता ने निर्माता महोदय का संकेत पाकर दीवार में लगा एक बटन दबा दिया और तत्काल ही ठोस दीवार में एक द्वार निकल आया।

द्वार में होकर हमने जिस कमरे में प्रवेश किया वह अन्य कमरों की अपेक्षा अधिक गर्म था। चारों ओर बड़े बड़े पारदर्शक प्लास्टिक पात्र रखे हुए थे। सभी में मास जैसे लोथड़े भरे हुये थे। उनकी ओर संकेत करते हुए निर्माता महोदय ने कहा—

'इन्हीं पात्रों से हम नारी अण्डे मिलते हैं। इन पात्रों में सरंक्षित गर्भाशय रखे हुए हैं जिनमें निश्चित समय में नारी अण्डों की निश्चित मात्रा मिल जाती है।'

'तो क्या यह बात सचमुच में सही है कि महामानवियों के गर्भाशय नहीं होते।' मदालसा को जैसे कल महामानवियों की बताई हुई बात याद आ गई हो।

'हाँ मंगल लोक में स्त्री और पुरुष सब प्रकार से समान हैं। लिंग के कारण जो एक पर्दा भू-लोक में नर नारी को अलग किये रहता है वह यहाँ पर पूरी तरह से मिटा दिया गया है।'

'लेकिन वह तो इसके बिना भी दूर किया जा सकता है।' अनीता ने दृढ़ स्वर में कहा।

'यह आपका केवल भ्रम है।' निर्माता महोदय प्रतिवाद करते हुए भी बड़े मृदु स्वर में बोले, 'मंगल लोक के निर्माताओं ने शुरू में ही इस बात को अनुभव कर लिया था कि जब तक नारी में गर्भाशय रहेगा, तब तक उसे किसी न किसी रूप में पुरुष पर आश्रित होना पड़ेगा।

परिचय हुआ था उनमें से कुछ यहाँ भी मौजूद थीं। हमने सोचा कि सम्भवतः यह इसी मिल में काम करती हैं और हमारा अनुमान सही निकाला। हमको देखते ही वे सभी उठ कर हमारे पास आ गईं। ये सभी महामानवियां अनीता से अत्यधिक ईर्षा कर रही थीं और उसका कारण अशोक के प्रति उसका स्नेह था। वे सभी यह समझने लगी थी कि यदि अनीता न होती तो अशोक उनके प्रति उतनी उदासीनता न दिखाता जितना वह आज प्रकट कर रहा था। इसलिये मैरी ने कहा, 'अनीता, क्या तुम्हे पता नही कि मंगल लोक मे 'सब सब के लिए, नही कोई एक के लिए, नियम लागू है। मानो वह अनीता को मगल लोक के नियम भंग करने का अपराधी बता रही हो।

अनीता ने कहा, यह बात 'मेरी समझ मे नहीं आयी।'

मदालसा बीच मे ही बोल उठी, 'मैरी कहना चाहती है कि तुम केवल अशोक जी के ही इतने निकट क्यों रहती हो।'

'यह तो मेरा अपना व्यक्तिगत सवाल है।' अनीता का मदालसा को इस प्रकार बोलना कुछ ठीक नही लगा।

'लेकिन व्यक्ति द्वारा सामाजिक नियमों की अवहेलना करना अपराध है। क्योंकि मगल लोक मे यह माना जाता है कि व्यक्ति का उसी में भला है जिसमें समाज का भला है। इसलिए हमारे समाज का नियम है कि 'व्यक्ति बोला, समाज डोला।' हुदोज निकोवा ने बीस हजार बार पढ़े निद्रा पाठ को अनजाने में ही दोहराते हुए कहा।

'तो, क्या तुम्हारे यहाँ मातृत्व और व्यक्तिगत प्रेम के लिए कोई स्थान नही है।' अनीता कुछ उत्तेजित होकर बोली।

मारगरेट हँसती हुई बोली, 'हम बाझपन को सम्यता मानते हैं।'

तभी नीलिमा ने कहा, 'प्रेम' शब्द क्या बला है। हमने तो इसका नाम आज पहली ही बार सुना है।'

अशोक और अनीता दोनो एक दूसरे की ओर आश्चर्य से देखने लगे। अनीता अपनी बात को समझाती हुई बोली, "तो क्या तुमको इस बात की भी अनुभूति नही कि नर और नारी का जीवन सर्वांगीण दृष्टि से तभी पूर्ण होता है जब उनके मन और शरीर एक हो जाते हैं और जब उनकी गोद मे नवजात शिशु 'हुआ हुआ' करके आता है।"

ऐनी, मैरी, नीलिमा और मारगरेट की कुछ समझ मे नही आया कि अनीता क्या कह गई।

टोनी मानो हमें और महामानवीयो को समझाता हुआ बोला, 'बर्बर' भूलोक के सामाजिक नियमो मे मगल लोक के नियमो से वास्तव मे पृथ्वी और मगल ग्रह जितना ही महान अन्तर है।

अशोक अब तक चुप था पर टोनी की बातो ने जैसे उसे कुछ कहने का अवसर दे दिया हो—इस लहजे मे वह बोला, 'सचमुच मे हमारे और आपके रीति रिवाजो मे बड़ा अन्तर है। हम लोगो को अकेलापन पसद है, पर मगल मे अकेला रहना कानूनी अपराध है। हम अपनी उदासी को भगाने के लिए पुस्तकें पढते हैं या गाते हैं पर आपके यहाँ सोमवटी खाकर ही उदासी दूर कर दी जाती है।'

अशोक अभी आगे और कुछ कहता कि तभी नलिनी बोल उठी, 'पर जो कुछ आपने कहा वह तो बिल्कुल असम्यता और बर्बरता की निशानी

है। आप भी अजीब लोग हैं जो न निद्रा-निमंत्रण को समझते हैं और न इस बात को समझते हैं कि जब हर व्यक्ति समाज के लिए काम करता है तो समाज का काम आगे बढ़ता है'—नलिनी ने तीस हजार बार पढ़े निद्रा पाठ को दुहराया।

अशोक और अनीता का मन इस बातचीत से ऊब उठा था और वे इस प्रसंग को यही समाप्त करना चाहते थे कि इतने ही में महा-मानव निर्माता ने मनोविज्ञान गृह मे प्रवेश किया और हम लोग उनके साथ उठकर शिशु उत्पादन मिल के शेष भाग को देखने के लिये चल दिये।

रास्ते मे चलते-चलते वह बोले, 'आपने अभी तीसरे कमरे में शुक्राणुओं और रजकणों का मिलन देखा था। अब मैं आपको पूर्व भाग्य रचियता के पास ले चल रहा हूँ जो महामानव शिशुओं के होने से पूर्व ही उनका भाग्य रच देते है। और यहीं से बोतलों के भ्रूण को उसके वर्ग के अनुरूप बनाने के लिए आवश्यक आदेश दिये जाते हैं।'

अशोक ने कहा, 'हमने अपने पुराणों में तो इस प्रकार की कथायें अवश्य पढ़ी हैं कि मनुष्य के पैदा होने से पूर्व ही ब्रह्मा उनका भाग्य रच देता है, पर उसे हम अब तक कोरी कल्पना ही समझते थे। पर आपने तो उस कल्पना को ही साकार कर दिया है।'

महामानव निर्माता यह नहीं जान पाये कि अशोक ने यह व्यंग किया है, अथवा अपनी अनुभूति को शब्दों द्वारा

व्यक्त किया है। अशोक ने भी उनको यह जानने का कोई अवसर नही दिया क्योकि वह अपनी बात को आगे बढ़ाता हुआ बोला, 'आपसे अनेक बार क वर्गीय महामानव का नाम सुन चुका हूँ, पर अभी तक समझ मे नही आया कि यह क्या चीज है ? क्या सचमुच मे महा-मानव समाज भी वर्गों मे बँटा हुआ है।

महामानव निर्माता बोले, 'इस बात को विस्तार से समझाने के लिए यह उपयुक्त अवसर नही है फिर भी आप इतना जान लें कि मगल लोक म महामानवो के काम के विभाजन की याजना वैज्ञानिक ढग से बनाई गई है। मगल लोक म जिस काम के लिए जितन महामानवो की जरूरत पडती है उसी के लिए उतन महामानव शिशु उत्पादन मिलो मे बना लिये जाते हैं। अब तक महामानवो के तीन वर्ग और उनके अनक उपवग ही मगल लाक के सभी कामो को करने के लिए काफी हुए हैं। भविष्य मे जब कभी नय कामो के लिए नये वर्गों की जरूरत होगी तो उनका भी निर्माण किया जा सकता है।'

अशोक ने जिज्ञासा भाव से पूछा, 'इन तीन वर्गों और उपवर्गों के महामानवो मे क्या कोई विशेष अन्तर होता है ?'

"जहाँ तक सामान्य साधन और सुविधाओ का प्रश्न है, वहाँ तक मगल लोक मे भी महामानवो मे कोई भेदभाव नहीं है। पर आप तो जानते है कि मगल लोक के महामानव समाज का नीव ही काम पर रखी गयी है। इसलिये काम के अनुसार वर्ग और उपवर्ग बना लिये गय है। अब तक हमारा काम केवल १०८ उपवर्ग से ही

चल रहा है। अब प्रत्येक उपवर्ग के महामानव केवल एक ही तरह का काम कर सकते हैं। पर वह अपने काम को पूरी तरह से समझते हैं।'

अशोक को निर्माता महोदय की बात सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि इस प्रकार एकांगी विकास पर टिका महामानव समाज कितने दिनों तक चल सकेगा।

तभी एक बहुत बड़ा भवन आगया जिसमें हम सब लोगों ने प्रवेश किया। निर्माता महोदय ने बताया कि यह बोतल भवन कहलाता है। हमने देखा ऊपर से एक सीढ़ीदार ढांचा जिसमें नोकीले दातों पर जंजीरें चढ़ी थीं, तेजी से आगे बढ़ता जा रहा है। इस ढाँचे का तला किसी बहुत ही चमकती हल्की धातु से मढ़ा था और उसके ऊपर शिकंजों मे कसी प्लास्टिक बोतलों का एक जलूस सा नीचे आ रहा था। यह बोतलें बिना पैंदे की थीं। नीचे आकर हर बोतल कुछ क्षण के लिए रुकती थी और इस बीच मे ही एक भूगत सिलिंडर का पट खुलता था। उसमें से एक पैंदी निकलती थी जिसमें संश्लेषित गर्भाशय लगा होता था। वह पैंदी अपने आप बोतल में फिट हो जाती थी और इसके बाद बोतल अपने आप आगे बढ जाती थी। हमको बराबर यही क्रम दिखाई पड़ा।

हम इस स्वतः चालित जंजीरों के बीच में कसे शिकंजों के बीच में फंसी बोतलों के साथ-साथ आगे बढ़ने लगे। कुछ दूर जाकर यह बोतलों का जलूस भूमिगत हो गया था और हम एक दूसरे कमरे के द्वार पर खड़े थे। महामानव निर्माता ने बताया कि यहीं पूर्व भाग्य रचियता रहते हैं।

पूर्व भाग्य रचियता श्री अविनाश हमको देखकर उठे और हमारे पास आये। महामानव निर्माता ने हमारा उनसे औपचारिक परिचय कराया यद्यपि इससे पूर्व हम लोग सहभोज मे मिल चुके थे।

श्री अविनाश हमको समभाते हुए बोले, 'महामानवो के पैदा होने से पूर्व ही हम उनके भाग्यो को रच देते हैं। प्रधान महामानव निर्माता के आदेशानुसार मैं यह निश्चय करता हूँ कि कौन सी बोतल के भ्रूण को शिशु रूप धारण करके कौन से वर्ग का महामानव बनना है। यदि उसे स वर्गीय महामानव बनाना है तो मैं उसी वर्ग के गुण धर्मों के अनुसार उसके भाग्य को रच देता हूँ और उसके लिये आवश्यक आदेश भी जारी कर देता हूँ।' थोडा रुक कर वे फिर बोले, यह तो शायद आप जानते ही होगे कि स वर्गीय महामानव स्वतत्र रूप से विशेष उत्तरदायित्वो को सभालने योग्य होते हैं।'

अशोक को महामानव समाज के वर्गों को समभने का यही उपयुक्त अवसर लगा। इसलिए वह बोला, 'कृपया हमे विस्तार से यह बताइये कि स वर्गीय महामानव से आपका क्या तात्पर्य है तथा महामानवो मे और कौन कौन से वर्ग हैं?'

'मगल लोक मे महामानवो के कामो के अनुसार स (सत्य), र (रज) और त (तमो) वर्गों मे बाँटा गया है। प्रत्येक वर्ग को आगे उत्तम, मध्यम और अधम उपवर्गों मे बाँटा गया है।'

अविनाश को इस बात से थोडा आश्चर्य हुआ फिर भी वह उसे व्यक्त न करते हुये बोला, 'उत्तम उपवर्ग के स वर्गीय महामानव

के शरीर और मस्तिष्क को इस प्रकार रखा जाता है कि वह शारीरिक और बौद्धिक दोनों प्रकार के काम अत्यधिक निपुणता के साथ कर सके। र वर्गीय महामानवों को केवल शरीर श्रम के लिए तैयार किया जाता है पर आवश्यकता पड़ने पर वे मध्यम श्रेणी के बौद्धिक कार्य भी कर सकें और इसका प्रबन्ध उनको निर्माण करते समय कर दिया जाता है। त वर्गीय महामानव केवल शरीर श्रम के लिये ही बनाये जाते हैं और अधम उपवर्ग के त वर्गीय महामानव पीर, बवर्ची, भिस्ती, खर श्रेणी के सभी कामों को कर सकते हैं। वनस्पति प्रदेश के लिये केवल यही एक शिशु उत्पादन मिल हैं और यहाँ पर जिस काम के लिए जितने महामानवों की आवश्यकता पड़ती है उन सब के भाग्य मैं रचता हूँ।"

कुछ ठहर कर पूर्व भाग्य रचियता बोले, 'मुझे ही यह निश्चय करना पड़ता है कि अमुक बोतल में पैदा होने वाले महामानव में क्या-क्या गुण होने चाहिए जिससे वह महामानव समाज के प्रति अपने पूर्व निश्चित कर्तव्यों को प्रसन्नतापूर्वक पूरा कर सके। इसके लिए उनके शरीर को भ्रूणावस्था में ही अनुकूलतम परिस्थितियों के अनुरूप ढाला जाता है और फिर शिशु अवस्था में उनका मातृ मंदिर मे रख कर मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा उसके मन को शरीर के अनुरूप बना लिया जाता है। उसका पालन पोषण ऐसे वातावरण में होता है जिससे वह इस काम को खुशी से करे जिसके लिए उसे रचा गया है।'

अपनी बात को खुलासा करने के लिए पूर्व भाग्य रचियता ने अपने पीठ पीछे लगे एक बटन को दबा दिया। कमरे की एक

दीवार धीरे धीरे नीचे बैठने लगी और बड़े जोर की घर्र घर्र की आवाज आने लगी। हमने देखा कि शिकंजों में फसी चादरों पर रखी हुई बोतलें नाचती हुई चली आ रही हैं। प्रत्येक बोतल पर एक परिचय पत्र लगा हुआ था। पूर्व भाग्य रचियता ने दूसरा बटन दबाया तो बोतलों का नाचना बंद हो गया। जिन कांटेदार दाँतों पर चढी जंजीरों पर टिका यह जलूस बढ रहा था वह भी चलने से बंद हो गये। पूर्व भाग्य रचियता एक एक बोतल के पास आकर ध्यान से देखने लगे। फिर उन्होंने तीसरा बटन दबाया। उसमें से कुछ वैसे ही परिचय पत्र निकल आये जैसे बोतलों पर लगे हुए थे। पूर्व भाग्य रचियता ने मेज पर रखे टेप रिकार्डर को चला दिया। परिचय पत्रों पर उनके आदेश अपने आप ही टाइप होने लगे। पूछने पर पता चला कि परिचय पत्रों पर वे सारे निर्देश लिख दिये गये हैं जिनके अनुसार बोतल में स्थित भ्रूण को उपचारित किया जाता है। श्री अविनाश ने अब चौथा बटन दबाया तो उनके हाथ में टाइप किया परिचय पत्र आ गया। उस पर लिखा था 'बोतलधारी भ्रूण को अमुक अमुक औषधि के इतने इतने गज दूरी पर इतने इतने टीके लगाने हैं, अमुक-अमुक घोलों को इतने गज दूरी पर प्रवेश कराना है और अमुक अमुक नम्बर की बोतलों को इतने इतने दूरी पर जाकर उलट देना है, आदि आदि।'

पूर्व भाग्य रचियता के पाँचवें बटन दबाने पर टाइप किए परिचय पत्र अपने आप अचल बोतलों में जाकर पुराने परिचय पत्रों के ऊपर जाकर फिट हो गये।

श्री अविनाश ने छठा बटन दबा दिया और शिकंजों में कसी बोतलों में फिर गति आ गई और वे नाचती हुई धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगीं। कमरे में फिर लाल बत्ती जल उठी और महामानव निर्माता को फिर हमें अकेले छोड़कर जाना पड़ा। अविनाश इस बात से बहुत खुश हुआ। महामानव निर्माता के जाने के तुरन्त बाद ही उसने कहा, "मुझे आप से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई है। अब तक मैं अपने आपको सम्पूर्ण वनस्पति प्रदेश में अकेला अनुभव करता था किन्तु जिस दिन से मैंने आपका स वर्गीय महामानव समाज में भाषण सुना तो मुझे यह सोचकर भारी सन्तोष हुआ कि कम से कम मेरी तरह सोचने वाला एक जीव मगल लोक में भी आ गया है।"

अशोक ने विनम्रता के साथ कहा, "यह आप की महानता है कि आप ऐसा समझते हैं। हम सब आपके बहुत आभारी हैं कि आप ने मंगल लोक की व्यवस्था के बारे में इतनी अमूल्य जानकारी दी।"

अनीता ने कहा, "हमें जोन से यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि आप सोमवटी का प्रयोग भी नहीं करते।"

"इसका कारण यह है कि सोमवटी जैसी उत्तेजनात्मक औषधि का प्रयोग करके हमें क्षणिक विश्राम तो मिल जाता है पर कालान्तर में सम्पूर्ण शरीर निष्क्रिय हो जाता है। आप तो जानते हैं कि यहाँ पर सामाजिक नियम बहुत सख्ती के साथ लागू किये जाते हैं इसलिए मुझे सोमवटी का प्रयोग न करने के कारण मेरे साथ यहाँ पर काफी नोंक झोंक होती रहती है।"

अशोक ने कहा, 'मेरी यह बात समझ मे नहीं आई कि आपके समाज ने बुद्धि को क्यो भौतिक शक्ति का दास बनाया हुआ है। क्या यह सम्भव नहीं कि महामानवो को मानसिक स्वतन्त्रता मिल सके क्योकि मगल लोक के इतिहास मे जिन महान आदर्शों पर महामानव समाज को बनाने की बात कही गई है वे तभी प्राप्त किये जा सकते हैं जब यहाँ के अधिकारी प्रत्येक व्यक्ति को इतनी आजादी दे सकें कि वे निर्भय होकर प्रत्येक बात को विवेक तुला पर तौल सकें तथा मन में उठी सभी प्रकार की शकाओ का साहस के साथ समाधान कर सकें। यदि ऐसा नहीं होता तो महामानव समाज के आदर्श केवल कोरे दिखावा बनकर ही रह जायेंगे।"

अविनाश ने कहा, "आप ठीक कहते हैं, पर यहाँ तो प्रत्येक महामानव के शरीर और मन को ऐसे नपे तुले वातावरण मे रखा जाता है जिसमे वह अपने को इस समाज का एक अभिन्न अग मानने लगे और उसका अपना व्यक्तित्व तथा मानसिक स्वतन्त्रता कुछ भी न रहे।"

फिर कुछ रुक कर अविनाश बोला, "यह मैं भी मानता हूँ कि मारे समाज की दृष्टि से काम किये जाने के लिये समस्त समाज के कल्याण की योजना सब के सहचिन्तन से बननी चाहिए क्योकि ऐसा करने से प्रत्येक व्यक्ति को सोचने विचारने का अवसर मिलता है। पर यहाँ तो कुछ महामानव ही सम्पूर्ण समाज को नियन्त्रित कर रहे हैं। इससे औसत महामानव की बुद्धि पूर्ण रूप से कुंठित हो रही है।"

जोन बीच मे ही बोल पड़ा, "अशोक जी, अविनाश जी को महामानव समाज मे ऐसी ही बातों के कारण सनकी समझा जाता है।

वे जो कुछ कहते हैं उसका अर्थ यहाँ के अधिकांश महामानव नहीं समझ पाते। इसका कारण यह है कि जब इनका बोतल के अन्दर भ्रूण रूप में विकास हो रहा था तो इनको बुद्धि विकसित करने का टीका अधिक मात्रा में दे दिया गया था। यह विकार उसी टीके का है। इसमें इनका कोई दोष नहीं।"

अविनाश जोन की बातों को सुनकर तिलमिला गया और बोला, "देखा आपने, यहाँ पर कोई भी महामानव मेरी बातों को समझता ही नही। सच बात तो यह है कि यहाँ के सभी अत्यधिक प्रतिभावान व्यक्तियों और वैज्ञानिकों को औसत महामानवों के बीच में ठहरने ही नहीं दिया जाता। उनको निरुद्देश्य और लक्ष्यहीन खोज में लगा दिया जाता है जिससे उनका दिमाग खाली न रहे।"

अशोक ने कहा, पर मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि शिशु उत्पादन पर सभी प्रकार का नियन्त्रण होते हुये भी मंगललोक में भी क्यों कर ऐसे व्यक्ति पैदा हो जाते है।

अविनाश ने मुस्करा कर कहा, "इसको रोका नहीं जा सकता क्योंकि यह तो नियति या चांस पर निर्भर करता है। सांख्यकी के एक नियम के अनुसार बोतलों से नपे तुले महामानवों को बनाने पर भी कुछ न कुछ महामानव अवश्य ही ऐसे बन जाते हैं जिनकी मेधा असाधारण होती है।"

अशोक ने बीच में ही बात को काटते हुए पूछा, "लेकिन ऐसा सम्भव कैसे होता है? अभी तो आपने बताया था कि एक एक

पर इनकी वृद्धि को मन्द करने के लिए बोतलों की चाल कुछ कम कर दी गई है। इससे न केवल भ्रूणों को रक्त कम मिलेगा पर आक्सीजन भी कम जायगी। इससे न इनके मस्तिष्क का अधिक विकास होगा और न शरीर की वृद्धि होगी।"

अशोक को तभी पूर्व भाग्य रचयिता श्री अविनाश की बताई हुई बातें याद आ गई। इसलिये उसने पूछा, 'क्या उपरोक्त प्रक्रिया से पैदा हुए महामानव विलक्षण गुण प्राप्त नहीं कर लेते हैं।'

'क्यों नही। यदि किसी को बोतल में असावधानीवश जितना रक्त जाना चाहिए, उसका केवल ७० प्रतिशत ही जाता है तो महामानव बौने रह जाते हैं और उनके नेत्रो का विकास नही हो पाता।'

'ऐसे अन्धे महामानवों का क्या किया जाता है।' अनीता बीच मे ही बोल पड़ी।

'उनको पैदा होते ही नष्ट कर दिया जाता है।' निर्माता महोदय ने यह बात कुछ ऐसे ढग से कही जैसे कुछ हुआ ही नही।

पर अशोक और अनीता दोनो ही इस क्रूरता से सिहर उठे। उन्होने कहा, 'विज्ञान में अत्यधिक विकसित इस समाज में भी ऐसे लोगों को नही बचाया जा सकता।'

"हमने अनुभव से यह सीखा है कि सुधारने से नष्ट करना श्रेष्ठ है।" महामानव निर्माता लगता था स्वयं भी यही वाक्य दोहरा रहे

थे जो उन्हें बीस हजार बार निद्रापाठ के रूप मे दिया गया था।

अशोक जो कुछ जानना चाहता था उसको अनोना के बीच में बोलने से नही जान पाया था। इसलिये वह फिर बोला, 'लेकिन असावधानीवश ऐसा भी तो हो सकता है कि भ्रूण को सामान्य तौर पर जितना रक्त और आक्सीजन चाहिये, उसका १५० प्रतिशत पहुँच जाय।'

'हाँ, ऐसा भी हो जाता है।' निर्माता महोदय न बडे अनमने ढग से कहा, 'उन दशाओ मे स वर्गीय भ्रूण से पैदा महामानव असाधारण प्रतिभावान बन जाता है और त वर्गीय महामानव मे असाधारण भौतिक शक्ति आ जाती है।'

अशोक को अपनी बात का जवाब मिल चुका था इसलिये वह आगे कुछ नही बोला।

मदालसा को लगा कि उसे भी कुछ पूछना चाहिए, इसलिये उसने कहा, 'मुझे लगता है कि ये बोतलें शायद अनन्त समय तक इसी प्रकार चलती रहगी क्योंकि अभी तक इनके अन्त होने के आसार तो नजर नहीं आये।'

यह सुन कर महामानव निर्माता मुसकरा कर बोले, 'नहीं ऐसी बात तो नही है। यहाँ पर सब कुछ वैज्ञानिक विधियो पर आधारित है। नारी के गर्भाशय मे एक भ्रूण को विकसित शिशु बनने मे औसत २६७ दिन लगते हैं। यहाँ पर बोतलो के लिए यह एक

दिन ६ मीटर के बराबर मान लिया है। इसलिए बोतलों को १६०० मीटर तक चलाया जाता है।"

'बोतलों के जलूस के चलने की गति औसतन २५ मीटर प्रति घंटा रखी जाती है। इस तरह शुक्राणु और रजाणु के संयोग से लेकर पूर्ण विकसित शिशु के बनने में लगभग ६४ घंटे लगते हैं।' निर्माता महोदय ने कुछ ठहर कर कहा, इस तरह बर्बर भूलोक में शिशु जनन का जो काम २६७ दिन में किया जाता है, उसको यहाँ पर ६४ घंटे में ही निबटा दिया जाता है। हम इसीलिये आपसे इतना आगे हैं।'

हम लोग बातें करते हुए आगे निकल आये। हमने देखा कि बोतलों की कुछ कतारें दो सुरंगों के बीच में से होकर आ रही है। एक सुरंग काफी गर्म थी। पता चला कि इस सुरंग में केवल त वर्गीय महामानव भ्रूणों को भेजा जाता है जिनको बायलरों, भट्टियों और गर्मी में काम करना होता है। ये गरम सुरंगें भ्रूणों को गर्मी के प्रति सहनशील बना रही हैं।

आगे जाकर हमें कुछ बहुत शीतल सुरंगें भी मिलीं जिनमें से बोतलें होकर जा रही थीं। हमने अनुमान लगाया कि सम्भवतया इन बोतलों के महामानवों को आगे जाकर शीत वातावरण में काम करना होगा। इन अलग अलग बोतलों की कतारों में आगे जाकर अलग अलग ढंग के टीके लगाये जा रहे थे। सम्भवतया ये उनको शीत और गर्मी से बचाने के लिए थे। थोड़ा और आगे बढ़े तो

मुक्त कर दिया है। परिवार व्यवस्था को भी सदा के लिये तिलांजलि दे दी गई हैं। मां, बाप, पुत्र, पुत्री, और भाई बहिन के सम्बन्धों के अभाव में पति पत्नि के सम्बन्ध भी बेकार हो गये हैं। इसलिये यहाँ सभी महामानव और महामानवीयाँ मुक्त है। भूलोक मे तुमने मानव जीवन को जितना जटिल बना दिया है हमने उसको यहाँ पर उतना ही सरलतम कर दिया है।

अनीता ने यों ही पूछ लिया, 'जब आप परिवार की सभी मान्यताओं को समाप्त कर चुके हैं तो महामानव शिशुओं का लालन-पालन कैसे किया जाता है?'

'उसके लिये प्रत्येक प्रदेश मे मातृ मन्दिर मौजूद है जहाँ पर जन्म से लेकर युवावस्था प्राप्त करने तक महामानव और महामानवियों की देखभाल की जाती हैं।'

मदालसा ने अति रसिक भाव से कहा, "क्या आप हमें मातृ मन्दिर की सैर नहीं करायेंगे।"

निर्माता महोदय का शिशु उत्पादन मिल को स्वयं दिखाने के पीछे उद्देश्य था अनीता के निकट आना। पर इसमें वे सफल नहीं हुए थे और न इसकी कुछ आशा ही थी, अत: वे रूखे स्वर में बोले, "इसका आवश्यक प्रबन्ध कर दिया गया है। आप लोगों को वह शीघ्र ही दिखाया जायगा।"

फिर कुछ रुक कर वे बोले, "आज आप भी काफी थक गये होंगे। अत अब मैं आपसे विदा लेता हूँ।'

[२३]

अशोक ज्यों-ज्यों मगल लोक की बातों से परिचित होता जाता था, त्यों-त्यों उसके दिमाग मे मगल लोक का नक्शा साफ होता जाता था। उसने मगल लोक के महामानवो को मानसिक दासता से मुक्ति दिलाने की एक योजना भी बनाली थी, पर वह चाहता था कि मगल लोक की व्यवस्था का थोड़ा अध्ययन और करले, तभी अपनी योजना को अमल मे लाना शुरू करे। इसलिये महामानव निर्माता द्वारा 'मातृ मन्दिर' को देखने का निमन्त्रण उसने तुरन्त स्वीकार कर लिया और एक दिन—जोन, टोनी और डोनाल्ड के साथ वे मातृ मन्दिर को देखने के लिये पहुँच गये। मातृ मन्दिर की सचालिका श्रीमती पिमरे थी। स्वय वे भी अशोक से मिलने के लिए बहुत आतुर थीं। कई बार उन्होंने अशोक से मिलने के प्रयत्न भी किये थे किन्तु जोन ने बार-बार उनको हतोत्साहित किया था। आज जब उनको पता चला कि हम लोग मातृ मन्दिर को देखने के लिए आ रहे हैं तो वह बहुत खुश हुई। मातृ मन्दिर के भीमकाय भवन की छत पर हम लोग गगन गाडी से जब उतरे तो वे कार्यालय के द्वार पर हमारा स्वागत करने के लिए स्वय खडी थी। हम लोगों का आपस मे परिचय कराया गया। उसके बाद हमको मातृ मन्दिर के मुख्य-मुख्य विभागों को देखने के लिए ले जाया गया।

सबसे पहले जिस कमरे में हमने प्रवेश किया उस कमरे मे कांच की बड़ी-बड़ी मेजें लगी हुई थीं। इन मेजों पर गुलाब, वासन्ती, माधवी, मल्लिका, चम्पा आदि रूप और गन्ध से खिल-खिलाते हुए तथा निर्गन्ध किन्तु आकर्षक पुष्पों के गुलदस्ते बड़े ढङ्ग से सजे हुए थे। इनके बीच में स्थान-स्थान पर चित्रों वाली पुस्तकें खुली हुई रखी थीं। इनमे मछलियों, पशुओं और पक्षियों के चित्र थे। हमारी समझ में कुछ नही आया कि इस लम्बे चौड़े कमरे में इतनी बड़ी-बड़ी मेजें इतनी सख्या मे क्यों हैं और उन पर फूलों और पुस्तकों के रखने का क्या प्रयोजन है। संचालिका ने पास खड़ी एक श्वेत वस्त्रधारी परिचारिका को संकेत करके कहा—'बच्चों को ले आओ'।

इतना कहना था कि अनेक परिचारिकायें लगभग आठ-आठ माह के शिशुओं को लाकर मेजों पर बिठाने और लिटाने लगी। सभी शिशुओं का रूप रंग एक-सा था। शिशुओं को मेजों पर छोड़ दिया गया तो वे उन पर रेंगने से लगे। वे फूलों और पुस्तकों से उलझ गए। बच्चे हँस-हँस कर फूलों को तोड़ने और पुस्तकों को फाड़ने लगे। तभी संचालिका ने पुनः उसी परिचारिका को आज्ञा दी—'इनको पूर्व भाग्य रचियता द्वारा निर्देशित वातावरण के प्रति अभ्यस्त बनाने का कार्य आरम्भ करो।'

ऐसा लगता था कि वह शायद मुख्य परिचारिका थी। उसने एक बटन दबा दिया। एक भयानक शोर निकलने लगा जिससे कान फटने लगे। शिशुगण इस आवाज को सुन कर फूलों और

पुस्तकों के साथ खेलना भूल गये। भय के कारण पुस्तकों और गुलाब के फूल उनके हाथों से गिर पड़े और वे जोर-जोर से चीखने और चिल्लाने लगे। कुछ क्षण बाद ही मुख्य परिचारिका न दूसरे बटन को दबा दिया। हमने देखा कि शिशु बड़े जोर से चीखे और धीरे-धीरे मुरझाने से लगे। अशोक ने भूल कर एक मेज पर हाथ रख दिया। उसको एक साधारण-सा विद्युत आघात लगा। वह समझ गया कि बच्चों को विद्युत आघात दिया गया है। शिशु जोर से चिल्लाते और रोते रहे। संचालिका ने मुख्य परिचारिका को प्रदर्शन बन्द करने का आदेश दिया। घण्टियों की ध्वनि बन्द हो गयी फिर भी सभी शिशु सिसक-सिसक कर रो रहे थे और अनीता भी सिसकी भर रही थी। संचालिका ने पुन: आदेश दिया—'फूल और पुस्तकों को शिशुओं के पास लाओ।'

फूलों और पुस्तकों को शिशुओं के पास लाया गया किन्तु यह क्या हुआ? सारे शिशु अबकी बार फूलों और पुस्तकों को देख कर भी रोने और चिल्लाने लगे और उनसे दूर भागने का यत्न करने लगे। हम कुछ न समझ सके। संचालिका ने मुख्य परिचारिका को शिशुओं को पुन: वापिस ले जाने का आदेश दिया। संचालिका के आदेश से वही परीक्षण शिशुओं के एक दूसरे वर्ग पर दोहराया गया। इस बार के प्रदर्शन में पहले शिशुओं को पुस्तकों द्वारा खेलने दिया गया, फिर फूलों द्वारा खिलाया गया और फिर विद्युत आघात दिया गया। विद्युत आघात के पश्चात् शिशुओं के सामने पुस्तकें रखी गई तो वे उनसे खेलने लगे, पर जब उनके सामने फूल लाए गए तो वे चीखने चिल्लाने लगे।

शिशुओं के चले जाने के बाद संचालिका ने हमारी ओर देखा और कहने लगी—'आपने जो कुछ अभी देखा वह अमहा-मानुषिक दृश्य आपको जानबूझ कर नहीं दिखाया गया था। यह तो महामानवों को उनके भावी जीवन के अनुरूप बनाने का शिक्षण दिया जा रहा है। फूलों और पुस्तकों से खेलना शिशुओं का जन्म-जात स्वभाव होता है। वे इनको पसन्द करते हैं। शिशुओं का शोर और विद्युत आघात से भय खाना भी जन्मजात स्वभाव है। जब फूलों और पुस्तकों को अत्यधिक शोर और विद्युत आघात के साथ सम्बन्धित कर दिया जाता है तो वे फूलों और पुस्तकों से भी भय खाने लगते हैं। इस क्रम को यहाँ पर प्रत्येक 'त' वर्गीय शिशु के साथ छः माह तक प्रतिदिन २०० बार दोहराया जाता है। इसका प्रभाव यह होता है कि वे बड़े होकर फूलों और पुस्तकों से घृणा करने लगते हैं। यदि इस प्रकार के त वर्गीय शिशुओं को बड़ा होकर किसी मनोवैज्ञानिक के पास ले जाया जाय तो वह यही कहेगा कि इन महामानवों का फूलों और पुस्तकों से घृणा करना जन्मजात स्वभाव है।

दूसरी बार के प्रदर्शन में जो शिशु वर्ग लाया गया था वह भविष्य में र वर्गीय महामानव बनेंगे। इनका मानसिक स्तर त वर्गीय महामानवों से थोड़ा ऊँचा रखा जाता है। उनको शिक्षित होना जरूरी होता है, इसलिए उनको पुस्तकों से प्यार करना बचपन से ही सिखाया जाता है। पर यदि उनको फूलों से भी प्यार करना सिखाया जाय, तो वह मंगल लोक की स्थिरता के लिए संकट पैदा कर सकते हैं।

अनीता पर इस अमानुषिक दृश्य की प्रतिक्रिया अत्यधिक तीव्र हुई। उसने कहा—'क्या इसी तरह मगल लोक मे महामानवो को समानता देने का दावा किया जाता है ?'

पियरे को अनीता का कुछ अजीब तरह से मुँह बनाते हुये यह व्यग बुरा नही लगा। अपितु उसने उसी की हाँ मे हाँ मिलाते हुए कहा—यह कभी भी सम्भव नही कि प्रत्येक मनुष्य को एक जैसा काम, आराम और दूसरी चीजें दी जा सकें, पर विज्ञान द्वारा यह सम्भव है कि हर आदमी अपनी स्थिति मे रहता हुआ पूर्ण सन्तोष प्राप्त कर सके। अब उदाहरण के लिए त वर्गीय महामानवो का बहुत कठिन शरीर श्रम करना पड़ता है, यदि इनको फूलो और पुस्तकों से घृणा करनी नहीं सिखाई जाएगी तो यह भी स वर्गीय महामानवो की तरह फूलों और पुस्तकों को प्यार करने लगेंगे और इससे वर्ग सघर्ष को जन्म मिलेगा जिसको मगल लोक मे हर मूल्य पर रोकने का प्रयत्न किया जाता है।

पियरे की इस विचित्र तर्क मे पूर्ण ज्ञान ने अशोक को अनजाने मे ही मगल लोक के विधाताओ के विरुद्ध एक नया अस्त्र दे दिया। दूसरे कमरे मे गए तो हमे मनोविज्ञान विशारद श्री भावानन्द मिले। पियरे को पता नही था कि हमारा उनसे पहले ही परिचय हो चुका है, इसलिए उसने हमारा औपचारिक परिचय कराया। इस कमरे मे २-३ वर्ष के लगभग सौ महामानव शिशु पालनो म सोये हुए थे। इन्होंने पीले रग की पोशाक पहनी हुई थी और पीले रग की चादरों पर ही वे लेटे हुए थे। एक ओर से एक ध्वनि धीरे-धीरे आ रही थी। हमको यह आवाज बडी मधुर लगी

और हम उसको सुनने लगे। ध्वनि कह रही थी, 'हम सब स-म वर्गीय महामानव हैं। हम पीले रंग की पोशाक को बहुत पसन्द करते हैं। र वर्गीय महामानव लाल रग की पोशाक पहनते हैं, वह बहुत भद्दी होती है, वह देखने में बुरी लगती है। हम र वर्गीय महामानवों से मिलना पसन्द नही करते। त वर्गीय महामानव तो र वर्गीय महामानवों से भी बुरे होते हैं। वे खाकी वस्त्र पहनते हैं जो देखने में और भी बुरे लगते हैं। त-अ वर्गीय महामानव तो और भी बुरे हैं। वे काले रंग की पोशाक पहनते हैं। मैं कितना खुश हूँ कि मैं स-म वर्गीय हूँ।'

यह मधुर ध्वनि कुछ क्षण रुक कर फिर बोली—'स-उ वर्गीय महामानव श्वेत वस्त्र पहनते हैं, वे हमसे अधिक काम करते हैं, पर वे भयानक रूप से चालाक होते हैं। उनसे जितना दूर रहा जाय, उतना ही अच्छा है। मैं वास्तव मे बड़ा ही प्रसन्न हूँ कि में स-म वर्गीय महामानव हूँ। मैं इतना कठिन बौद्धिक काम नहीं कर सकता जितना कि स-उ वर्गीय महामानव करते हैं। हम र, त-उ और तअ वर्गीय महामानवों से बहुत अच्छे हैं, स वर्गीय थोड़े बुद्धू हैं। त वर्गीय पूरे बुद्धू हैं और त-अ वर्गीय तो महाभोंदू हैं, मैं इनमें मे किसी के साथ भी खेलना पसन्द नही करता। स-उ वर्गीय महामानव बहुत अधिक चलते पुर्जे होते हैं, उनसे सदैव बच कर रहने में ही भलाई है।'*

---

*स-उ वर्गीय=उत्तम उपवर्ग के सतो वर्गीय महामानव
स-म ,, =मध्यम ,, ,, ,, ,, ,,
त-अ ,, =अधम ,, ,, तमो ,, ,,
र-उ ,, =उत्तम ,, ,, रजो ,, ,,

निद्रा पाठ का उपयोग मंगल लोक की आचरण शिक्षा देने के लिये किया जाता है क्योंकि इसमें समझने की कोई बात नहीं होती, उसको तो केवल स्मरण शक्ति द्वारा रट लेना है। इन रटी बातों के अनुसार आचरण करने के लिये महामानवों के शरीर को पहले से ही शिशु उत्पादन मिल में अभ्यस्त बना दिया जाता है। निद्रा पाठ के द्वारा उस शारीरिक प्रभाव को मानसिक स्तर पर भी उतार दिया जाता है, जिसका प्रभाव जीवन भर बना रहता है।'

इतना कह कर श्री भावानन्द चुप हो गये। हम लोग उस कमरे को छोड़ कर आगे बढ़े। ठीक इसी प्रकार के चार कमरे हमें और मिले। इन सब कमरों में भी शिशु सोये हुये थे और धीमे स्वर में एक ध्वनि उसी प्रकार कुछ वाक्यों को बार-बार दोहराती हुई आ रही थी। अन्तर केवल इतना था कि इन कमरों में क्रमशः स,र,त-उ और त-म वर्गीय शिशु सोये हुए थे और उनको निद्रापाठ में इस बात की शिक्षा दी जा रही थी कि सम्पूर्ण मंगल लोक में वे सर्वश्रेष्ठ वर्ग के हैं। उनके वर्ग में जन्म लेना बड़े गर्व की बात है। मंगल के शेष वर्ग उनसे नीचे हैं। अन्य वर्गों के महामानव जो कुछ भी काम करते हैं वह बहुत ही गर्हित है, उसको करने से उनके वर्ग का अनादर होता है।

इन कमरों में निद्रा पाठ द्वारा वर्ग संघर्ष के बीज बोये जा रहे थे और इसको अशोक तथा अनीता अच्छी प्रकार समझ रहे थे। पर वे यह नहीं समझ पाए कि वर्ग संघर्ष को इतना बढ़ा और तीव्र बनाने के बाद भी प्रधान महामानव निर्माता कौन-से उपाय से मंगल-लोक में वर्ग संघर्ष की जड़ें नहीं जमने देते।

इन कमरों को छोड़ कर हम आगे बढ़े। अनीता का कौतूहल बराबर बढ़ रहा था। उसने श्री भावानन्द को सम्बोधित करके कहा—'इस प्रकार के निद्रा पाठ देने का सिलसिला कब तक चलता रहता है और एक पाठ का प्रभाव शिशुओं पर कितने समय में पड़ता है।'

भावानन्द ने बिना सोचे ही उत्तर दिया—'इस समय जिन प्या का निद्रा पाठ द्वारा शिक्षण दिया जा रहा है वह २०० बार ाज दोहराया जायगा और इसी प्रकार तीन माह तक दोहराया ता रहेगा। उसके पश्चात् अगले तीन माह तक यह शिक्षण एक सप्ताह में तीन बार दिया जायगा। इससे शिशु का अचेतन मस्तिष्क पूरी तरह से प्रभावित हो जायगा जो कालान्तर में उसकी आदत का रूप धारण कर लेगा।'

इस समय हम अब एक बड़े हाल के द्वार पर खड़े थे। अन्दर वाल तो हमने देखा कि ६ वर्ष आयुवर्ग के महामानव बालक-बालिकाएँ सो रहे थे। कुछ अध-जागे पड़े थे। हाल के एक कोने से मन्द स्वरों में एक ध्वनि अपना सन्देश निद्रा पाठ द्वारा सोये हुए महामानव बालकों को सुना रही थी। ध्वनि कह रही थी—'सब सबके लिए, नहीं कोई एक के लिए'। 'प्रत्येक महामानव और प्रत्येक महामानवी का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वह कभी भी किसी एक व्यक्ति के साथ अपने सम्बन्ध स्थाई रूप से न जोड़े।' 'प्रत्येक वर्ग के महामानव और महामानवी का यह अधिकार है कि वह अपने वर्ग के किस व्यक्ति को भी चाहे निशा-निमन्त्रण दे सके।' 'समाज व्यक्ति से

है। समाज हित के लिये व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है।' 'प्रत्येक महामानव अपना-अपना काम करता है तो समाज का काम आगे बढ़ता है।' 'प्रत्येक महामानव प्रत्येक महामानव के लिए काम करता है, हम बिना एक दूसरे के नही रह सकते।' 'सभी उपयोगी है, एक दूसरे के लिए काम करता है प्रत्येक महामानव ....' ध्वनि ने पुनः दोहराना शुरू कर दिया। हम आगे बढे और पियरे से उसका कारण पूछा।

अचानक पियरे जैसे सोते से जाग पड़ी हो, इस तरह वह अपने आप ही बोल पड़ी—'यहाँ निद्रा पाठ द्वारा समाजीकरण की शिक्षा दी जाती है। यह सदेश एक हजार बार सुनवाया जायगा।'

हम इस हॉल से निकल कर दूसरे हॉल में पहुँचे। यहाँ पर आठ वर्ष के बालक बालिकायें सो रहे थे। वही चिर-परिचित ध्वनि एक कोने से बड़े मन्द मन्द स्वरों में आचरण प्रसार का कार्य कर रही थी, 'हम सब केवल महामानव हैं इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। हमारा न कोई मित्र है न कोई शत्रु। सब समाज के लिये एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। वंध्या होना महामानव सभ्यता का प्रमुख चिह्न है ....'।

हमें बताया गया कि उक्त सन्देश निद्रा पाठ द्वारा २० हजार बार सुनवाया जायगा।

तीसरे हाल में हमने प्रवेश किया तो हमें बताया गया कि इस हाल में आठ वर्ष से दस वर्ष तक के बालक सोये हुए हैं। हमने देखा कि दो चार बालक अपने पलंगों पर पड़े हुए करवटें बदल रहे

थे। ध्वनि मद-मद स्वर से बोल रही थी 'व्यक्ति बोला—समाज डोला'। जब व्यक्ति समाज के नियमो की आलोचना करता है तो समाज को स्थिरता को चोट पहुँचती है। 'समाज के नियमो का उल्लघन करना समाज को नष्ट करना है'। 'जो व्यक्ति समाज से विद्रोह करता है उसको नष्ट करना आवश्यक है क्योकि एक व्यक्ति का अर्थ है शिशु उत्पादन मिल की एक बोतल।' पियरे ने बताया 'इस हाल मे इन्ही बातो को निद्रा पाठ द्वारा पचास हजार बार दोहराया जायगा।'

इसके आगे जिस हाल मे हमने प्रवेश किया उसमे १० से १२ वर्ष की आयु के बालक सोये हुए थे। वही पूर्व परिचित ध्वनि यहाँ पर भी अपना सदेश प्रसारित कर रही थी, 'अकेले रहना असभ्यता है, अभिशाप है।' 'जो रहे अकेला उसको दुख ने घेरा।' 'जब महा-मानव अकेला रह तो सोमवटी की शरण गहे' क्योकि 'सोमवटी खाके चिन्ता उदासी भागे।' जो सामाजिक नियमो का जितना पालन करता है सोमवटी की उतनी ही अधिक मात्रा का वह अधिकारी बनता है और जिनके पास जितनी अधिक सोमवटी है वह वेदना, पीडा और चिन्ता से उतनी ही दूर है। इसलिए यह कहावत सच है कि 'सोमवटी नही पास, सब कुछ लगे उदास।'

ध्वनि निद्रा पाठ को पूरा करके रुकी थी कि पियरे ने बताया कि यह भी सदेश ५० हजार बार दोहराया जाता है।

हम आगे बढ़ रहे थे। भवन बराबर आने चले जा रहे थे। जिस हाल मे इस बार हमने प्रवेश किया वह १२ से १४ वर्ष तक के

बालकों का निवास स्थान था। यहाँ पर सभी बालक जाग से रहे थे। पर ऐसा लगता था कि वे मन्द-मन्द ध्वनि से परेशान हो उठे थे और सभी करवटें बदल रहे थे। कदाचित उनके मस्तिष्क में यह ध्वनि बराबर गूँज रही हो। न चाहते हुए भी उनको यह सुननी पड़ रही थी और मस्तिष्क पर टकराने से ही शायद उनको निद्रा आने लगी थी। अशोक को यह सम्मोहन बिल्कुल विचित्र लगा। उसने बोलती हुई ध्वनि को ध्यान से सुना। वह कह रही थी, 'सभी महामानव नवीन वस्त्रों को धारण करते है। नित्य नवीन वस्त्र पहनना सभ्यता है। विलास सामग्री और उपभोक्ता वस्तुओं का जितना उपयोग किया जाता है उसी अनुपात मे समाज की स्थिरता उतनी सीमा तक आगे बढ़ जाती है। इसलिए अपनी इच्छाओं को बढाना, अधिक से अधिक उपभोक्ता पदार्थों का उपयोग करना सभ्यता है।' 'सुधारने से नष्ट करना श्रेष्ठ है।' 'समाज के लिये यदि एक महामानव को नष्ट करना पड़े तो वह उचित है क्योंकि एक व्यक्ति का नष्ट करने का अर्थ है, एक बोतल को नष्ट करना।'

इसके आगे अभी भी दो हाल और थे। पर हम निद्रा पाठ की इस अद्भुत क्रिया को सुनते-सुनते परेशान हो उठे थे। मंगलग्रह की यह प्रक्रिया जिसमें भोले भाले महामानवों को एक विशेष वातावरण के प्रति अभ्यस्त बनाने के प्रयत्न किये जा रहे थे हमको बहुत ही क्रूर लगी।

पियरे भी अन्य महामानवीयों की तरह अशोक को एक बार निद्रा निमन्त्रण देने के लिये लालायित थी। उसने यही अवसर उपयुक्त देखा

और दोनों 'मंगललोक की सभी महामानवीयां यह चाहती हैं कि आप उनका कम से कम एक-एक बार तो निशा-निमन्त्रण स्वीकार करलें और मैं भी उनमें से एक हूँ।'

अशोक कुछ विरक्त भाव से बोला, 'मुझे ज्ञान नहीं यह निशा-निमन्त्रण क्या है और न मैं इसके विषय में अधिक जानना ही चाहता हूँ क्योंकि मुझे महामानव सभ्यता का यह पक्ष बिलकुल पसन्द नहीं है।' इतना कहकर वह आगे बढ़ गया और हम सभी मातृ मन्दिर से वापस लौट आये।

[२४]

मदालसा अनीता से अनेक बार आग्रह कर चुकी था कि वह भी महामानवियों से उसके सम्पर्क बनाये। एक दो बार अशोक ने भी उसको इस बात का संकेत दिया था, क्योंकि वह चाहता था व सोचता था कि सम्भव है कि अनीता कुछ महामानवियों का विचार-परिवर्तन कराने में सफल हो सके। इसलिये एक दिन अनीता मदालसा के साथ महामानवी मनोविनोद गृह में पहुँच गई। मदालसा ने अनीता का उपस्थित सभी महामानवियों से परिचय कराया। वैसे वनस्पति प्रदेश की सभी महामानवियां उससे परिचित थीं, और वे उसे बड़ी ईर्षा की दृष्टि से देखती थीं। उसके विषय में इन सभी का यह विचार बन गया था कि अनीता ने ही अशोक को महामानवियों से मिलने जुलने पर रोक लगाई हुई है। मारगरेट अनीता को सामने पाकर अपनी इस भावना को न रोक सकी। वह अनीता को लक्ष्य करते हुए बोली, 'मंगल लोक में 'सब सबके लिये, नहीं कोई एक के लिये' नियम पालन किया जाता है। यह नियम इतना

रही थी। उसकी बातों ने ऐनी के मन में कुछ ऐसी विचित्र गुदगुदी पैदा कर दी थी कि उसने बहुत धीरे से मारगरेट के कान में कहा, "काश मैं भी स्वाधीन होती, मेरा भी परिवार होता और मैं भी प्रेम और वात्सल्य का रसास्वादन कर पाती।" मारगरेट ने मुंह बिचका दिया और ऐनी से कहा—"यह तुम्हारा अपराध नहीं, यह तो तुम्हारी बोतल को दिये गये गलत टीके का कसूर है।"

उधर अनीता कह रही थी—'आप सोमवटी के वशीभूत होकर महामानवी तो क्या सामान्य नारी के कर्तव्यों से वंचित हो गयी हैं। मैं आपके इसी सम्मोहन को तोड़ना चाहती हूँ। मंगल लोक में सबसे बड़ी गलती यह हो गयी है कि यहाँ पर नारी और पुरुष को हर तरह से समान मान लिया गया है।'

अनीता की बातों को सुनकर सभी महामानवीयां खिलखिलाकर हँस पड़ी और मारगरेट इस प्रकार बोली जैसे उसने सभी के मन की बात कह दी हो, 'बर्बर भू लोक की नारी से और क्या आशा की जा सकती है इसलिये इसमें तुम्हारा अपराध नहीं। जिस दिन तुमको इस बात की अनुभूति हो जायगी कि मंगल लोक में महामानव और महामानवी की समानता सभी प्रकार वास्तविक है, वह भावुकता पर आधारित नहीं है तो तुम भी महामानवी होने का स्वप्न देखोगी।'

"नहीं और कभी नहीं। क्योंकि मैं जानती हूँ और वैज्ञानिक तथ्यों द्वारा भी यह सिद्ध हो चुका है कि पुरुष और नारी में केवल लिंग का ही अन्तर नहीं, बल्कि उनका अन्तर मौलिक है। नारी के एक एक अंग पर, एक एक कोशाणु पर और एक एक विचार पर नारीत्व की छाप पड़ी हुई है। इसको मंगल लोक के वैज्ञानिक भी अलग नहीं

कर सकते। मैं पूछती हूँ कि बोतल से केवल पुरुष वर्ग को ही क्यों नहीं पैदा किया गया। नारी की आवश्यकता ही क्या थी ?"

अनीता की इस बात ने सभी महामानवियों को निरुत्तर कर दिया। पर केवल एनी को ही अनीता की बातों में सच्चाई जान पड़ी। अनीता ने कहा, "मैं बताती हूँ क्योंकि मंगल लोक के विधाता नारी का शोषण करना चाहते हैं। नहीं तो जिस समाज में नारी का अस्तित्व मान लिया गया है वह समाज यदि मातृत्व को नहीं मानता तो निश्चित रूप से उसका विनाश एक न एक दिन हो कर ही रहेगा, क्योंकि माता के बिना नारी का जीवन अधूरा है। सन्तान हीन नारियां सदा ही एक हीन भावना से ओत प्रोत होती हैं और उनका जीवन निराशा से भरा होता है।'

नलिनी ने हँसते हुए कहा—'पर हम लोगों को तो निराशा जैसे शब्द का अर्थ भी पता नहीं।'

एनी अचानक ही बीच में बोल उठी, 'पता चले भी कैसे, जब सोमवटी का उपयोग हम लोग बराबर करते हैं।' अन्य सभी महामानवियों ने ऐनी को बहुत ही क्रोध भरी दृष्टि से देखा। और अनीता को भी ऐनी की बातों से कुछ आश्चर्य हुआ। उसे लगा कि उसका महामानवियों के बीच में आना सफल हुआ। वह और जोर से बोली, 'लेकिन एक न एक दिन आप सभी को सोमवटी के सम्मोहन को छोड़ना होगा और उस दिन आपको अपनी वास्तविक स्थिति का पता चलेगा। मैं कहती हूँ कि आप सभी की विचार शक्ति कुण्ठित हो गयी है' आपका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं रहा है और जिस कृत्रिम मनोवै-

ज्ञानिक वातावरण में महामानव शिशुओं को पाला जाता है उससे यह रह भी कैसे सकता है !"

अनीता शायद और भी कुछ कहती पर तभी मारगरेट बीच में बोल उठी, 'यह महामानव समाज के प्रति खुल्लमखुल्ला विरोध है। तुमने मंगल लोक के नियम 'व्यक्ति बोला समाज डोला' को भंग किया है। क्या तुम्हें पता नहीं कि जो महामानव समाज की स्थिरता को नष्ट करने की कोशिश करता है यहाँ पर उसको ही नष्ट कर दिया जाता है क्योंकि एक व्यक्ति का मूल्य ही क्या है केवल एक बोतल को १६०० मीटर घुमा देना।'

अनीता समझ गयी कि मारगरेट बचपन में पढ़े निद्रा पाठ को ही दोहरा रही है। लेकिन उसने अब महामानवियों के बीच में रहना अधिक उचित नहीं समझा और वह तुरन्त ही वहाँ से चल दी।

अनीता के जाते ही वातावरण में एक सन्नाटा सा छा गया। कुछ क्षण तक तो महामानवियां कुछ बोल नहीं सकीं, पर तभी सबको जैसे याद आ गया कि 'सोमवटी खाके, चिन्ता उदासी भागे' और सब ने एक एक सोमवटी खायी और सभी खिलखिला कर हँस पड़ी। पर ऐनी अभी तक उदास बैठी थी। उसने आज समझा कि मंगल लोक के विधाताओं ने नारी के चारों ओर कितना बड़ा इन्द्र जाल फैलाया हुआ है। उसे पहली बार जीवन में निराशा का अनुभव हुआ और वह चुपचाप उठकर बिना सोमवटी खाये अनीता से मिलने के लिये चली गयी।

नही करनी पड़ती। बुढ़ापे का दर्शन ही नहीं होता क्योंकि मरने के समय तक न मुख पर झुर्री पड़ती है और न दांत गिरते हैं। बूढ़े और युवक सभी समान दिखाई पड़ते हैं। दस कदम के लिये भी गगन गाड़ी उपस्थित है। ऐसी दशा में यदि महामानवों ने अपने बारे मे चिन्तन करना छोड़ ही दिया तो अनुचित ही क्या है।'

'पर यह जीवन तो मृत्यु से भी बदतर है।' अशोक ने कहा

"आपका कहना ठीक है। हम भी यह समझते हैं कि अत्याधिक मानसिक दासता के कारण हम सम्भोग और कृत्रिम वातावरण के आदी हो गये हैं। पर हम करें भी क्या, क्योंकि महामानव शिशुओं को आरम्भ मे ही यौन स्वच्छन्दता का पाठ पढ़ाया जाता है और जब कभी वह सोचने के लिए मजबूर भी होता है तो उसको सोमवटी दे दी जाती है।" मनोवैज्ञानिक श्री भावानन्द अपनी बात को आगे बढ़ाते हुये बोले, "महामानवों को जब यौन सम्बन्धों से मुक्ति मिलती है तो इनके दिमाग को अमूर्त तथ्यों को समझने में लगा दिया जाता है।"

समन्वय-विज्ञान विशारद श्री बोस ने देखा कि अशोक और अनीता उनकी बातों को नहीं समझ पाये हैं इसलिये उन्होंने कहा, मंगल लोक में प्रश्न यह है कि जो कुछ आज चल रहा है उसे वैसा ही चलने दिया जाये या उसमें सुधार भी किया जा सकता है। हम सभी यहां इसी लिए उपस्थित हुए हैं। महामानव समाज में यौन सम्बन्धी स्वच्छन्दता को हमारे लिए सहन करना असम्भव हो गया है। यदि हम इसका विरोध करते हैं तो सभी महामानव हमारी

बातो को यह कह कर टाल देते हैं कि हमारी बोतलो मे गलत टीके लगने के कारण यह सब हुआ। लेकिन असलियत यह है कि सम्पूर्ण महामानव समाज को इसके विधाताओ ने एक माया मे फसाया हुआ है। मगल लोक मे याचन से निस्तारा मिला तो कामिनी को इतना वृहताकार कर दिया कि महामानव समाज का सम्पूर्ण चिन्तन मनन उसी मे डूब गया। हम आज इसी से मुक्ति चाहते हैं। हम कहते हैं कि नारी की आवश्यकता ही नही है क्योंकि जिस भौतिक आवश्यकता के लिए युग युग से पुरुष का नारी को जरूरत होती आई थी वह हमने बोतलो से शिशु पैदा करा कर खत्म कर दी है और जिन मानवोत्तर गुणो का नारी मे निवास है वे सभी बोतलो मे भौतिक-रसायनिक क्रियाओ के द्वारा नष्ट कर दिए गये हैं। केवल यौन सम्बन्धो के लिये नारी का अस्तित्व रखकर मगल लोक के विधाता हमारे साथ बहुत बडा षड्यन्त्र रच रहे है। अब आप ही बताइये, हम क्या करें?'

अशोक को पता नही था कि कि महामानव इस तरह भी सोच सकते हैं। अनीता तो यह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि बिना नारी के कोई समाज स्थापित भी किया जा सकता है। पर विज्ञान ने मगल लोक मे मनुष्य को ऐसी स्थिति मे ला पटका था कि या तो केवल पुरुष रहे या केवल नारी। नारी पुरुष दोनो को ही रखने के लिये मगल लोक के सामाजिक सदर्भ को ही पूरी तरह बदलना जरूरी था। इसी बात को समझाते हुये अशोक ने कहा, 'यह तो असम्भव ही लगता है कि मगल लोक के भाग्य विधाता इस बात को मान लें कि नारी या पुरुष मे से केवल एक वर्ग ही रहे, और यह आपके

हाथ की बात भी नहीं है, पर आप लोग यह तो कर ही सकते हैं कि महामानव और महामानवियों में उन सम्बन्धों को स्थापित कराने का प्रयत्न करें जिनसे मनुष्य मात्र में करुणा, प्रेम और वात्सल्य का उदय होता है।'

तभी अचानक ऐनी ने प्रवेश किया और वह बोली, 'मैंने अशोक जी की बातें सुन ली हैं और मैं चाहती हूँ कि हम सभी इस बारे में उनके परामर्श के अनुसार चलें क्योंकि हम सबका विकास तो यहाँ एकांगी ही हुआ है, पर अशोक जी को भूलोक में स्वतन्त्र चिन्तन का अवसर मिला है।'

ऐनी की बात सभी को पसन्द आई। पर अशोक जल्दी में कोई निर्णय लेना नही चाहता था, इसलिये उसने कहा, 'मुझे आप दो दिन के लिये सोचने का अवसर दें।'

श्री बोस ने कहा, 'ठीक है हम दो दिन बाद फिर यहीं मिलेंगे।' इतना कह कर सबने विदा ली।

[२५]

जब तक महामानव बैठे हुए थे, तब तक अनीता अपने को भुलाये हुए थी। पर उनके जाते ही उसने अशोक से कहा, 'अब मैं मंगल लोक में नहीं रह सकती। यहाँ की यौन-स्वछन्दता और अनियंत्रित व्यभिचार से पूर्ण कृत्रिम वातावरण में मेरा दम घुट रहा है।'

अशोक कुछ चौंकता हुआ सा बोला, 'अनीता, आज तुम यह क्या कह रही हो?'

'मैं ठीक ही कह रही हूँ अशोक', अनीता ने कहा, 'यह महा-

मानव समाज केवल इच्छाओं का दास है। यहाँ के शब्द स्पर्श, रस, रूप और गन्ध मे कूट कूट कर राग और व्यभिचार भरा हुआ है। मोमबत्ती जैसे निकृष्ट पदार्थ ने इनके जीवन को यन्त्रवत बना दिया है जिसके कारण जीवन का अर्थ यहाँ केवल यौन सम्बन्ध तक ही रह गया है। यहाँ के मनोविनोद और सम्भोगगृह इन्ही निम्न भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं। कहने को तो ये महामानव बनते हैं पर इनके सभी कार्य पशुओं से भी निम्न स्तर के हैं।'

अशोक अनीता को बीच मे ही टोकता हुआ कुछ गम्भीर होकर बोला, 'पर अनीता यह सब आज कहने का तुम्हारा तात्पर्य क्या है?'

अनीता को अशोक से इस प्रकार के प्रश्न की आशा न थी इसलिये कुछ क्षण के लिये तो वह झिझकी पर फिर साहस एकत्र कर बोली, 'मैं भूलोक, अपनी मातृ भूमि वापिस जाना चाहती हूँ। मैं पृथ्वी की उस उषा के दर्शन करना चाहती हूँ जो प्रतीची मे अपना अवगुण्ठन खोल कर सम्पूर्ण नीलगगन को अपने अरुण आचल से नित्य प्रति आच्छादित करती है। मैं उस दृश्य को देखना चाहती हूँ जब उषा की सुनहली गोद से अंशुमाली धारण कर भगवान भास्कर अपने स्वर्णिम रथ पर आरूढ हो सम्पूर्ण भूतल पर अपनी स्वर्ण किरणों को लुटाते हैं। जिसके कारण ओस की मोती की लड़ियाँ तिरोहित हो जाती हैं, नीरजा के अधरो पर मुस्कान रेंगने लगती है और कुमुदनी लज्जा से मुख को छिपा लेती है। मैं मातृ भूमि की उस अलसाई दोपहरी में जाना चाहती हूँ जब अमिताभ के भीषण उत्ताप से धरा शतप्त हो उठती है। मैं धरती की उस साँझ का आलिंगन करना चाहती हूँ जिसके आने पर पक्षीगण अपने

नीड़ों की ओर जाने लगते है। मैं उस यामिनी का दर्शन करना चाहती हूँ जिसके आते ही तारे गगन में जगमगा उठते हैं और नभ प्रांगण मे तिमिर और आलोक का द्वन्द छिड़ जाता है। चलो, इस अन्धकार से पूर्ण अमंगल लोक को छोड़ कर अपनी उसी ज्योतिर्मयी पृथ्वी पर चलें।'

अनीता इसके आगे और कुछ न कह सकी। अशोक समझ गया कि महामानवियों के व्यवहार से अनीता को मार्मिक पीड़ा हुई है। वह उसके थोड़ा निकट आकर बोला, 'अनीता आज तो तुम दार्शनिक बन गई हो। सभी प्रकार से निवृत्ति चाहती हो। पर तुम यह क्यों भूल जाती हो कि तुम यहाँ पर मानव की यात्रा को मंगल मय बनाने के लिये कार्य कर रही हो। क्या तुम्हे ज्ञान नहीं कि तुम्हारा यहाँ कार्य एक दिन इस महामानव सभ्यता को आलोक प्रदान कर सकता है। लक्ष्य के इतने समीप आकर तुम इतनी निराशापूर्ण बातें क्यों करती हो। यह माना कि यहाँ जीवन केन्द्र-बिन्दु से उसके विस्तार वृत्त की ओर जा रहा है। पर ये समस्त लौकिक भोग अनिश्चित और अस्थायी हैं क्योंकि भौतिकता केवल सीमित सुख का साधन है। उससे मनुष्य की आत्मा को कभी तृप्ति नहीं हो सकती। पर तुम्हारी सम्पूर्ण संसार से निवृत्त होकर एक कोने में अकेले बैठने की इच्छा भी तो उतनी ही पलायनवादी है।'

फिर अनीता को समझाता हुआ अशोक कहने लगा, 'आखिर पलायन किसे कहते हैं, पराजित और निराश जीवन को ही न। जिस प्रकार मंगल लोक की विज्ञान के बाह्य उपकरणों और वैभव तथा ऐश्वर्य पर पल्लवित होने वाली संस्कृति असफल जीवन से

पलायन होने का परिणाम है उसी प्रकार युगों से चला आने वाला निवृत्ति मार्ग भी केवल आत्म प्रवचना ही है। इन दोनों का ध्येय जीवन की निष्फलता को भुलाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं। वाह्य त्याग और बलिदान उतना ही अस्वस्थता सूचक है जितनी उत्तेजनात्मक आसक्ति और भोग। इस भौतिक प्रवृत्ति और आत्मिक निवृत्ति को ही प्रकृति और पुरुष, माया और ब्रह्म कहा गया है। पर तुम्हें तो समस्त द्वन्द को मिटाना है। इसके मिटते ही आनन्द और समास तत्व का उदय हो जायगा। विश्वात्मा का यही चिर मंगल तत्व शिव है। इसी से मानव और महामानव का भेद समाप्त होगा और इसी से वह सर्वोच्च शक्ति हम सब की स्थूलतम चेतना में अवतरित होगी।

अशोक की बातों ने अनीता को निस्तब्ध कर दिया। उसे आज अशोक में सम्पूर्ण मानव के दर्शन हुए। छलछलाते नेत्रों से वह अशोक की ओर देखती हुई बोली—'मुझे क्षमा करो, क्षणिक भावुकता में आकर मैं अपने कर्तव्य को भूल गई थी। तुमने जो मुझे आज ज्ञान दिया है, उसे मैं जीवन पर्यन्त न भूलूंगी। पहले मैंने अपना जीवन तुम्हें समर्पित केवल भावनावश किया था, आज तर्क और ज्ञान की कसौटी पर चढ़ा कर उसे तुम्हें समर्पित कर रही हूँ।' अनीता इसके आगे और कुछ न कह सकी।

[२६]

अशोक और अनीता जब इस तरह बातें कर रहे थे तो अचानक जोन के साथ टोनी ने कमरे में प्रवेश किया। वह कुछ परेशान था। उसने हमें देखते ही कहा—'मदालसा की तबीयत अचानक खराब हो गई है। आज मैं और डोनाल्ड दिन में उसको प्रादेशिक चिकित्सालय मे ले गये थे। वहाँ पर उस की परीक्षा की गई। मुख्य चिकित्सक ने बताया कि अत्यधिक सोमवटी पान से उसका शरीर जर्जर हो चुका है और महामानवों के साथ अत्यधिक यौन क्रीड़ा इस मानवी को सहन नहीं हो सकी है, इसलिए अब वह बच नहीं सकती।'

अशोक और अनीता ने यह सुना तो उनको भारी आघात पहुँचा और उन्होंने चिंतित स्वर में कहा—'इस समय मदालसा कहाँ है ?'

'उसको प्रादेशीय महामानव निर्माता की आज्ञानुसार मृत्यु-गृह में पहुँचा दिया गया है।'

'यह मृत्यु-गृह क्या चीज है ?'—अचानक अनीता ने पूछा।

'जब मंगल लोक में किसी महामानव का अन्त समय निकट आ जाता है तो उसको मृत्यु-गृह में भेज दिया जाता है, वहाँ पर उसके चारों ओर इस प्रकार का वातावरण रखा जाता है ताकि वह शान्ति से मर सके। औषधि विज्ञान के अत्यधिक विकसित होने के कारण मरने से एक क्षण पूर्व तक भी शरीर के किसी भी अङ्ग में कोई पीड़ा नहीं होती। मृत्यु आमुख व्यक्तियों के लिए मृत्यु-गृह में अत्या-

धिक मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं, जिससे मरते समय तक वे मृत्यु से किसी भी प्रकार भयभीत न हो। इसी मृत्यु-गृह मे मदालसा भेजी गई है।'

अशोक मदालसा के बारे मे अत्यधिक चिन्तित हो गया था, इसलिए उसने पूछा—'क्या वहाँ पर हम लोग इस समय नही जा सकते ?'

'इस समय तो आपको वहाँ जाने के लिए आज्ञा नही मिल सकेगी, कल किसी समय आप वहाँ पर जा सकते है'—इतना कहकर टोनी अपने कमरे मे चला गया।

अशोक ने जोन से पूछा—अब क्या किया जाय। आप जानते हैं कि मदालसा हमारे साथ पृथ्वी से यहाँ पर आई है उसके प्रति भी हमारा कुछ कर्त्तव्य है। हमे वह पूरा करना चाहिए।'

'लेकिन इसमे चिन्ता जैसी कोई बात नही है। कल प्रातःकाल ही मैं प्रादेशिक महामानव निर्माता से आपके लिए मृत्यु-गृह का आज्ञा-पत्र ले आऊँगा।'

'हम मदालसा से यथासम्भव शीघ्र मिलना चाहते हैं। इसके लिए आप जो कुछ भी कर सकते हैं, वह कृपया तुरन्त करें।' इतना कह कर अशोक अपने पलग पर पड गया। उसे पता नही कि कब जोन कमरे से गया। उसको अब तक मदालसा के पतन पर दुःख था, पर अब उसके हृदय मे उसके लिए सहानुभूति उमड रही थी। वह सोच रहा था कि यदि मदालसा का पर्याप्त ध्यान रखा जाता तो उसकी ऐसी दशा न हो पाती। वह रात भर करवटें बदलता रहा।

उसका मन विक्षोभ से भर गया। वह अपने को दोषी समझने लगा और इसी उधेड़ बुन में उसकी सारी रात निकल गई। अनीता यह सब देख कर भी चुप रही।

दूसरे दिन प्रातः काल ही जोन की सहायता से अशोक ने प्रादेशिक महामानव निर्माता से मृत्यु-गृह में जाने का आज्ञापत्र ले लिया। अशोक, अनीता और जोन तीनों गगन गाड़ी द्वारा मृत्यु-गृह में पहुँच गये। जोन ने मृत्यु-गृह के अधिकारी को आज्ञापत्र दिखा कर उस कमरे मे प्रवेश किया जिसमें मदालसा लेटी हुई थी।

कमरे में श्मशान जैसी शान्ति व्याप्त थी। यह काफी बड़ा कमरा था, दोनों ओर एक निश्चित दूरी पर बहुत-से पलग दो कतारों में लगे हुए थे। सभी पर महामानव लेटे हुए थे। उनको देखने से ऐसा लगता था जैसे वे अफीम की पिनक में पड़े हों। कमरे के बीच में दो पलंगों के आमने-सामने एक-एक चलचित्र-पट लगा हुआ था और उन पर तरह-तरह के चलचित्र दिखाए जा रहे थे। पलंग काफी ऊँचे थे। 'इतने ऊँचे कि उन पर लेट कर भी चलचित्रों को देखा जा सकता था। प्रत्येक दो पलंगों के बीच में एक-एक परिचारिका बैठी हुई थी, जो समय-समय पर पलंगों पर पड़े महामानवों को सोमवटी की एक निश्चित मात्रा खिलाती रहती थी। जोन से पूछने पर पता चला कि ये सभी महामानव कुछ ही दिन के मेहमान हैं। पर हमने उनके मुख पर किसी प्रकार की व्यग्रता के चिह्न नहीं देखे। अशोक मदालसा को देखने के लिए बड़ा व्यग्र था, इसलिए वह आगे बढ़ता गया। कमरे के अन्त में एक पलंग पर

लगती। डोनाल्ड इस कार्य मे सिद्धहस्त है। हेनरी भी सुन्दर युवक है पर वह झेंपता बहुत है। ....खेल घर में वे छोटे-छोटे बालक यौन खेलो को खेलते हुए कितने अच्छे लगते हैं। इसी कारण उनको बड़े होकर कुछ भी करने मे संकोच नही होता। मुझे तो फिर भी थोड़ी बहुत हिचक लगती है। हा-हा-हा मंगल लोक कितना अच्छा है।'—इतना कह कर वह चुप हो गई। परिचारिका ने उसको सोमवटी खिलाई और वह फिर मस्त होकर चलचित्रों को देखने लगी।

अशोक और अनीता को मदालसा की ये बातें बिल्कुल भी नहीं सुहाईं। वे मदालसा से सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए आए थे, पर मदालसा को उनकी सहानुभूति की कोई आवश्यकता ही नही थी। अशोक ने मदालसा से बोलने का कुछ प्रयत्न किया, किन्तु उसने अशोक को पहचानने से साफ इन्कार कर दिया। मदालसा से ध्यान हटा कर अशोक और अनीता ने मृत्यु-गृह की परिचारिकाओं पर दृष्टिपात किया। हमने देखा कि किसी भी परिचारिका के मुख पर उस प्रकार का गम्भीर भाव नहीं था, जैसा कि मृत्यु-गृह में होना चाहिए था। कमरे के वातावरण को देख कर कोई यह नहीं कह सकता था कि इसमे ऐसे लोग पड़े हुए हैं, जिनका अन्त समय निकट है। रोगी बड़े आराम के साथ चलचित्रों को देख रहे थे।

मदालसा ने फिर प्रलाप आरम्भ कर दिया था। वह कह रही थी — 'मुझे सबसे बड़ी परेशानी यहाँ इसलिए हुई क्योंकि बाँझ नहीं हूँ। मेरी, नीलिमा और मारगरेट सभी बिना गर्भाशय के पैदा हुई हैं, इसलिए उनको इन्द्रियजनित सुख का भरपूर आनन्द

मिला है। पर एक मैं अभागी हूँ। मैंने जब कभी भी उनसे सन्तान के विषय में बातें की, उन्होंने मुझे प्रतिगामी कह कर मेरा मज़ाक उड़ाया। पर मैं किस प्रकार माता-पिता, भाई-बहिन के विचारों को निकाल सकती थी। कभी-कभी मेरे मन में हैनरी के प्रति मोह पैदा होता और उसको अपना समझने लगती। पर हैनरी मेरे साथ सब कुछ करके भी मुझे ऐसे भूल गया, जैसे मुझे वह जानता ही न हो।'

हम मदालसा की इन बातों को सुनते-सुनते तंग आ गए थे। हम नहीं चाहते थे कि हम वहाँ पर एक क्षण भी रुकें और उसके पास रुकना भी अर्थहीन था, क्योंकि वह अध पतन की अन्तिम सीमा तक पहुँच चुकी थी। इसलिए हम मदालसा को इस प्रकार की बातें करता छोड़ कर कमरे से बाहर निकल आए। हमने उसी समय कमरे में कुछ र वर्गीय बच्चों को प्रवेश करते हुए देखा। अनीता ने जोन से पूछा—'ये बच्चे मृत्यु-गृह में क्या कर रहे हैं?'

"इनको मृत्यु के प्रति अभ्यस्त बनना सिखाया जा रहा है। मृत्यु आने पर यह निर्भर रहें, किसी प्रकार का उन्हें डर न लगे, इसलिये यहाँ के प्रत्येक कमरे में उनको घुमाया जायगा।"

अनीता को यह कुछ अजीब सा लगा। उसने जोन से आग्रह किया कि वह उनको मृत्यु के प्रति अभ्यस्त होता देखना चाहती है।

अशोक का मन वहीं और था इसलिये अशोक को वहीं पर छोड़ कर अनीता और जॉन उस कमरे में घुस गये। अनीता ने देखा, र वर्गीय जुड़वा बच्चों में से सभी की पोशाक एक सी है, और आकार एक सा है। कम गले में एक एक पट्टी पड़ी हुई है जो उनकी भिन्नता को प्रगट कर रही है। उनके साथ दो निरीक्षक भी थे।

दोनों बच्चों को काल के मुख में पड़े महामानवों को दिखा दिखा कर कुछ बातें बता रहे थे। एक निरीक्षक कह रहा था 'यह महामानव इस दुनिया में चार दिन का और मेहमान है, पर तुम देखते हो इसके मुख पर किसी प्रकार की शिकन नहीं, घबराहट नहीं, यह गले में पड़े हुए चलचित्र का रसास्वादन कर रहा है।' निरीक्षक आगे बढा। दूसरे पलंग के निकट पहुँच कर बोला, 'यह महामानव कल शाम तक मर जायेगा, पर इसको देखो यह कितना प्रसन्न है। कोई भी बालक उससे बातें कर सकता है।'

र वर्गीय एक बालक आगे बढ़ा। उसने रोगी से पूछा "आपको कोई कष्ट तो नहीं। आपको पता है आप कल तक मर जावेंगे।" मदहोश रोगी ने उत्तर दिया, "मुझे कोई कष्ट-वष्ट नहीं है, मैं मजे में पड़ा चलचित्र देख रहा हूँ। अभी थोड़ी देर में जब मैं चलचित्र देखता देखता ऊब जाऊँगा तो मेरे कानों के पास लगे यांत्रिक संगीत यंत्र से संगीत की मधुर लहरें उठने लगेंगी। मैं उनको सुनता सुनता झूमने लगूँगा। कल को मरना है, क्या इसी चिन्ता में मैं अपने आज को खराब कर डालूँ। इतना कहकर वह रोगी हँस पड़ा। अनीता ने देखा रोगी का मुख दाँतों से भरा है, उसके बाल काले हैं और झुर्री का नाम निशान तक नहीं है, यद्यपि उसकी आयु १०० वर्ष हो चुकी है।

अनीता इस नाटक को अधिक समय तक नहीं देख सकी, वह जोन को लेकर बाहर निकल आई। अशोक अभी तक भी मदालसा की मृत्यु से अधिक उसके पतन के आघात से मुक्त नहीं हुआ था।

सलिए गम्भीर मुद्रा में वह अनीता और जोन के साथ वापिस अपने मरे पर लौट आया।

[२७]

हम लोग जब कमरे पर पहुँचे तो बहुत से महामानव हमारी प्रतीक्षा में बैठे हुए थे। आश्चर्य तो यह था कि ऐनी भी स सभा में उपस्थित थी। अशोक अभी तक भी मदालसा की बात ो नहीं भूल सका था। उसकी मुद्रा अभी तक भी गम्भीर थी। फिर भी उसने अपने को संयत करके सभी की अभ्यर्थना की। सभी महामानवों को मदालसा का मृत्यु-गृह में जाने का पता लग चुका था। उनके लिए यह कोई नयी बात नहीं थी। इसलिये किसी ने उस बारे में बात भी नहीं की। पर समन्वय विज्ञान विशारद श्री सोम अशोक और अनीता की भावनाओं को समझ गये थे, इसलिये उन्होंने मदालसा के लिये सहानुभूति प्रदर्शित की। अशोक ने अपने चारों ओर बैठे महामानवों को देखा। सभी उसी की ओर देख रहे थे। इसलिए वह स्वयं बोला, 'मदालसा की अचानक मृत्यु से मेरा सन्तुलन कुछ गड़बड़ा गया है। इसलिये मुझे जो कुछ कहना है वह संक्षेप में ही कहूँगा। आशा है आप इसे अन्यथा न समझेंगे।' इतना कहकर अशोक थोड़ा रुका और फिर बोला, 'यह माना कि महा-मानव समाज ने जीवन निर्वाह की आवश्यक सामग्री सबके लिये सुलभ कर दी है, प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम और अधिक से अधिक विश्राम दे दिया है और जनसंख्या को सतुलित कर दिया है पर यहाँ पर प्रत्येक महामानव की व्यक्तिगत विशेषता और गुणों

दोनों बच्चों को काल के मुख में पड़े महामानवों को दिखा दिखा कर कुछ बातें बता रहे थे। एक निरीक्षक कह रहा था 'यह महामानव इस दुनिया में चार दिन का और मेहमान है, पर तुम देखते हो इसके मुख पर किसी प्रकार की शिकन नहीं, घबराहट नहीं, यह गले में पड़े हुए चलचित्र का रसास्वादन कर रहा है।' निरीक्षक आगे बढ़ा। दूसरे पलंग के निकट पहुँच कर बोला, 'यह महामानव कल शाम तक मर जायेगा, पर इसको देखो यह कितना प्रसन्न है। कोई भी बालक उससे बातें कर सकता है।'

र वर्गीय एक बालक आगे बढ़ा। उसने रोगी से पूछा "आपको कोई कष्ट तो नहीं। आपको पता है आप कल तक मर जावेंगे।" मदहोश रोगी ने उत्तर दिया, "मुझे कोई कष्ट-वष्ट नहीं है, मैं मजे में पड़ा चलचित्र देख रहा हूँ। अभी थोड़ी देर में जब मैं चलचित्र देखता देखता ऊब जाऊँगा तो मेरे कानों के पास लगे यांत्रिक संगीत यंत्र से संगीत की मधुर लहरें उठने लगेंगी। मैं उनको सुनता सुनता झूमने लगूँगा। कल को मरना है, क्या इसी चिन्ता में मैं अपने आज को खराब कर डालूँ। इतना कहकर वह रोगी हँस पड़ा। अनीता ने देखा रोगी का मुख दाँतों से भरा है, उसके बाल काले हैं और झुर्री का नाम निशान तक नहीं है, यद्यपि उसकी आयु १०० वर्ष हो चुकी है।

अनीता इस नाटक को अधिक समय तक नहीं देख सकी, वह जोन को लेकर बाहर निकल आई। अशोक अभी तक भी मदालसा की-मृत्यु से अधिक उसके पतन के आघात से मुक्त नहीं हुआ था।

का आधार बुद्धि में है। इसलिये हमें बुद्धि की शरण में जाना चाहिए, किन्तु आज मगल लोक के सामाजिक ढाँचे मे बुद्धि और निर्भयता का स्थान सोमवटी ने ले लिया है जिसके कारण महामानवों को अपना मुक्ति पथ स्पष्ट दिखाई नहीं पडता और वे अँधेरे म टटोलते हुए आगे बढ़ रहे है।'

प्रसिद्ध यात्रिक बेलस्टोटस्की को अशोक की बातें केवल बकवास ही लगी। अशोक की बातें सुनते सुनते वह ऊब चुका था इसलिये वह उत्तेजित होकर बोला, "अशोक जी, मगल-लोक म कहाँ क्या गडबड है, यह तो शायद हम लोग आपसे अच्छी तरह जानते होंगे। हमें तो आपसे इसका समाधान चाहिये, क्योंकि आप एक ऐसे लोक से आये है जहाँ के मुक्त वातावरण म चिंतन पर कोई अकुश नहीं है।"

अशोक से यदि और किसी अवसर पर यह प्रश्न पूछा जाता तो वह निरुत्तर हो गया होता क्योंकि इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए उसके हृदय मे भी उस समय से अन्तरद्वन्द चल रहा था जब से वह मगल लोक मे आया था। पर मदालसा की सोमवटी पान द्वारा अकाल मृत्यु ने उसको अत्याधिक प्रभावित किया था और उसे सोमवटी बहिष्कार मे लगा कि जैसे उसे अनायास ही उत्तर मिल गया। उसने खड़े होकर कहा, "इसके लिये हमको बलिदान करना होगा, कुछ कष्ट उठाना पड़ेगा, विचार का प्रचार करना होगा। अन्तःकरण मे तीव्रता लानी होगी और कुछ दुख सहन करने पड़ेंगे।"

"हम यह नहीं समझ सके कि आपका इसमें क्या आशय है? क्या

के विकास का कोई अवसर प्रदान नहीं किया गया।

"यह कितनी हास्यास्पद स्थिति है कि जिस समाज का निर्माण करने में प्रत्येक महामानव ने अपना अपना योग दिया, आज उसी समाज ने व्यक्ति को इतना हीन बना दिया है कि यह जानते हुए भी अन्याय हो रहा है, उसका कोई प्रतिरोध नहीं कर सकता।'

'आप ठीक कहते हैं। सचमुच में आज हमारी यही स्थिति है।' सभी महामानव अचानक बोल उठे। लेकिन अशोक तो अपने विचारों मे डूबा हुआ था, इसलिये वह इन बातों को सुनी अनसुनी करते हुए बोला, 'इसके लिये महामानवों को निर्भय बनाना होगा और अपनी बुद्धि और समझ का स्वयं उपयोग करना होगा।'

अचानक पूर्व भाग्य रचियता श्री अविनाश बीच में ही बोल उठे, 'पर यह आज के सन्दर्भ में हो कैसे सकता है।'

अशोक बिना हिचक के बोला, 'इसके लिये तो आज मंगल लोक का संदर्भ ही बदलना होगा और नये मूल्य स्थापित करने होंगे। क्योंकि आज के महामानव समाज ने तो अपना आधार पूर्णतया भौतिक जगत के विज्ञानों को मान लिया है। भौतिक जगत के विज्ञानों में शक्ति तो है। पर इन विज्ञानों को अपने को कुछ मर्यादाओं में बाँधने की न तो बुद्धि है और न व्यक्ति को निर्भय बनाने की शक्ति। इनमें बुद्धि आये भी कैसे। क्योंकि ये तो केवल शक्ति मात्र हैं फिर निर्भय बनाने की शक्ति का तो प्रश्न ही नहीं उठता। बुद्धि और निर्भयता का देवता तो अलग ही है। विज्ञान का अच्छा या बुरा दोनों प्रकार से उपयोग हो सकता है, और अच्छे या बुरे उपयोग

का आधार बुद्धि में है। इसलिये हमें बुद्धि की शरण में जाना चाहिए, किन्तु आज मगल लोक के सामाजिक ढाँचे में बुद्धि और निर्भयता का स्थान सोमवटी ने ले लिया है जिसके कारण महामानवों को अपना मुक्ति पथ स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ता और वे अँधेरे में टटोलते हुए आगे बढ़ रहे हैं।'

प्रसिद्ध यान्त्रिक वेलस्टोटस्की का अशोक की बातें केवल बकवास ही लगी। अशोक की बातें सुनते सुनते वह ऊब चुका था इसलिये वह उत्तेजित होकर बोला, "अशोक जी, मगल-लोक में कहाँ क्या गड़बड़ है, यह तो शायद हम लोग आपसे अच्छी तरह जानते होंगे। हमें तो आपसे इसका समाधान चाहिए, क्योंकि आप एक ऐसे लोक से आये हैं जहाँ के मुक्त वातावरण में चिंतन पर कोई अकुंश नहीं है।"

अशोक से यदि और किसी अवसर पर यह प्रश्न पूछा जाता तो वह निरुत्तर हो गया होता क्योंकि इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए उसके हृदय में भी उस समय से अन्तरद्वन्द चल रहा था जब से वह मगल लोक में आया था। पर मदालसा की सोमवटी पान द्वारा अकाल मृत्यु ने उसको अत्यधिक प्रभावित किया था और उसे सोमवटी बहिष्कार में लगा कि जैसे उसे अनायास ही उत्तर मिल गया। उसने खड़े होकर कहा, "इसके लिये हमको बलिदान करना होगा, कुछ कष्ट उठाना पड़ेगा, विचार का प्रचार करना होगा। अन्तःकरण में तीव्रता लानी होगी और कुछ दुःख सहन करने पड़ेंगे।"

"हम यह नहीं समझ सके कि आपका इससे क्या आशय है? क्या

आप उसको अधिक स्पष्ट करने का कष्ट करेंगे ?"—भौतिक शास्त्री अरुण ने कहा।

"क्यों नहीं, मेरे कहने का तात्पर्य है कि हमको मंगल लोक के सबसे बड़े अस्त्र पर कुठाराघात करना होगा जिसने महामानव को बेहोश और बेसुध बनाया हुआ है। आज मंगल लोक के सम्पूर्ण महामानव सोमवटी पान में रत है। यही सोमवटी-पान रमणीय कुमार्ग का रूप लेकर महामानव को कल्याण के पथ से दूर ले जा रहा है। यह माना कि इसके पान से महामानव कुछ समय के लिये व्याकुलता को भूल जाता है, वह चिन्ताओं और निराशा से मुक्त हो जाता है, वह अपनी वास्तविक स्थिति की गहन वेदना का अनुभव नहीं कर पाता, पर इस पलायनवादी विधि से महामानव कब तक अपने को भुलावे मे रख सकता है। सोमवटी ने उसे बुद्धिहीन और जड़ बना दिया है, वह अपने चित्त पर से अधिकार खो बैठा है। इसी के कारण आज मगल लोक में असत्य ने सत्य, अज्ञान ने विज्ञान और अकार्य ने कार्य का रूप धारण कर लिया है।"

इतना कहकर अशोक कुछ क्षण के लिये रुका। महामानवों ने देखा अशोक के मुख पर एक अद्भुत आभा प्रस्फुटित हो गई है और उसका प्रभाव सभी महामानवों पर व्याप्त हो गया है। अशोक कह रहा था, 'सोमवटी के प्रभाव में महामानव अपनी जीवन पद्धति के सारतत्व को भूल बैठा है। यही उसके नैतिक, आध्यात्मिक और मानसिक स्वतंत्रता के विकास में सबसे बड़ी बाधा बन गया है। इसी ने महामानवों को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से

निष्क्रिय बना दिया है। सोमवटी ने यहाँ पर उत्तेजनात्मक आसक्ति और भोग को प्रोत्साहन दिया है, जिससे सम्पूर्ण महामानव जीवन अभिशप्त हो गया है। इस बुराई को दूर करने के लिये, उसका शोधन करने के लिये, हम सभी को सोमवटी त्याग का प्रेमपूर्वक वचन लेना पड़ेगा। हम स्वयं इस पर आचरण करें और अन्य महामानवों को इस पर आचरण करने के लिय प्रेम से आग्रह पूर्वक प्रेरित करें और महामानवों मे इसी बात का प्रचार करें। उनको स्थान स्थान पर जाकर समझायें कि वे सोमवटी का उपयोग न करें ताकि वे अपने अन्तर की उठने वाली आवाज को कम से कम सुन तो सकें।

अशोक का दैदीप्यमान मुख देख कर ऐनी को एक विचित्र अनुभूति हुई। उसने देखा अशोक का रंग तपे हुए सोने के समान चमक रहा था। उसके तेज ने ऐनी को इतना अधिक प्रभावित किया कि वह तुरन्त ही उठकर बोली, 'मुझे अशोक जी का यह सुझाव पूरी तरह मजूर है और मैंने आज अभी से सोमवटी को त्याग दिया है।'

महामानवो मे ऐनी की बात को सुन कर हलचल मच गई। अरुण और बेलरटोटस्की ऐनी को पागल समझ कर हँस दिये पर बोस ने उठकर कहा, "अशोक जी, हम आपकी इस बात को तो मानने के लिये तैयार हैं कि सोमवटी का त्याग कर दिया जाय, पर इसके प्रचार की अन्य महामानवों मे क्यों आवश्यकता है, यह समझ मे नही आता। आप तो व्यक्ति की स्वतन्त्रता के हिमायती हैं। फिर आप अपने विचारो को महामानवो पर क्यो थोपते हैं?"

अविनाश भी अशोक की बात को समझ नहीं सका था इसलिये वह भी बोला, 'तो आप समझते हैं कि केवल विचार परिवर्तन से ही आप महामानव समाज को बदलने में सफल हो जायेंगे।'

अशोक ने थोड़ा मुस्करा कर कहा—'इस बात का उत्तर तो भौतिक शास्त्री श्री अरुण अच्छी तरह दे सकते हैं क्योंकि छोटे से परमाणु से आपने मंगल लोक में अपरिमित शक्ति प्राप्त कर ली है तो मेरा कहना है कि जब एक साधारण जड परमाणु में इतनी शक्ति है कि वह विश्व की सबसे बड़ी संहारक शक्ति बन सकती है तो हमारे विचार रूपी चैतन्य परमाणु में कितनी अपरिमित शक्ति होगी। इसका इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि एक विचार रूपी बीज को बोते ही वातावरण में विचार परिवर्तन होने लगता है, हृदय परिवर्तन सक्रिय हो उठता है और इन दोनों से स्थिति विवश होकर बदल जाती है और तभी नये मानव का निर्माण होता है।'

भौतिक शास्त्री अरुण अशोक की बातों को स्वीकार करते हुए बोले, 'विचार से नवीन समाज निर्माण की बात मान भी ली जाय। पर हम यह तो जानें कि आप सोमवटी बहिष्कार द्वारा कौन से विचार का प्रतिपादन कर रहे हैं।'

अशोक को अरुण की बात पर हँसी आ गई। वह बोला, 'मैंने अभी आपको बताया है कि सोमवटी बहिष्कार तो मेरे द्वारा पहले बताये गए वैचारिक आन्दोलन का केवल एक संकेत मात्र है।'

'आके वचनानुसार चलने से तो सर्वत्र हाहाकार मच जायगा।

जब सभी महामानव स्वतन्त्र हो जायेंगे तो फिर अनुशासन तिरोहित हो जायगा।' भावानन्द ने कहा—

'मेरी बातों का गलत अर्थ न निकालिये।'—अशोक भावावेश में बोला।

'पर आप तो हमें गलत मार्ग दर्शन दे रहे हैं, क्या आप चाहते हैं कि मगल लोक में प्राप्त एकता को हम समाप्त कर दें।'—यह वेलेस्टोटस्की था।

अशोक ने संयत भाषा में कहा, 'जिस एकता की बात आप कह रहे हैं, उसी की आड लेकर यहाँ के विधाताओं ने आपको बुद्धू बनाया हुआ है। जिस समाज निर्माण का मैं स्वप्न देखता हूँ उसके लिये एकता की नहीं, सामंजस्यता की आवश्यकता होती है। एकता का नारा तो परोक्ष या प्रगट रूप से किसी न किसी प्रकार के अधिनायकवाद को जन्म देता है और व्यक्ति के व्यक्तित्व को नष्ट करने का कारण बनता है। किन्तु सर्व-जन-समाज सभी व्यक्तियों को अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का पूरा अवसर देता है। उसमें सभी व्यक्ति समाज के हित के लिये अपने व्यक्तित्व को ज्यों का त्यों रख कर एक साथ आगे बढ़ते है। इस प्रकार की सामाजिक रचना यदि मगल लोक में आनी है तो उसके लिये अधिनायकवाद की प्रतीक सोमवटी के बहिष्कार आन्दोलन को प्रत्येक महामानव तक पहुँचाना आवश्यक है।

अशोक इतना कह कर अपने स्थान पर बैठ गया। सभा में थोड़ी देर के लिये तो सन्नाटा छा गया। सभी महामानवों को लगा कि

विचारों के प्रचार में लगे रहे तो वह दिन दूर नहीं जब कि महा-मानव समाज इसका विरोध करने लगेगा। विरोध होते ही हमें समझ लेना चाहिये कि अब हमारे आन्दोलन की जड़ें जम चुकी है।'

तीनों महामानव अशोक की इसी प्रकार की बातों को सुनते सुनते तग आ गये थे इसलिये वे तीनों एक साथ ही बोल पड़े, 'जब तक कोई जोशीला कार्य हम नही करेंगे हमारा यह आन्दोलन सफल नहीं होगा।'

अशोक ने उनको बहुत समझाया पर उनको समझ में एक न आई। अन्त में अशोक ने उनके सामने एक नया प्रस्ताव रखा। उसने बताया कि सोमवटी बहिष्कार को प्रयत्न कारखाने में अवकाश के समय करके देखा जाय। अविनाश को यह बात कुछ जच गई वह कहने लगा 'म' वर्गीय महामानव तो हमारी हँसी उड़ाते हैं, पर अन्य वर्गों के लोग शायद हमारी बातों को सुनना पसन्द करेंगे। अब मौका भी अच्छा है। क्योंकि अन्नपूर्णा कारखाने मे दो तीन दिन से 'त' वर्गीय महामानवों को सोमवटी नही बांटी गई है।'

अशोक ने यह बात सुनी तो वह उछल पडा। उसने इसका कारण पूछा। अविनाश ने बताया कि कभी कभी सोमवटी की मांग इतनी बढ़ जाती है कि उसको सभी महामानवों को देना मुश्किल हो जाता है। ऐसे संकट के समय 'त' वर्गीय महामानवों को सोमवटी नही दी जाती क्योंकि उनकी शरीर रचना ऐसी की गई है कि वे एक

सप्ताह तक सोमवटी के बिना भी आराम से रह सकते हैं। अशोक ने कहा, 'सोमवटी बहिष्कार की बात तो' वर्गीय महामानवों को ऐसे ही समय सबसे जल्दी आ सकती है। वहीं चल कर बहिष्कार का पहला जन-आन्दोलन शुरू किया जाय। अविनाश ने कहा अन्नपूर्णा कारखाना सारे वनस्पति प्रदेश को खाद्य पदार्थ सप्लाई करता है। इसलिये वहाँ पर आप केवल एक बार ही जा सकेंगे। सभी का एक से अधिक बार वहाँ पर बिना काम के प्रवेश वर्जित है। लेकिन इससे आप घबरायें नहीं। मैं अभी अपने टैलीपट पर आपको अन्नपूर्णा कारखाने का दिग्दर्शन कराये देता हूँ ताकि आप यह बता सकें कि अपने काम के लिये वहाँ कौनसा स्थान उपयुक्त रहेगा।"

टैलीपट पर अन्नपूर्णा कारखान का चित्र आ गया। अविनाश ने बताया कि यही अन्नपूर्णा कारखाना है और इसकी क्षमता इतनी अधिक है कि इससे जो मांगो सो मिल जाता है और इसका भंडार कभी रिक्त नहीं होता।

कौतूहल मिश्रित आश्चर्य से अशोक ने यह सब सुना और भौचक्का सा वह टैलीपट पर देखने लगा। उसको एक पारदर्शक इमारत नजर आई जो गतिशील नींव पर खड़ी धीरे धीरे सूर्य के साथ घूम रही थी। बीच का एक बहुत बड़ा दर्पण धूप को केन्द्रित कर कारखाने के सभी भागों में पहुँचा रहा था। बड़े बड़े नलों द्वारा एक हौज में कारबन डाइ आक्साइड जमा की जा रही थी। एक हौज पानी से भरी थी और तीसरी हौज में क्लोरोफिल या

पर्णहरित था। कुछ त वर्गीय महामानव क्लोरोफिल को इधर से उधर ला रहे थे। कमरों में वृहत बेलनाकार पारदर्शक पात्र रक्खे हुए थे जिनसे चार बड़े बड़े नल जुड़े हुए थे। इनसे एक निश्चित क्रम के अनुसार क्लोरोफिल पानी, कार्बन डाइआक्साइड और रोशनी जा रही थी। अन्त में जो माल इस उपकरण से तैयार होकर निकल रहा था, उसको देख कर अशोक और अनीता दोनों को बड़ा आश्चर्य हुआ। विटामिन की गोलियां, पूर्व पचित सघन खाद्य, बुनियादी खाद्य, वस्तुयें, मण्ड, प्रोटीन और वस्त्र सभी पानी, क्लोरोफिल, कार्बन डाइआक्साइड और धूप से तैयार हो रहे थे। इनको त वर्गीय महामानव अलग करने में लगे हुए थे। अशोक को याद आया कि प्रकाश संश्लेषण के फलस्वरूप ही ठीक वैसे ही यह चीजें बन रही हैं जैसे पौधों के अन्दर मकर। मंडधारी अनाज, प्रोटीनधारी दालें और तन्तुधारी कपास बनती हैं। न जाने वह कितने सवाल इस बारे में अविनाश से पूछता पर तभी अविनाश ने उसका ध्यान भंग करते हुए कहा, 'बस यही उपयुक्त जगह हो सकती है क्योंकि यहीं पर त वर्गीय महामानव सबसे अधिक काम करते है।' टैलीपट पर अब वह स्थान नजर आ रहा था जहाँ पर त वर्गीय महामानव सोमवटी लेने के लिए इकट्ठा थे। अशोक ने देखा वे बड़ा हो हल्ला मचा रहे हैं।

अशोक ने कहा, "आप ठीक कहते हैं अभी जो-जो महामानव सोमवटी वहिष्कार आन्दोलन के लिए चलना चाहते हैं उनको इकट्ठा करलो।"

अन्नपूर्णा कारखाने में जब हमने प्रवेश किया तो उसकी पहली पाली खतम हो चुकी थी और दूसरी पाली के त-वर्गीय महामानव काम करने के लिए बड़े हॉल में खड़े हो गये थे। काली पोशाक पहने वह रावण की सेना जैसे लगते थे। हर एक के गले में एक-एक पट्टी पड़ी हुई थी और उस पर न जाने क्या क्या लिखा था। वे सभी सोमवटी न मिलने के कारण अपने असन्तोष को एक दूसरे पर प्रकट कर रहे थे।

अशोक ने इस अवसर को अत्यधिक उपयुक्त समझा और वह एक कोने में खड़ा होकर बोलने लगा, "साथियो मैं जानता हूँ कि आपको सोमवटी न मिलने के कारण बड़ा कष्ट हो रहा है। इसके अभाव में आपको दुःख और चिन्ता ने घेर लिया है। अभी शायद एक दो दिन और बिना सोमवटी के ही काम चलाना होगा। पर अगर आप स्वेच्छा से ही सोमवटी का त्याग कर दें तो न केवल आपको अपनी छिपी शक्ति का भान होगा, वरन् आपका जीवन भी पूरी तरह बदल जायगा।"

त वर्गीय महामानवों ने समझा कि अशोक उनको ऐसा उपदेश इसलिए दे रहा है क्योंकि अभी सोमवटी मिलने में देर लगेगी इसलिए उनमें से एक महामानव बोल उठा, "सोमवटी खावें चिन्ता उदासी भागे। ऐसी दशा में हम सोमवटी का उपयोग क्यों न करें।"

अशोक को इस प्रकार बीच में बोलना बहुत अखरा फिर भी वह बोलता ही गया, "यह माना कि सोमवटी से कुछ समय के लिए

स्फूर्ति मिल जाती है और मानसिक दबाव हल्का हो जाता है, पर कुछ समय बाद जब उसका प्रभाव जाता रहता है तो सारा शरीर शिथिल पड़ जाता है और दिमाग निष्क्रिय और निश्चेष्ट हो जाता है। आप आज भी तो बिना सोमवटी के रह रहे हैं। यदि आप इस बात का दृढ़ निश्चय करलें कि हमें सोमवटी का इस्तेमाल नहीं करना है तो मैं सच कहता हूँ कि आपको इस क्षणिक आनन्द के बदले जीवन का पूर्ण रस मिलेगा।"

भीड़ में कुछ हलचल हुई और कुछ महामानवों ने जोर से कहा, "हम आपका भाषण नहीं सुनना चाहते, हम सोमवटी के खिलाफ कुछ भी नहीं सुनना चाहते।"

अनेक आवाजों के बीच जब ऐनी ने अशोक की आवाज मन्द होने देखी तो वह अनीता का हाथ पकड़ कर आगे आई और बोली, "अशोक जी बिलकुल ठीक कह रहे हैं। मैंने खुद जब से सोमवटी छोड़ी है, तब से मुझ में एक नया जीवन आ गया है और मेरी बहन यह अनीता; जिसने कभी जीवन में सोमवटी का उपयोग नहीं किया है, सम्पूर्ण महामानव समाज की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी से भी हजारों गुना सुन्दर है। साथ ही वह हमारे में कहीं अधिक आनन्द अनुभव करती है। बोलो क्या तुम लोग ऐसा होना नहीं चाहते ?"

त वर्गीय महामानवों ने जीवन में पहली बार स वर्गीय महामानवी को इतने निकट से देखा था। फिर उनके साथ जो अजीब सुन्दरी खड़ी थी, वैसा रूप तो उन्होंने आज तक नहीं देखा था। उसका सम्मोहन उन पर कुछ विचित्र प्रकार का प्रभाव डाल रहा

था। बुद्ध त वर्गीय महामानव आगे बढ़े और उन्होंने जोर से कहा, "हम सोमवटी का इस्तेमाल कभी नहीं करेंगे।"

ऐनी जोर से बोली, "शाबाश ! हमें तुमसे यही आशा थी।" और इतना कहकर वह उन त वर्गीय महामानवों की खुद जा जाकर थपथपाने लगी। म वर्गीय महामानवी से ऐसा प्रिय व्यवहार किसी भी त वर्गीय महामानव को नहीं मिला था। इसलिए वे सभी एक-एक करके सोमवटी न खाने का वचन देने लगे। पर तभी एक र वर्गीय महामानव ने आकर घोषणा की, "आप लोगों को सोमवटी अभी दी जायगी।" साथ ही सोमवटी बटने की घण्टी भी बज उठी।

अभी अभी जिन महामानवों ने सोमवटी न खाने का वचन दिया था, उनमें से भी अनेक महामानव सोमवटी लेने वाली कतार में खड़े होने के लिये जाने लगे। अशोक ने यह देखा तो उसने बड़े जोर से कहा, 'मेरे रहते हुये यहां पर कोई भी सोमवटी को प्राप्त नहीं कर सकेगा। जो सोमवटी लेने के लिये आगे बढ़ेगा, उसको मेरे शरीर पर से होकर जाना होगा।"

इतना कहकर अशोक फर्श पर लेट गया। त वर्गीय श्रमिकों के लिये एक नई परिस्थिति पैदा हो गई थी। उनमें से जिनको सोमवटी प्राप्त करने की शीघ्रता थी, वे आगे बढ़े। अनीता ने यह देखा तो वह भी लेट गई। ऐनी भी अपने को न रोक सकी। वह भी अनीता के साथ ही लेट गई। ऐसा होते ही जो महामानव सोमवटी न खाने का वचन ले चुके थे, उन्होंने घोषणा कर दी कि यदि कोई ऐनी और अनीता को रौंद कर आगे बढ़ा तो उसका भुर्ता बना दिया जायगा।

उधर भीड़ को सोमवटी प्राप्त न करने का विलम्ब दूभर हो रहा था। भीड़ में से फिर आवाजें आईं, आगे बढ़ो और महामानवों की एक लहर आगे बढ़ी पर सभी सोमवटी न खाने वाले त और स वर्गीय महामानवों ने आगे बढ़ कर अशोक, अनीता और ऐनी के सामने एक दीवार सी बना ली। इससे भीड़ बहुत उत्तेजित हो उठी। भीड़ ने इस मोर्चे पर हमला बोल दिया और जिस महामानव के जो हाथ में आया उसी से एक दूसरे पर प्रहार करने लगा। सब लोग सोमवटी लेना भूल गये और वह हॉल रणक्षेत्र में बदल गया। अशोक, ऐनी और अनीता अपने स्थान से उठे और रणक्षेत्र के बीच में जाकर समझौता करने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु नक्कारखाने में तूती की आवाज कहाँ सुनाई देती है। उनको भी महामानवों के क्रोध का शिकार होना पड़ा। यह दोनों गुटों के महामानवों के लिये सम्मान का प्रश्न था। दोनों गुट ही सोच रहे थे कि यदि वे हार कर लौटते या भागते हैं तो उनको मंगल लोक के प्रविन के अनुसार कोई भारी दण्ड मिलेगा।

र वर्गीय महामानव ने यह देखा तो उसने अपने जेबी रेडियो कानून द्वारा सारा समाचार प्रादेशिक महामानव निर्माता को कह सुनाया। उनका आदेश पाकर र वर्गीय महामानव ने यांत्रिक मस्तिष्क को चला दिया, जिससे हॉल में प्रधान महामानव निर्माता के उपदेश का रिकार्ड बजा कर सुनाया जाने लगा। मंगल लोक में झगड़ों को शान्त करने के लिए उपदेशों और विद्रोह रोकने के भाषणों से भरे इन रिकार्डों का काफी उपयोग किया जाता था। रिकार्ड में से एक आवाज निकलने लगी। आवाज अत्यधिक कोमल

थी। वह कह रही थी, 'मेरे मित्रो, मेरे साथियों, थोडा रुको और शान्त हो। मेरी बात को सुनो–इस प्रकार से असभ्य बनने के क्या अर्थ होने हैं। क्या इससे यह समझूं कि आप अपने को प्रसन्न नही समझते ? क्या आप सब मिलकर खुश नही है ? आप सभी अच्छे हैं आप सदैव प्रसन्न चित्त रहते हैं, आप अपने सद्व्यवहार को स्मरण करें। 'प्रत्येक प्रत्येक के लिये' का याद करे। समाज के हित मे अपने को लगावें। अब आप शान्त हो, शान्त हो—मैं आपका अच्छा देखना चाहता हूँ।'

इस आवाज के सुनते ही सारे हॉल मे थोडी देर के लिये तो सचमुच ही शान्ति छा गई। प्रत्येक महामानव रिकार्ड पर बजी ध्वनि को ध्यानपूर्वक सुनने लगा। अशोक, ऐनी और अनीता काफी घायल हो चुके थे। उनको घायल देखकर सोमवटी का बहिष्कार करने वाले महामानवो को फिर जोश आ गया और उन्होंने दूसरे गुट पर फिर हल्ला बोल दिया। दूसरा गुट अपने को बचाने के लिये प्राण प्रण से कोशिश करने लगा। पर वह गुट हार रहा था, क्योंकि आज मगल लोक मे पहली बार स वर्गीय महामानव त वर्गीय महामानवो के साथ कन्धे से कन्धा भिडा कर लड रहे थे। र वर्गीय महामानव द्वारा सूचना पाकर अब तक मगल लोक की पुलिस हॉल मे प्रवेश कर चुकी थी। उसने पम्पो के द्वारा सोमवटी की गैस से हॉल को भरना आरम्भ कर दिया। वे पानी की पिस्तौलो का उपयोग कर रहे थे। इन पिस्तौलो से पानी की तेज बौछार निकल रही थी और पुलिस इन बौछारो से महामानवो के घुटनों को निशाना बना रही थी। बौछारो की तेजी के कारण महामानवों

के घुटने मुड़ जाते थे और वे फर्श पर गिर रहे थे। कुछ पम्पों की सहायता से इस प्रकार के तरल द्रव्य छोड़े जा रहे थे जो महामानवों को संज्ञाहीन बना रहे थे। लगभग पांच मिनिट के अन्दर सारे झगड़े पर काबू पा लिया गया। पर तभी अचानक बड़े जोरों की गड़गड़ाहट हुई। हाल में धरती के अन्दर से एक गोलाकार कमरा ऊपर उठा। इससे सभी महामानव भयभीत हो गये क्योंकि वे जानते थे कि मंगल लोक के प्रधान महामानव निर्माता स्वयं उपस्थित हो गये है। वह गोलाकार कमरा बराबर घूमता रहा। उसमें से कुछ तेजवान *किरणें निकल कर* अशोक और अनीता पर पड़ने लगीं। ऐनी दो किरणों के सम्पर्क में आने के तुरन्त बाद ही भस्म हो गई पर अशोक और अनीता इन किरणों से केवल संज्ञाहीन ही हुए। उपस्थित महामानवों ने यह देखा तो उनको भारी आश्चर्य हुआ क्योंकि सभी महामानव यह जानते थे कि प्रधान महामानव निर्माता के कमरे से निकली किरणें जिस महामानव पर पड़ती है वही भस्म हो जाता है। पर वे आज अपनी आँखों से यह देख रहे थे कि उन किरणों का मामूली मानवों पर कोई ऐसा प्रभाव नहीं पड़ा। तभी उपस्थित महामानवों ने देखा कि घूमते कमरे की किरणें उन पर पड़ने लगी हैं। अविनाश समझ गया कि प्रधान महामानव निर्माता *उपस्थित महामानवों के सामने सामान्य मानवों के हाथों* अपनी हार को स्वीकार करना नहीं चाहते, इसलिये उपस्थित सभी महामानवों को वे भस्म कर रहे हैं ताकि उनकी पराजय की बात मंगल लोक के अन्य महामानवों को पता तक नहीं चल सके।

थोड़ी ही देर में अशोक और अनीता को छोड़ कर सभी

महामानव भस्म हो गये। कमरे से अब कुछ अद्‌भुत कैंने निकली जो अशोक और अनीता को उठा कर न जाने कैसे कमरे के अन्दर ले गयी और फिर वह घूमता हुआ कमरा जैसे जमीन के अन्दर से आया था, वैसे ही जमीन के अन्दर गायब हो गया।

[२८]

अशोक और अनीता की आँखें खुलीं तो उन्होंने अपने को एक ऐसे कमरे मे पाया जिसको भव्य अतिथिशाला कहा जा सकता था। मंगल लोक मे पाई जाने वाली सभी वस्तुओं के चित्र उसमे मौजूद थे। एक चित्र पर हमारा ध्यान जाकर अटक गया जिसमे प्रथम प्रधान महामानव निर्माता बोतल से शिशु का आविष्कार करते हुए दिखाये गये थे। हमे यह बडा विचित्र लग रहा था कि हम अपराधी होते हुए भी अतिथिशाला मे ठहराये गये हैं। यही कारण था कि प्रधान महामानव निर्माता को देखने की हमारी इच्छा अत्यधिक प्रबल हो उठी थी।

कुछ समय बाद ही हमको प्रधान महामानव निर्माता के कमरे मे ले जाया गया। उनके कमरे की सजावट अनोखी थी। पर प्र० महामानव निर्माता को देखकर हमारी कल्पना पर भारी तुषारापात हुआ क्योंकि वे किसी भी तरह अलौकिक नहीं थे। अविनाश जैसा ही उनका रूप था, वैसा ही रंग था। उनमें एक बात अवश्य थी कि मुस्कराहट जैसे उनके ओंठों पर खेल रही थी। मुस्कराते हुए ही उन्होंने हमसे कहा, 'भूलोक से आये अशोक और अनीता आराम से बैठ जाओ, मुझे तुमसे कुछ बातें करनी है।'

मंगल लोक में हमारे लिये यह प्रथम अवसर था जब कि हमारे नाम के पूर्व अर्ध-सभ्य विशेषण नहीं लगाया गया था और वह भी मंगल लोक के सबसे महान अधिकारी द्वारा। हम इससे अत्यधिक विस्मित हुये और निडर होकर बैठ गये।

हमारे मन में स्वतः ही प्रश्न उठा कि महामानव निर्माता हमसे क्या आवश्यक बातें करना चाहते हैं। हम इसी प्रकार सोच रहे थे कि प्रधान महामानव निर्माता ने कहना आरम्भ किया, 'तुम लोग पृथ्वी लोक से चन्द्र लोक को जा रहे थे, जोन और उसके साथियों ने तुमको मौत के मुंह से निकाला। मंगल लोक में तुम्हारा अतिथियों की तरह स्वागत और सत्कार किया गया। तुमको हर तरह की सुविधा उपलब्ध कराई गई। तुम पर पूरी तरह विश्वास किया गया। फिर तुमने क्यों मंगल लोक की वर्तमान व्यवस्था को नष्ट करने का गहन अपराध किया ?'

अशोक जानता था कि उससे इस प्रकार का प्रश्न पूछा जायगा और वह उसके लिये तैयार भी था। उसने उत्तर देते हुए कहा, "हमने मंगल लोक की आत्मा को जगाने का प्रयत्न किया है। हम जब यहाँ आये तो हमने अनुभव किया कि महामानव समाज जैसे जीवन-पद्धति के सार तत्व को भूला जा रहा है। हम इस बात से और भी विस्मित हुए कि यहाँ पर संतति प्रजनन के लिये जैविक विधि को छोड़ कर भौतिक-रसायनिक विधि अपनाई जाती है। इस विधि द्वारा बोतलों से मानव के भौतिक शरीर की रचना तो कर ली गई है पर मानसिक मान्यतायें ज्यों की त्यों रूढ़िवादी हैं। होना यह चाहिये था कि भौतिक शरीर किसी भी तरह निर्मित हों, पर मानव का

उनको व्यवहार करना चाहिए। वे चाहते हुए भी उसके विपरीत व्यवहार नहीं कर सकते। यदि इसके बाद भी कुछ गड़बड़ होती है तो फिर सोमवटी है। इतनी बड़ी व्यूह रचना में प्रवेश कर तुम उनको स्वतन्त्रता के अर्थ समझाने का प्रयत्न करते हो। तुम एक पालतू महामानव को एक जंगली मानव की बात समझाना चाहते हो?'

अनीता की यह बात समझ में नहीं आई। उसने कुछ हिचक कर पूछा—'पालतू महामानव और जंगली मानव से आपका क्या तात्पर्य है?'

प्रधान महोदय ने हँस कर कहा—'तुम लोग जंगली मानव हो, तुम अपनी स्वतन्त्रता के लिए अपने जीवन की भी बलि दे सकते हो। अपनी परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए जी-तोड़ प्रयत्न करते हो, लहूलुहान हो जाते हो और उस समय तक चैन से नहीं बैठते, जब तक कि स्वतन्त्र नहीं हो जाते, भले ही इसमें जीवन की बाजी लगानी पड़े। किन्तु पालतू महामानव स्वतन्त्रता प्राप्ति के ऐसे सभी प्रयत्नों को घृणा की दृष्टि से देखता है, जिसमें जीवन की बाजी लगानी पड़ती हो। वह सोचता है कि जीवन स्वतन्त्रता से अधिक मूल्यवान है, किन्तु तुम लोग स्वतन्त्रता को ही जीवन समझते हो—बस मानव और महामानव में केवल यही अन्तर है।'

अनीता महामानव निर्माता की बातों को सुनकर तिलमिला गई। उसका अंग-अंग गहरी वेदना से सिहर उठा। उसने भावावेश में कहा, 'हमें तुम्हारा ऐसा आनन्द, यौवन और वैभव नहीं चाहिए जो बरबस ही मनुष्य को अनैतिकता की ओर ले जाता है। हम ऐसी

सभ्यता को भी दूर से ही नमस्कार करते हैं जिसमें मनुष्य जीवन का मूल्य केवल एक बोतल भर रह गया है। इसके विपरीत यदि हमें स्वतन्त्रता, चिन्तन और जीवन शक्ति को प्राप्त करने के लिए मृत्यु का भी वरण करना पड़े तो हम उसका स्वागत करेंगे।'

महामानव निर्माता अनीता की उत्तेजना पर मुस्करा भर दिये और उन्होंने कहा, 'इसे तुम जो कुछ भी कहो, किन्तु समाज में स्थिरता और अचलता लाने के लिये यह आवश्यक है। मंगल लोक को गढ़ते समय हमारे सामने दो विकल्प थे—समाज को स्थिर और अचल बनाया जाय अथवा उसमें कला, सत्य, कल्याणकारी सुन्दरता, आदि विकसित किये जायें। हमने प्रथम बात को पसन्द किया। समाज को स्थिर बनाने के लिये कला, सत्य और कल्याणकारी सुन्दरता का जान बूझ कर हमने बलिदान कर दिया। समाज स्थिर हो गया तो दुर्भाग्य को सदा के लिये विदाई लेनी पड़ी, जीने के लिए संघर्ष समाप्त हो गया। लालसाओं की पूर्ति होने लगी, इसलिये जीवन के लिये संघर्ष का प्रश्न उठना ही बन्द हो गया। यह माना कि ऐसी परिस्थितियों में सच्ची कला का विकास नहीं हो पाता, किन्तु हम समझते हैं कि समाज में स्थिरता रखने के लिये यह कोई बड़ा मूल्य हमने नहीं चुकाया। इतना होने पर भी हमारे यहाँ साहित्य का सृजन होता है।'

अशोक ने व्यंग भरे शब्दों में कहा, "मैंने भी आपका साहित्य देखा है। आपका साहित्य केवल शब्दों की जादूगरी होती है, इसमें जीवन रहित चमत्कार होते हैं। पोथी पर पोथी लिखी जाती है पर वे उद्देश्य रहित और अर्थ हीन होती हैं, उनमें केवल

अनीता सम्भवतया अपना सन्तुलन खो चुकी थी इसीलिए वह फिर बीच में ही बोल उठी, 'आपको ऐसी खोखली सभ्यता मुबारिक हो जिसने मानव को जीवन विमुख बना दिया है लेकिन हम तो जीवन शक्ति चाहते है। शिशुनिर्माता जैसे वैज्ञानिक भले ही किसी जाति को कुछ समय के लिए जीवित रखने में समर्थ हो जायें पर संस्कृति को चिर स्थायी बनाने के लिए ऐसी जीवन शक्ति की आवश्यकता होती है जो अटूट विश्वास और चिन्तन से प्राप्त होती है, जिसमें बलिदान और त्याग की आवश्यकता पड़ती है। महामानव समाज को ऐसी जीवन शक्ति के अभाव में भला सत्य, सौन्दर्य और कला की अनुभूति कैसे हो सकती है ?'

जिन महामानव निर्माता को अनीता की बातों से जोश आ गया था इसलिये वे बोले 'सत्य, सुन्दरता और कला का ढोल तुमने अभी पीटा है, जानती हो, उनकी दोहाई क्यों दी जाती है ? बुढ़ापा और मृत्यु का भय ही सत्य, सुन्दरता और कला की भावनाओं को जन्म देता है क्योंकि मनुष्य को जब बुढ़ापा आकर घेरता है तो वह अपने अन्दर असीम दुर्बलता का अनुभव करता है। मृत्यु का भय उसको अधिक धार्मिक और नैतिक बना देता है। शायद इसी कारण बर्बर भूलोक में धार्मिकता और नैतिकता जैसे शब्दों को गढ़ा गया है।

महामानव निर्माता ने अशोक और अनीता दोनों को क्षण भर के लिए देखा और फिर उनसे पूछा, 'बुढ़ापे में धार्मिकता क्यों बढ़ती है ? इसलिए न कि उस आयु में कामनायें और लालसायें शान्त होने लगती हैं। यौवन की भावनाओं व वासनाओं के अभाव की पूर्ति के

यह भी समझना भूल है कि महामानव समाज कला और सौन्दर्य को नष्ट करने में सफल हुआ है। इनको भला कब कौन मार पाया है क्योंकि कला ही वास्तव में जीवन है और जीवन ही सर्वोत्तम कला। स्वयं महामानव उस कला का जीता जागता उदाहरण है। जो कला से रिक्त है वह मृतक समान है।'

निर्माता महोदय ने देखा अशोक का मुख देदीप्यमान हो उठा था और उससे एक ऐसी अद्भुत आभा मुक्त हो रही थी जिसके प्रभाव से महामानव निर्माता भी अछूते न रह सके। उन्हें अचानक उस काल-पुरुष नाम के यन्त्र-मानव की भविष्यवाणी याद हो आई जो उसने विद्वत मण्डली के सम्मुख कही थी। उसने कहा था, 'बर्बर भूलोक से दो मानव आयेंगे, जिन पर मंगल लोक की मृत्यु किरण का प्रभाव नहीं होगा और वे मगल लोक की सभ्यता का रूपान्तरण करेंगे।'

महामानव निर्माता यह तो अपनी आंखों ही देख चुके थे कि जिन मृत्यु किरणों से उन्होंने अन्नपूर्णा कारखाने में सभी महामानवों को नष्ट कर दिया था, उनमें अनीता और अशोक केवल संज्ञाहीन ही हुये थे। इसका कारण महामानव निर्माता ने यह समझा था कि मृत्यु किरणें केवल भौतिक-रसायन विधि द्वारा पैदा हुये बोतल के महा-मानवों के लिये ही विकसित की गई थीं। इसलिये नारी से पैदा मानवों पर उनका अधिक प्रभाव नहीं पड़ सकता था, पर अशोक के विचारों को सुन कर महामानव निर्माता का मन स्वयं डोलने लगा था और उनको लग रहा था कि अशोक के व्यक्तित्व में जैसे कोई ऐसी अदृश्य सम्मोहन शक्ति थी जो उनके विचारों को भी प्रभावित कर रही है। इसलिये वे न चाहते हुये भी अशोक की बातों को सुन रहे थे।

बहुत विशाल है। उसकी विशालता और उदारता में उन्हें सम्पूर्ण महामानव समाज आत्मसात होता दिखाई पड़ा। वे कुछ बोलना चाहते भी कुछ बोल न सके। उन्होंने सुना अशोक कह रहा था, "मानव युगों के अनुभव से यही निष्कर्ष निकाल पाया था कि सुरक्षा और स्थिरता व्यक्ति स्वातन्त्र के विनाश से ही प्राप्त हो सकती है पर महामानव समाज ने इस तथ्य को भुला दिया। सामाजिक और राजनैतिक संगठन का उद्देश्य तो मानवी व्यक्तित्व के विकास में सहायक होना है। सत्ता का मूल प्रमाण जनता है, जन शक्ति है। समाज की सभी संस्थायें इसी पर आश्रित हैं। इसीलिये वह तन्त्र प्रधान न होकर सेवा प्रधान होनी चाहिये, जिसमें सेवा सार्वभौम होती है और सत्ता सेविका। पर आपने सत्ता को, राज्य को उस दानव का रूप दे दिया जिससे आज आप अपनी ही सृष्टि के गुलाम बन बैठे हैं। जिस यन्त्र विज्ञान को आप वैज्ञानिक प्रगति का राजकुमार समझे, वही ध्वंस का दानव निकला। मंगल लोक के सभ्य महामानवों की यही पर सबसे बड़ी पराजय हुई।'

महामानव निर्माता को लगा जैसे उनका बनाया वह यन्त्र-मानव जिसे उन्होंने काल पुरुष का नाम दिया है, समूचे मंगल लोक को निगल रहा है। कल्पना में यह दृश्य जब उनसे और अधिक न देखा जा सका तो उन्होंने अपने नेत्र बन्द कर लिये। जब उनकी संज्ञा लौटी तो भी उन्होंने अशोक को बोलते हुए ही पाया। वह जीवन रस उड़ेलता चला जा रहा था।

वह कह रहा था, 'आज मंगल समाज का ढांचा चरमरा रहा है। मंगल लोक के निवासियों ने एक अत्यधिक औद्योगिक सभ्यता

को प्राप्त करने की कल्पना की थी। उस कल्पना को आधार मानकर विचार विकसित हुये, एक आन्दोलन चला और औद्योगिक सम्यता आज प्राप्त हो गई है। वह अपने उच्चतम शिखर पर पहुँच चुकी है पर इस औद्योगिक सम्यता के चक्कर मे आप मानव सम्यता के इतिहास को ही भूल गये, जो मानवों के स्वेद और रक्त के सहारे आगे बढ़ा है।'

अशोक ने निर्माता महोदय को देखा वे शक्तिहीन से बैठे हुये थे। लगता था जैसे उनका सन्तुलन गडबडा गया है। पर अशोक बोलता गया, 'विशेष परिस्थितियों के बीच ही मानव सम्यता की ओर अग्रसर हुआ था, क्योंकि इन परिस्थितियों ने ही उसे नवीन और अभूतपूर्व प्रयत्न करने के लिये प्रेरित किया था। बदलते वातावरण से समझौता कर सकने की क्षमता के कारण ही मानव जाति अब तक जीवित रही थी, पर आपने मानव को महा-मानव बना कर वातावरण के अनुकूल बनने की मानव क्षमता को ही नष्ट कर दिया। भावुकता विशारद, परमाणु विज्ञ और शिशु निर्माता के रूप यहाँ के मानव केवल एकांगी विकसित ही हो पाये। इसका फल यह हुआ है कि मंगल लोक की सम्यता के ऊपर कालरात्रि गहरी होती जा रही है, जिसका आपको भी ज्ञान है किन्तु समाज की स्थिरता रखने के लिये उसकी अवहेलना करते चले जा रहे हैं।

अनीता मन्त्र मुग्ध होकर अशोक की बातें सुन रही थी और निर्माता महोदय उसकी बातों को सुन कर अत्यधिक उत्तेजित हो उठे थे। पर अशोक कहता चला जा रहा था, 'आप जान बूझ कर परिवर्तन को

रोक रहे हैं। किन्तु नदी के बहाव को कब कौन रोक पाया है। उसकी दिशा को बदला जा सकता है पर वह सदैव ही बहती रहती है। मानव बुद्धि की प्रगति के कारण ही युग युग में क्रान्ति का प्रश्न उठता है क्योंकि मानव बुद्धि नई परिस्थिति में पुरानी वस्तु से चिपट कर नहीं रहना चाहती, बदलती आवश्यकता के साथ साथ वह बदलती है और संसार बदलता है। यही मान्यता विज्ञान की मान्यता है। आज यही मंगल लोक में हो रहा है। आप चाहें या न चाहें आपको एक न एक दिन महामानवों को स्वस्थ वातावरण और उनकी प्रचेतनाओं को प्रकृत विकास की परिपूर्ण सुविधाएं देनी पड़ेंगी तभी महामानवों की भावी पीढ़ी मन से जितनी संतुलित होगी तन से भी उतनी ही पराक्रमी हो सकेगी। इस प्रकार के समाज को रचने के लिये इच्छा शक्ति को बलवती बनाना होगा और उसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हमने सोमवटी बहिष्कार आन्दोलन शुरू किया था। यह विचार मंगल लोक में अब काल-प्रवाह बन गया और उसको घसीट कर पीछे नहीं ले जाया जा सकता। पर इसके यह मतलब नहीं हैं कि विज्ञान की शोधों को रोका जाय अथवा उनको रोकने की आवश्यकता है। हां उसको नैतिक शक्ति के मार्ग दर्शन में रखना हमारा ध्येय है क्योंकि वह शक्ति मात्र है, बुद्धि उसमें नहीं है। इसलिये इस प्रगतिशील वैज्ञानिक मंगल लोक में विज्ञान का एकांगी विचार छोड़कर विज्ञान के समग्र विचार को अपनाना होगा। इसी से महामानवों का स्वयं प्रेरित सहयोगात्मक पुरुषार्थ विषमता के निराकरण और समानता की स्थापना के लिये प्राप्त हो सकेगा।'

अशोक ने देखा निर्मांना महोदय निरुत्तर होकर उसके सामने असहाय अवस्था में खड़े थे। पर जैसे उनका अचानक कुछ याद आ गया हो, इस प्रकार वे बोले, "अभी तुम दोनों को मेरे साथ कौतुक भण्डार तक चलना है। वहीं मैं तुम्हारे विरुद्ध लगाये गये अभियोग के बारे में कुछ निर्णय ले सकूँगा।"

प्रधान महामानव निर्मांना के साथ इस बार हमने जिस कमरे प्रवेश किया उसमें चारों ओर पुस्तकें फाइलें, समाचार-पत्र, राडियो संग्राहक और प्रेपित्र रेकों पर लगे हुए थे। ऊपर छत में लगी अनेक अलमारियाँ नीचे लटक रही थी। स्थान स्थान पर मानवाकार कुछ यन्त्र बड़े ध्यानपूर्वक साहित्य को देखने में लगे से जान पड़ते थे। हमें सबसे अधिक कौतूहल उन्हीं को देख कर हुआ। एक कोन में एक और भी विचित्र आकार का यन्त्र-मानव रखा हुआ था। वह ऐसबस्टस का बना ज्ञात होता था। उसको कदाचित किसी ज्योमित् शास्त्री ने बनाया होगा क्योंकि वह केवल रेखाओं, त्रिभुजों आदि के संयोग का खेल था। मुख के स्थान पर त्रिभुज, सिर के स्थान पर चतुर्भुज और हाथ तथा टांगों के स्थान पर सीधी सीधी रेखायें थीं। शेष शरीर वक्र रेखाओं की विभिन्न जोड़ तोड़ से बना हुआ था। हम पुस्तकालय के द्वार पर खड़े सभी वस्तुओं को देखकर विस्मित हो रहे थे कि तभी सामने खड़े निर्मांना महोदय ने कहा, 'घबराओ नहीं, इन सबका रहस्य तुम पर धीरे धीरे प्रगट हो जायगा।'

हम चुपचाप निर्मांना महोदय के पीछे पीछे चल दिये। अनेक यन्त्र-मानवों के समीप से हम निकले। अनीता उनके पास आती तो काप उठती। किसी तरह हम लोग कमरे के बीच में पड़े हुए

विचित्र सोफो पर बैठ गये । महामानव निर्माता ने एस्बस्टस के बने ज्योमिताकार यन्त्र-मानव की ओर संकेत करते हुए कहा, 'अशोक और अनीता सामने जो यन्त्र-मानव देखते हो, वही विद्वत मण्डली का मार्गदर्शक काल-पुरुष है। इसकी शक्ति अनन्त है। यह भूत और भविष्य सभी का ज्ञाता है। इसी के कारण मंगल लोक को नष्ट करना असम्भव है। अब मैं तुमको इसी की शक्ति से परिचित कराता हूँ।'

इतना कहकर महामानव निर्माता ने दीवार में लगे एक बटन को दबा दिया। इससे यन्त्र-मानव और उनके बीच में एक पारदर्शक पट छत से नीचे तक लटक गया। और फिर अशोक और अनीता को लगा जैसे वे ऊपर उठे जा रहे हैं। पृथ्वी पीछे छूटती सी जान पड़ी। सौर मंडल कुछ क्षण में ही पार कर लिया। सूर्य छोटा पीला तारा सा दिखाई पड़ने लगा। आकाश गंगा, निहारिका आई और चली गई। करोड़ों निहारिकाओं से ऊपर उठते हुए अशोक और अनीता वहाँ पहुँच गये जहाँ पर सन्निहित परमाणु आपस में टकरा कर प्रकाश में तेज और मूलभूत तत्वों को जन्म दे रहे थे। और ऊपर उठे तो केवल शून्य ही शून्य की अनुभूति हुई। एक चक्कर सा आया। श्वांस रुक सा गया। बड़ी घबराहट हुई। पर क्षण भर बाद ही विकलता दूर हो गई। एक अपूर्व अनुभव होने लगा।

ऐसा लगा जैसे प्लास्टिक पट पर चित्रित आकाश का और उनके मन का व्यवधान मिट गया हो। उन्हें यह भी ज्ञात नहीं हुआ कि जो कुछ अनुभूतियां हो रही है वे उनके स्वयं के शरीर में हो रही है अथवा पट पर। उनको अद्भुत दृष्टि प्राप्त हो गई थी। जिस

सिद्धार्थ की आँखों में आँसू भर आये। गद्-गद कंठ से पूछा—

'छन्दक बताओ न यह व्यक्ति कौन है। नहीं बताते तो न सही, पर वृद्ध क्या होता है, यह तो बताओ ?'

'जरा जर्जरित व्यक्ति को वृद्ध कहते हैं' छन्ना ने कहा, 'इसे अब अधिक दिन नहीं जीना है।'

सिद्धार्थ ने पुनः उस व्यक्ति को देखा। वह टेढ़े-मेढ़े झुके दंड का सहारा लेकर चल रहा था। सम्पूर्ण अंग शिथिल थे। पग लड़-खड़ा रहे थे। मुख से लार टपक रही थी। मक्खियाँ मडरा रहीं थीं। दतहीन वृद्ध झुकी पीठ से चलता हुआ रोटी माँग रहा था।

सिद्धार्थ छन्ना की ओर उन्मुख होकर बोले, 'आर्य मैं इस वृद्ध अवस्था को ही मिटा दूँगा। पर यह तो बताओ वह रोटी रोटी क्यों पुकार रहा है।'

'वह भूखा है देव।' 'और उनके पास खाने को रोटी नहीं है।'

'तो क्या विश्व में ऐसे भी व्यक्ति हैं जिन्हे रोटी दुर्लभ है ?'

'देव का कथन यथार्थ है।'

'फिर वे भूखे ही रहते होंगे, भूखे ही सोते होंगे ?'

'हाँ कुमार।'

'मैं भूख को मिटा दूँगा।' सिद्धार्थ ने मुट्ठी कस कर कहा।

'और छन्ना यह पैसा क्यों माँगता है ?'

'खाद्य क्रय के निमित्त।'

'तो क्या खाद्य क्रय विक्रय भी किया जाता है?'

'परम महाराज के राज्य मे भी होने लगा है।'

'खाद्य विक्रय तो पाप है छन्ना।'

'हाँ आर्य।'

'मैं खाद्य विक्रय को मिटा दूँगा' सिद्धार्थ के मुख की रेखायें उभर आई थी।

दृश्य बदला कदाचित राजकुमार सिद्धार्थ का भव्य भवन था यशोधरा सिद्धार्थ के निकट खड़ी थी।

'आर्य पुत्र विश्राम करें। दो पहर रात्रि बीत चुकी है।'

'यशोधरे अब जीवन मे विश्राम नही करना है।'

'क्या हुआ देव।'

'आज मैंने एक त्रस्त वृद्ध भिखमंगे को देखा है। उसको देखकर मैंने निश्चय किया है—'मैं वृद्धावस्था भूख और खाद्य के क्रय विक्रय ो मिटाकर रहूँगा।'

'क्षमा हो देव, शैशव, यौवन और जरा तो कालगति के विराम न्ह हैं उनकी क्रिया पर ही तो ससार ठहरा हुआ है।'

'मैं इस दुर्दन्त महाकाल की गति को फेर कर रहूँगा। और यशोधरा वह वृद्ध कितनी कातरवाणी से रोटी मांग रहा था। मैंने छन्ना से कहा कि आर्य इसको राजकोष मे से कुछ दिला देना तो जानती हो वह क्या बोला?'

'क्या बोला देव ?'

'कोप पर राजपरिषद का अधिकार है ।'

'मैंने कहा, 'राजपरिषद क्या लोगों को भूखा मारेगी ?'

'ऐसा न कहो, देव राजपरिषद सर्वोपरि सत्ता है। उससे अधिकार के विषय में प्रश्न उठाना ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती देने के समान है ।'

'यशोधरा तुम भी छन्ना की बात को ही दोहरा रही हो। पर मै कहता हूँ कि फिर मैं राजपुत्र किस लिए हूँ। क्या केवल इसीलिए कि लोगों को भूखा मरता देखूं। राजपरिषद तो मुझे अन्यायी वर्ग जैसा लगता है जो लक्ष जनता को भूखा देखकर भी अवसन्न है, मौन है। जन-जन की रोटी और रोटी के अधिकारों को इसी निहित स्वार्थ वर्ग ने दबाया हुआ है।' सिद्धार्थ कुछ क्षण ठहरकर पुन: बोले, 'पर मैं यह सब नहीं होने दूंगा। मैं आवाज उठाऊँगा। जिनके पेट खाली हैं जिनके अधिकार छिन गये हैं मैं उनको लेकर रोटी और अधिकारों की मुक्ति दिलाऊँगा ।'

दृश्य परिवर्तन हुआ और जैसे किसी ने कहा, 'यह आज से कुछ वर्ष के बाद घटने वाला दृश्य है ।'

इस दृश्य को देखकर तो अशोक और अनीता अत्याधिक चकित हो गये, क्योंकि जिस मंगल लोक में हम मौजूद थे, वही प्लास्टिक पट पर आ गया था। उसमें कहीं दूर एक बड़ा भारी यन्त्र लगा हुआ था जिसमें ऊपर की ओर लाल रंग का एक बड़ा हत्था लगा था। पास मे ही एक विशाल यान्त्रिक-मानव बैठा हुआ था। उसका रूप लगभग काल-पुरुष जैसा ही था। उसके आस पास अनेक

छोटे मोटे यत्र रखे हुए थे । तभी यात्रिक मानव ने लाल मूठ वाले हत्थे को दबा दिया । यत्र से अत्याधिक तीव्र ध्वनि करती हुई किरणें निकलने लगी, बहुत जोरो का अन्धड आया, जिसने मगल लोक के कृत्रिम आकाश को उडा दिया, रत के ढेर से सभी भवन ढक गये । वायुहीन आकाश मे सम्पूर्ण महामानव छटपटा कर नष्ट हो गये । कुछ देर बाद ही वह यत्र-मानव भी नष्ट हो गया ।'

इसके बाद दृश्य परिवर्तन हुआ । एक कोने मे मगल ग्रह था जिसके चारो ओर उसका एक चन्द्रमा चक्कर लगा रहा था और अशोक व अनीता उसी चन्द्रमा मे ठीक वैसे ही भवन मे बैठे थे, जैसे वे अभी कुछ देर पहले प्रधान महामानव निर्माता के साथ बैठे हुए थे । अन्तर केवल इतना ही था कि सबसे ऊँचे आसन अशोक और अनीता ने ग्रहण किये हुए थे और उसके बाद प्रधान महामानव निर्माता महामानवों के साथ बैठे हुए थे । अशोक आशा की मुद्रा म सभी महामानवो को समझा रहा था, 'पृथ्वी पर आज से तीन हजार वष पहले जिस सामाजिक आर्थिक शान्ति का सूत्रपात भगवान बुद्ध राजकुमार सिद्धार्थ ने शुरू किया था, उसको महामानव समाज ने बडी कुशलता से पूरा किया है । लेकिन जिन मान्यताओ को आज मगल लोक के विधाता अभिनव मानते आये थे, उन्ही को अनेक महामानव रूढ़ियों से भरा और अनुदार मानने लगे हैं क्योकि चलना और आगे बढना ही मानव का शाश्वत धर्म है । मानव समाज की प्रगति का जो ठेका मगल लोक की विद्वत मडली ने लिया था, उस एकाधिकार को महामानव समाज के कुछ वैज्ञानिको ने काल-पुरुष नाम का यान्त्रिक-मानव बनाकर उसको इतना शक्तिशाली बना दिया कि उसने

'क्या सोचा देव ?'

'कोप पर राजपरिषद का अधिकार है।'

'मैंने कहा, 'राजपरिषद क्या लोगों को भूखा मारेगी ?'

'ऐसा न कहो, देव राजपरिषद सर्वोपरि सत्ता है। उसके अधिकार के विषय में प्रश्न उठाना ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती देने के समान है।'

'यशोधरा तुम भी छन्ना की बात को ही दोहरा रही हो। पर मैं कहता हूँ कि फिर मैं राजपुत्र किस लिए हूँ। क्या केवल इसीलिए कि लोगों को भूखा मरता देखूँ। राजपरिषद तो मुझे अन्यायी वर्ग जैसा लगता है जो लक्ष जनता को भूखा देखकर भी अवसन्न है, मौन है। जन-जन की रोटी और रोटी के अधिकारों को इसी निहित स्वार्थ वर्ग ने दबाया हुआ है।' सिद्धार्थ कुछ क्षण ठहरकर पुनः बोले, 'पर मैं यह सब नहीं होने दूंगा। मैं आवाज उठाऊँगा। जिनके पेट खाली हैं जिनके अधिकार छिन गये हैं मैं उनको लेकर रोटी और अधिकारों को मुक्ति दिलाऊँगा।'

दृश्य परिवर्तन हुआ और जैसे किसी ने कहा, 'यह आज से बुद्ध वर्ष के बाद घटने वाला दृश्य है।'

इस दृश्य को देखकर तो अशोक और अनीता अत्यधिक चकित हो गये, क्योंकि जिस मंगल लोक में हम मौजूद थे, वही प्लास्टिक पट पर आ गया था। उसमें कहीं दूर एक बड़ा भारी यन्त्र लगा हुआ था जिसमें ऊपर की ओर लाल रंग का एक बड़ा हत्था लगा था। पास में ही एक विशाल यान्त्रिक-मानव बैठा हुआ था। उसका रूप लगभग बाल-पुरुष जैसा ही था। उसके आस पास अनेक

छोटे मोटे यत्र रखे हुए थे । तभी यान्त्रिक मानव न लाल मूठ वाले हत्थे को दबा दिया । यत्र से अत्यधिक तीव्र ध्वनि करती हुई किरणें निकलने लगी, बहुत जोरो का अन्धड आया जिसन मगल लोक के कृत्रिम आकाश को उडा दिया रत के ढेर से सभी भवन ढक गये । वायुहीन आकाश मे सम्पूर्ण महामानव छटपटा कर नष्ट हो गये । कुछ देर बाद ही वह यत्र मानव भी नष्ट हो गया ।

इसके बाद दृश्य परिवर्तन हुआ । एक कोन म मगल ग्रह था जिसके चारो ओर उसका एक चन्द्रमा चक्कर लगा रहा था और अशाक व अनीता उसी चन्द्रमा मे ठीक वैसे ही भवन मे बैठे थ, जैस वे अभी कुछ देर पहले प्रधान महामानव निर्माता के साथ बैठे हुए थ । अन्तर केवल इतना ही था कि सबसे ऊँचे आसन अशाक और अनीता न ग्रहण किये हुए थे और उसके बाद प्रधान महामानव निर्माता महामानवा के साथ बैठे हुए थ । अशाक आशा की मुद्रा म सभी महामानवों का समझा रहा था, पृथ्वी पर आज से तीन हजार वप पहले जिस सामाजिक आर्थिक क्रान्ति का सूत्रपात भगवान बुद्ध राजकुमार सिद्धार्थ ने शुरू किया था, उसको महामानव समाज न बडी कुशलता से पूरा किया है । लेकिन जिन मान्यताओ को आज मगल लोक के विधाता अभिनव मानत आय थे, उन्हीं को अनक महामानव रूढियों से भरा और अनुदार मानने लग हैं क्योंकि चलना और आगे बढना ही मानव का शाश्वत धर्म है । मानव समाज की प्रगति का जो ठेका मगल लोक की विद्वत मडली न लिया था, उस एकाधिकार को महामानव समाज के कुछ वैज्ञानिकों ने काल-पुरुष नाम का यान्त्रिक मानव बनाकर उसको इतना शक्तिशाली बना दिया कि उसने

को वह छोड़ चुका है, धर्म और कर्तव्य की न जाने कितनी कसौटियों को वह फेंक चुका है । तो फिर मंगल लोक के आचार विचारों को भी यदि उसने छोड़ना आरम्भ कर दिया तो इसमें आश्चर्य और विक्षोभ कैसा ? भूतकाल में भी मानव ने सौंदर्य और शालीनता की रटी अनेक बोलियों को भुलाया है, अनेक सस्कारो और विश्वासों की चिताओं को रौंदता हुआ वह आगे बढ़ा है। इसलिये यदि आज मंगल की प्रचलित मान्यताओं का स्थान नवीन मान्यताएँ ले रही है तो इसमें हताश होने जैसी बात नहीं। ये लक्षण तो अवश्य ही मंगलकारी हैं। 'इतिहास जहाँ तक ठेल कर पीछे हमें ले जाता है महाकाल के उत्तालनर्तन के भग्नावशेष जितने तथ्यों की ओर इशारा करते हैं, उनसे भी यह बात स्पष्ट है। इसलिये मैं कहता हूँ कि मानव और महामानव कल्याण की ओर बढ़ रहा है।'

इतना कह कर अशोक और अनीता ने महामानव निर्माता को नमस्कार किया और नये उप
विदा ली।